OM MANDALI
SHIV SHAKTI AVATAR SEVA SANSTHAN
RAIPUR

PRAJAPITA BRAHMABABA KI VANI
(Hindi Version)

Volume 1

!!ॐ शांति!!
"प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की वाणी"

06-09-2020
(1) सूक्ष्म वतन, क्या सतलोक से ऊपर है? भक्ति मार्ग में 7 लोकों में, सबसे ऊपर सतलोक दिखाते हैं। क्या ब्रह्मा पुरी आकाश तत्व से बना है - या महातत्व अथवा परम तत्व से बना है?

हां .. सतलोक .. जो कि परमधाम है .. और जो कि सूक्ष्म वतन से भी परे ते परा धाम है .. उसको कहते हैं सतलोक। जहाँ .. वहाँ झूठ की रत्ती भी नहीं। रत्ती का .. अर्थात, इस संसार में तो .. जो प्रकृति से बना है .. आजकल के समय तो बड़ा झूठ ही झूठ है। लेकिन सत .. सतलोक .. जहाँ सत्य बोलने वाला मालिक रहता हो .. वो है सतलोक। आगे क्या लिखा है .. (भक्ति मार्ग में 7 लोकों में सबसे ऊपर सतलोक दिखाते हैं) .. अच्छा .. भक्ति मार्ग में 7 लोकों का गायन है। लोक क्या होते हैं? सबसे बड़ी बात .. बच्चे, सात-सात *(7-7)* का ही क्यों आंकड़ा है?
हमारी सात शक्तियाँ हैं .. गुण हैं, प्रेम है .. ये सब क्या हैं? जब एक आत्मा, एक गुण में लवलीन हो जाती है, तो क्या कहती है? वाह! मैं सुख के लोक में आ गई हूँ। .. फिर वही आत्मा फिर शांत स्वरुप हो जाती है, तो वो क्या कहती है? मैं शांति के लोक में आ गई हूँ। .. फिर वो पवित्रता में जाती है, तो वो क्या कहती है? मैं पवित्र लोक में आ गई हूँ। .. यह क्या है? ये हैं सात लोक। लेकिन भक्ति मार्ग में उनको ऐसे दिखा दिया 7! अब आत्मा जब शांति की दुनिया में जाएंगी .. उनको जब वो अनुभूति होगी तो क्या कहेंगी? मैं शांति के लोक मैं हूँ। जब सुख की अनुभूति होंगी .. सच्चे सुख की .. तो क्या कहेंगी? मैं सुख के लोक में आ गई हूँ .. पवित्रता की .. ज्ञान, गुण, शक्तियों की बारिश हो रही है। और उन सबको बनाने वाला है सतलोक। सतलोक का अर्थ है .. जहाँ सच्चा परमात्मा रहता है। उन सातों लोकों को .. मतलब सातों गुणों को रचने वाला कौन है? शिव बाबा! क्योंके भक्ति मार्ग में इतनी बारीक (सूक्ष्म) चीज़ समझ में आएगी नहीं, तो उन्होंने अपनी बुद्धि अनुसार लिख दिया है। समझ गए? समझ में आया? अच्छा, फिर क्या कहते हैं ..

06-09-2020
(2) यह पांच तत्व से बना है .. सतलोक .. जिसको ब्रह्म महातत्व कहते हैं?

देखो सूक्ष्मवतन कौन से तत्वों से बना है? ऐसा पूछ रहे हैं .. सबसे पहली बात तो तत्व ही नहीं है! तत्व कहाँ गिना जाता है? इस सृष्टि पर। तत्व, जैसे पानी .. तत्व, जैसे धरती, आग .. ये तत्व हैं, ये भी तत्व हैं। ये क्या हैं .. सब? ये तत्व हैं। तत्व मतलब है, कोई देखने वाली एक वस्तु। वो तो सूक्ष्म .. सूक्ष्म .. क्या कहेंगे? एक बढ़ा .. एक लाइट .. अब लाइट को क्या

कहेंगे? तत्व? यह इसमें से प्रकाश निकल रहा है। जो बत्ती है उसको तत्व कहेंगे। लेकिन इस प्रकाश को तत्व कहेंगे क्या? अच्छा अब बताओ? तत्व अर्थात क्या होता है? जैसे बोलते हैं ना, एक तत्व पतला .. पदार्थ .. जिसको हम कहते हैं जो जलमय .. बोलते हैं ना पानी से पतला तत्व कोई नहीं है। है ना .. यही कहते हैं ना? लेकिन ये लाइट .. वो तो क्या कहेंगे उसको? फिर वो तो पानी के ऊपर घूमती रहेंगे। तो उसको तत्व कहेंगे? वह तत्व में नहीं है। एक ऐसा .. देखो, भल इस दुनिया की यह प्रकाश, तत्व में गिना जा सकता है .. फिर भी एक परसेंट मार्जिन है। लेकिन ***जो सूक्ष्म वतन और परमधाम का जो प्रकाश है वो तत्व में गिनती होता ही नहीं। वो तो तत्वों से .. हर तत्वों से पार है। जो प्यारा परमधाम है। वो तो एक ऐसा सुनहरा लाइट का स्थान है, जो इस विश्व में किसी भी कोने में उसकी तुलना हो ही नहीं सकती। ठीक है बच्चे? समझ में आया? अच्छा ..***

06-09-2020*

(3) धर्मराज का पार्ट कब से शुरू हुआ? क्या साकारी ब्रह्मा बाबा का सूक्ष्म शरीर जब जाकर सम्पूर्ण ब्रह्मा से मिला तब?

देखो बच्चे इस संगम युग पे .. 100 साल के संगम युग पे धर्मराज का पार्ट दो (two) प्ले (play) करते हैं। जैसे, जब परमधाम से बाप आते हैं, जब सुक्ष्म के ब्रह्मा को लेते हैं, तब भी धर्मराज ही कहेंगे। और जब वहाँ का पार्ट पूरा होता है .. जब नीचे से अपन (ब्रह्मा) का पार्ट पूरा होकर के ऊपर जाते हैं, उसको तब भी धर्मराज ही कहेंगे। 100 साल का युग .. अब आप बतावे, धर्मराज की सजा सबसे पहले किसको मिलती है? जिन बच्चों को ज्ञान मार्ग में कहेंगे .. ज्ञान मार्ग में धर्मराज .. जिसको भक्ति मार्ग वाले क्या कहते हैं? 'यमराज'। और यमराज को हमेशा दिखाते हैं बैल पे बैठके आया है। तो यमराज एक महाकाल का दूसरा रूप है। धर्मराज और यमराज दोनों अलग हैं। अलग का अर्थ है कि जो यमराज हमेशा दिखाते हैं की बैल पे बैठ करके आया है। तो वो महाकाल का ही रूप है। धर्मराज को कभी बैल पे बैठा नहीं दिखाया! वो बड़े से सिंहासन पर बैठा हुआ दिखाया। तो दोनों अलग-अलग हैं। ठीक है, बच्चों! यमराज और धर्मराज दोनों अलग-अलग हैं।

06-09-2020*

(4) तो बाबा यमराज जो दिखाते हैं .. वो तो द्वापुर से ही दिखाई देतें हैं, लेकिन धर्मराज का पार्ट अभी से है?

नहीं, बहुत मात्र में काम (यमराज का पार्ट) .. द्वापर में तो बिलकुल नहीं कहेंगे .. कलियुग में भी नहीं कहेंगे .. कलियुग अंतिम समय में ही यमराज .. एकदम जैसे लड़ाई-झगड़ा, मारा-मारी जब युद्ध की शुरुआत हुई .. तब से यमराज का पार्ट दिखाते हैं। ***धर्मराज का तो अभी का शुरू हुआ है। तो जब नीचे से ऊपर जाते हैं, तो धर्मराज। यमराज तो पहले से ही है भई! यमराज तो तब से ही है जब से दुख शुरू होता है। आता है, अपने***

बैल को लेकर। ले जाता है सबको कहाँ-कहाँ लटका के। है ना? यह है यमराज और धर्मराज (का अंतर)।*

10/05/2020

(5) हमारा बाबा आप के मंदिर में क्यों आएगा ?

अच्छा बच्चों को कहना टेंशन नहीं लेवे, और जो आपको ये अब कह रहें हैना, ***बाबा हो नहीं सकता हो नहीं सकता*। *दूसरे धर्म वालों के जैसा नहीं करो दूसरे धर्म वाले कहते है, मेरा भगवान् आपके मंदिर में नहीं आएंगा*। *मेरा खुदा आपकी मस्जिद मे नहीं आएगा हैना , मेरा वाहेगुरु आपके गुरूद्वारे में नहीं आएगा, मेरा ईश्वर, मेरा गॉड ,आपके चर्च में नहीं आएगा ऐसा कार्य नहीं करो*** अगर गुरुद्वारा बना है, वहाँ पर जो बच्चे याद करते हैं उनका भी ध्यान रखते हैं। चारों धर्म की आत्माएं पुकारती किसको है ? और किसके द्वारा पुकारती है? पावर तो देगा ना ! अगर अब ***आप कहेंगे कि हमारा बाबा आप के मंदिर में क्यों आएगा*? क्यों नहीं आएगा..!! भाई *वह सब का बाप है*, *आपका थोड़ी है*।**अगर ज्ञानी है तो ज्ञानी कैसे बना? पहले तो अज्ञानी था। ज्ञानी बना बाप का ज्ञान मिला ज्ञान नहीं था तो क्या था? अज्ञानी था ! फिर अब कहते हैं हमारा बाबा वहाँ नहीं आएगा....। क्यों?? बाबा ने लिखित में दिया था?? पूछो बाबा ने कोई एग्रीमेंट किया था क्या ? अरे यह तो वंडरफुल बात है भई राजा को कहते हैं राजा तुम उधर नहीं जाएंगे उस एरिये में....। क्यों...? ***प्रजा राजा को कहती है आप उधर नहीं जाएंगे।**अब इतनी छोटी सी बात अपने प्यारे प्यारे बच्चे समझ रहे हैं, छोटे-छोटे जो मुरली सुनने जाते हैं। और जो बड़े-बड़े मुरली सुनाते हैं वह नहीं समझ रहे हैं* कहते हैं हम ज्ञान में है। भई क्या ज्ञान में...ज्ञान बताओ... ज्ञान क्या होता है? इतने प्यारे प्यारे बच्चे समझ करके कहते हैं, उनको ज्ञान सुनाते हैं.....देखो दीदी ऐसे नहीं होता दीदी ऐसे होता है। और वह *दीदी कहते हैं अरे आप बड़े हो या मैं बड़ी हूँ*..। *जो मैं बोलूँगी वह सच होंगा*। भई क्यों..? *जो बाबा बोलेगा वह सच होगा*** पर बच्चों को अच्छा लगा...आप बच्चों का सुना। बच्चों को कहना बाबा ने याद प्यार दिया है। अच्छा चल रहा है, चलने दो बच्चों टेंशन नहीं लो। ड्रामा में जो होगा ना, बड़ा अच्छा होगा।ठीक है बच्चों.... ॐ शांति।

16-12-2020

(6) *लौकिक बाप से पूछा, कभी कहा कि प्रूफ दो ?*

एक एक बच्चे को बाबा निश्चय कराने नहीं आए हैं। ***क्या आपने अपने लौकिक बाप से पूछा, कभी कहा कि प्रूफ दो कि आप मेरे बाप हो। नहीं कहा ना* माँ ने कहा ये आपका बाप है, *परिवार ने कहा ये आपका बाप है तो हमने मान लिया कि हमारा**

बाप है*। *यहाँ पारलौकिक बाप को प्रूफ मांगते हैं*!! तो अब बाबा क्या कहेगा, बिल्कुल नहीं कहेगा और आप जो सवाल लेकर आए हो, नहीं बताएंगा। आपकी बुद्धि है, आपको समझना है कि बाप है। आया है तो भल समझे.... भल समझे, अगर नहीं तो फिर बिल्कुल ना समझे क्योंकि ***बाप आपके पीछे अपना समय क्यों व्यर्थ करेगा? जो जिनको अभी तक नहीं मिला हूँ,उनको मिलेगा ना। उनके पास जाएगा ना*** आप जो लकीर सवाल की खींचेंगे तो वो बाप तो कई बार पार करके जा चुका होगा। वो लकीर बापके किसी काम की नहीं है।

21-10-2020*

(7) जब बाप इधर नहीं आया तो यह पूछे बाप कहाँ गया है?

जब बाप इधर नहीं आया तो यह पूछे बाप कहाँ गया है। हाँ ***मधुबन तीर्थ स्थान है क्योंकि सभी बच्चों की कर्म भूमि है। अपन की कर्म भूमि है*। तीर्थ स्थान है, पर *बाप उधर के अलावा कहीं और नहीं आ सकता, यह रॉन्ग है*। और *अगर इसको राइट सिद्ध करेंगे तो फेल हो जाएंगे*** क्योंकि बाप पहले पहले कराची में आया ***दिल्ली*, *मुंबई*** कहाँ नहीं आया बाबा बताओ। पूरे विश्व को चलाने वाले बाबा के लिए बोलते हैं कि और कहीं आ ही नहीं सकता। मंदिर में कौन है, सबको साक्षात्कार कराता है? कौन सबकी सुनता है? वही सुनता है भोला भंडारी। भोला नाथ !! मंदिर चाहे किसी का भी हो पर देता सबको वो है।

06-09-2020*

(8) क्या अंत में, सूक्ष्म वतन में, अपने किए कर्मों की सजा मिलती है? क्यूंकि जब सभी का पार्ट ड्रामा में फिक्स है, तो सजा का और पुरुषार्थ का क्या मतलब रह जाता है?

वाह वाह! बच्चे ने पूछा है .. बड़ा अच्छा पूछा है। यह सबसे बड़ी बात .. क्या कहेंगे? कि ड्रामा फिक्स है .. कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि यह ज्ञान ही उल्टा है। कि बच्चों को यह ज्ञान देकर ही बड़ी गड़बड़ कर दी। कि *ड्रामा में सब का पार्ट फिक्स है। इसीलिए कई बार बच्चे उल्टे लटक जाते हैं। भोजन आया है .. खाने के बजाय कहते हैं, मुँह में आ जाएगा। ड्रामा में होगा तो खा लेंगे। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि ये ज्ञान देकर ही ..**'फिक्स' - *फिक्स का अर्थ क्या होता है? बच्चों को समझने में बड़ी भूल हो गई है। फिक्स किसका कहेंगे?ड्रामा फिक्स है - बच्चे बार-बार यही बाप को एक सवाल उठाते हैं। और बार-बार बाप ये जवाब देते हैं। बच्चे संगमयुग पर बाप हर एक की बुद्धि का ताला खोल देता है। फिक्स कब बजता है? जब आपने शूटिंग कर ली - उसके बाद .. उसके बाद फिक्स हो गया, मतलब लॉक लग गया। और सतयुग से द्वापर कलियुग तक फिक्स ही बजेगा। कोई चेंज नहीं होगा। लेकिन चेंज का पार्ट .. लॉक खुलता है संगमयुग पर - और बच्चों ने ज्ञान को उल्टा लटका दिया है, उल्टा**

समझ लिया है कि फिक्स है तो जो मर्जी करें .. ड्रामा में होंगा तो मिलेगा, ड्रामा में नहीं होगा तो नहीं मिलेगा। तो क्या कहेंगे .. अपने पैर पे कुल्हाड़ी मारना।* इस ड्रामा में साइंस हर तरह की तरक्की कर रही है। किसी ने फिक्स भी किया होगा ना कोई महल उसको भी खोल के निकाल रही हैं। इस ड्रामा में हर एक राज खुलता जा रहा है .. खुलता जा रहा है। क्या फिक्स है बतावे। अगर देखकर के अगर साइंस वाले कहे - एक महल है, बँगला है .. बडा पुराना है, इसमें जाने से भूत प्रेत आएंगे, या फिर हम इसको खोलेंगे नहीं। यह फिर बंद ही रहेगा। नहीं खोलेंगे तो फिक्स है। खोल दिया तो बड़े राजा है!अब चाबी जब हाथ में दे दी है, ताला खोले - नहीं खोले - किसकी मर्ज़ी? अपनी मर्जी! बाप ने जब बुद्धि का ताला खोलने की चाबी दे दी है, तो बच्चे क्या कर रहे हैं? ड्रामा में होगा .. तो मेरा हाथ आगे जाएगा .. ताले में चाबी लगेंगी ... तो ताला खुलेगा .. तो मैं अंदर जाऊंगा। ये तो बड़ी मूर्खता है। ***फिक्स कब बनता है? जब आपने ही संकल्प कर लिया कि मुझे ताला ही नहीं खोलना है। तो लगा दिया साइन फिक्स है।*** अगर आप पेपर हॉल में बैठे हो, आपके सामने ऐसा पेपर आ गया जो एक भी सवाल का जवाब आपकी बुद्धि में नहीं है। पर आपने पढ़ा है तो उस समय आप क्या करेंगे? उल्टा पुल्टा कुछ भी लिखके आएंगे - या बैठकरके अपनी बुद्धि को थोड़ा शांत करके याद करेंगे कि इसका सवाल क्या था! इसका सवाल क्या था! या यह सोचेंगे जो नंबर मिलना होगा मिलेगा। जो नहीं मिलना होगा नहीं मिलेगा। जाओ हम नहीं देते पेपर! क्या कहेंगे बताओ? याद करेंगे बुद्धि को दौड़ाएंगे, एक-दो से भी पूछेंगे – 'भई थोड़ा बताओ'। है ना? 'थोड़ा समझाओ' .. या ये कहेंगे ये लो जी पेपर हमारा हो गया। ***आपकी मर्जी है - फैल करना है, पास करना है – करो; तो टीचर क्या करेगा - फिक्स।*** क्या करेंगा टीचर ? फिक्स करेंगा। करना पड़ेगा! क्योंकि आपने पेपर ही इतना खराब दिया है तो .. जब आप पेपर हाथ में दे रहे हो, बिना लिखें दे रहे हो, बिना पढ़े दे रहे हो, और फिर कह रहे हो कि फिक्स होगा जो होगा! जो नंबर आएंगे वो मिल जाएंगे - बिना पुरुषार्थ के क्या मिलेगा? बताओ क्या मिलेगा? यह फिक्स .. ***सबसे पहले ये 'फिक्स' अपनी बुद्धि से निकाल देवे। अगर बाप परिवर्तन कर रहा है, तो आज एक और परिवर्तन कर रहा है, ड्रामा में। फिक्स का पार्ट अपनी बुद्धि से निकाल करके एक किनारे पे रख देवे। नहीं तो फिक्स .. फिक्स .. के चक्कर में, सही में फिक्स हो जाएंगे!*** और ऐसे फिक्स हो जाएंगे फिर कहेंगे .. अरे काश मैं पुरुषार्थ कर लेता। काश मैं बैठकर के थोड़ा बाप को याद करता .. थोड़ा "ॐ" करता - तो मैं फिक्स नहीं होता।क्योंकि जब आपने पेपर बाप को दे दिया है - आप को जो नंबर देना है दे दो। तो क्या करेगा? फिक्स करेंगा ना। फिर क्या करेंगा? कोशिश ही नहीं की .. कोशिश ही नहीं की। अब एक बच्चा पढ़ाई पड़ता है, वो पढ़ाई पढ़ के अगली क्लास में जाता है। जो अगली क्लास में पढ़ता है वो क्या सोचेगा? क्या सोचेगा बताओ? यह सोचेगा कि मैं एक भी पुस्तक नहीं पढ़ूँगा। जो आना होगा वो आएगा! और सोचेंगा कि मैं क्या करूंगा? मैं ***नहीं पढ़ूँगा नहीं जो आना होगा वो आएगा। पेपर हॉल में बैठ करके क्या करेगा फिर। क्या करेंगा? फिर टीचर के पास पेपर जाएगा तो क्या करेगा टीचर? फिक्स। भई फैल फिक्स है।*** ये है पुरुषार्थ। बिना प्रालब्ध के बिना पढ़ाई के आप कहाँ भी नौकरी करके दिखावे। तो अपन मान जाएंगा कि ड्रामा फिक्स है

फिर। अपनही लिख कर देगा फिर कि ड्रामा फिक्स है। बिना पढ़ाई के आप एक भी अक्षर पढ़के दिखावे। आएगा कोई ? फिर? ..हर चीज की नॉलेज होती है। क्या आप जब कपड़ा पहनते हो तो उसकी नॉलेज नहीं है? या ऐसे ही घूमते हैं? फिर सिखाया ना .. माँ ने सिखाया इसको ऐसे पहनते हैं, ऐसे पहनते हैं, और आपने सीखा ना। सीखा ना?हां, तो फिर इसको क्या कहेंगे? क्या आपने जब पैदा हुए तो आपने सोचा था कि जो ड्रामा में होगा तो कपड़े पहनें जायेंगे, ड्रामा में नहीं होगा तो नहीं पहनें जायेंगे .. ऐसे ही घूमेंगे। फिर जब बाप सिखा रहे हैं .. जब बाप बता रहें हैं कि बच्चे मुझे याद करने से जन्म-जन्म के पाप कर्म विनाश होंगे। जब बाप सिखा रहे हैं, कि बच्चे ॐ करने से बड़े अच्छे बाप की याद ठहरेंगी, बड़ी साइलेंस की शक्ति मिलेंगी और भविष्य में प्रारब्ध अच्छी मिलेगी। सिखा रहे हैं ना? तो ऐसे कहेंगे कि जो ड्रामा में होगा? जो ड्रामा में होगा क्या? संगमयुग पेपर का .. मान लो अगर ऐसे फिक्स होता - आज हर एक को मार्जिन दिया जाता है। 8 रतन वालों को भी, 108 को भी, 16000 को भी, करोड़ को भी - सबको। संगम युग पे हर एक के लिये दरवाज़ा खोल दिया जाता है। हर एक के लिये। कई तो सोचते हैं – 'जब ब्रह्मा बाबा ही जाकर के श्री कृष्ण बनेंगा, तो हम क्यों पुरुषार्थ करें? जब हम राजा ही नहीं बनेंगे'। .. ऐसी भी मूर्ख बच्चे हैं। ऐसे भी बुद्धू बच्चे हैं। तो बाप ये केह रहें हैं कि बच्चे आप इतना भी, मेरे से भी आगे पुरुषार्थ करो। करो और बनो। बनो श्री कृष्ण, अपन आपके वजीर बनेंगे या फिर अपन आपके छोटे वाले राजा बनेंगे। आप करो ना! ***बाप ऐसा है कि ड्रामा को परिवर्तन कर देंगा। बच्चों के पुरुषार्थ में फिक्स नहीं - फिक्स तब होता है जब आप अपना पेपर उठा कर के दे देते हो – 'ये लो हम नहीं लिखते, जो आपको देना है देना, जो आपको नहीं देना है नहीं देना'। तो बाप क्या करेगा? फिक्स है! क्या करेगा बाप? तो फिक्स है।*** कर्मों का ज्ञान हर एक आत्मा को दिया जाता है। हर एक आत्मा को। ब्राह्मणों को बहुत ज्यादा .. इसलिए ब्राह्मणों की चोटी बड़ी गायन हुई है। जिसने समझा वो ब्राह्मण। जिसने नहीं समझा वो क्षत्रिय, शुद्र। क्या कहेंगे? कोई कोई तो ब्राह्मण बन के भी शूद्रों वाले काम करते हैं। 'ब्राह्मण' अर्थात क्या? मुखवंशावली .. ब्रह्मा मुख्यवंशावली ब्राह्मण बन के भी .. तो क्या कहेंगे? ठीक है? आपने, अपने ड्रामा को अपने आप फिक्स किया है। आपने, अपने ड्रामा को अपने आप तय किया है। बाप ने कभी तय नहीं किया। ना बाप कर्म का फल .. ये नहीं है कि बाप पाप-पुण्य का फल देता है। नहीं! ***बाप सिर्फ न्याय करता है। जो बच्चों ने अच्छा पेपर लिखा। अपनी बुद्धि चला करके .. बाप क्या कहेंगा? बच्चे पास होना फिक्स है। जो अपनी बुद्धि से उल्टे पुल्टे किये - फैल होना फिक्स है। और ये ड्रामा है, कि आपका पार्ट फिक्स है***।* ये नहीं कहा कि जन्म-जन्मांतर आप यही करोगे। जन्म-जन्मांतर आपका यही पार्ट होगा। ये नहीं है। जन्म-जन्मांतर का अर्थ क्या है? जन्म-जन्मांतर का यहीं पे ही एक बनता है। संगम युग में, जो की बापने चांस दिया है। जन्म-जन्मांतर का अर्थ 84 जन्मों में आप इस समय जो करोगे तभी जन्म-जन्मांतर में वो मिलेगा। मतलब जो 83 जन्मों में जन्म-जन्मांतर 83 जन्मों में आपको वो मिलेगा जो आपने संगम युग के वर्ष में पुरुषार्थ किया। इसीलिए जन्म-जन्मांतर मिलेगा .. ये बाप ने कहा, संगमयुग पर खुलता ही खुलता है। हर एक आत्मा का पार्ट खुलता है। और अभी भी बाप कहेंगे। थोड़ा समय बाकी है। बाप कहेंगे एक वर्ष में

क्या, एक मास में, 2 मास में भी बच्चा ऐसा पुरुषार्थ कर सकता है, ऐसा पुरुषार्थ कर सकता है, बहुत ऊंची प्रारब्ध पा सकता है। उतना पुरुषार्थ बच्चा कर सकता है, ठीक है? ...बाप को मानते हैं .. पर बाप की नहीं मानते है। तो बाप क्या करेंगे, ऐसे बच्चों का? भल नहीं आवे। बाप आज कहते हैं कि बाप किसी भी बच्चे के साथ कब जबरदस्ती नहीं करते - कि आप आओ, मिलो। हाँ ***, पर संदेश जरूर जाएगा, कि बाप आया है। बाप का पार्ट ऐसा चल रहा है। नहीं मानना .. मानना बच्चों का दिल है, छूट है और तभी कहेंगे 'ड्रामा फिक्स है' ।*** अब बाप कह रहे हैं – बच्चे, बाप आ गया। कहते 'हम नहीं मानते' .. तो ठीक है। आपका ड्रामा फिक्स है। किसने फिक्स किया? बाप ने नहीं किया। उन्होंने स्वयं अपना ड्रामा को फिक्स किया है। इसमें बाप क्या करेगा? बाप थोड़ी जाकर के पैर पकड़ेंगा। आओ, आओ .. जल्दी आओ, जल्दी आओ। बाप ऐसे कभी नहीं करेगा, क्योंकि वर्तमान समय बच्चों को जरूरत है बाप की, और बाप आ गया सहारा देने। रो रहे थे। कहाँ गए बाबा .. तो बाप मिलने आया है .. और कहेंगे जब आया हूँ .. तो कहते, 'हम नहीं मानते' .. तो फिर ठीक है, अपन और किसी पास चलते हैं। मत मानो! बाप का क्या जाएगा? इसीलिए सभी बच्चों को बाप संदेश देना चाहते हैं। बहुत ड्रामा में अलटी-पलटी जो भी होगा, लेकिन आप बच्चे क्या कहते हैं? आपका दिल क्या कहता है? दिमाग क्या कहता है? क्योंकि जब-जब परिवर्तन हुआ है, विरोधी भी खड़े हुए हैं। ऐसे सहयोगी भी खड़े हुए हैं। सहयोगियों का नाम ऊँचा हुआ है, और विरोधियों का नीचे हुआ है। अब उस दौरान में जितने सहयोगी थे, आज सब का नाम बाला है, और विरोधी का कौन कहता है नाम बाला है - बताओ? लेकिन फिर भी समय तो चला ना। आज, यहाँ तक पहुँच गए हैं। है ना .. ठीक है, बच्चों।

19-03-2020

(9) कई बच्चे सोचते हैं कि (ब्रह्मा बाबा का) आवाज़ तो (पहले से, अब) नहीं मिल रहा है?

पहले बच्चों को कहते हैं, आवाज से कोई लेना देना नहीं है । ***पहले यह संदेश दे रहे हैं ।भई अगर कैसेट है, टेप रिकॉर्ड है, टेप रिकॉर्ड कैसा है? वो टेप रिकॉर्ड के ऊपर करता है ,पर कैसेट तो वही बजेंगा। अगर ऐसे सोचेंगे ये आवाज तो नहीं मिल रहा ...!! तो यह सबसे बड़ी मूर्खता* है।** आवाज को नहीं देखो ना !!! बच्चे आवाज को क्यों देखते है ...बाप को देखो !! (हाँ आवाज में ही कई लोग फंसे हुए हैं)अच्छा ! देखो.... आवाज में बड़े बच्चे फंसे हैं । दूसरी बात है.... ****आदि में क्या चला ?**** अब बतावे पूरा खोलके रहस्य । आदि में अपन ने बड़ी भक्ति की, संस्कृत के श्लोक बड़े पक्के थे , बड़ी भागवत पढ़ी , गीता पढ़ी ,गुरु किए ,सब किए तो अपन का संस्कार कैसा बन गया..?? भक्ति वाला बनगया। अब जब अपना बाबा आएगा, अपना शिवबाबा आएगा, तो संस्कार किस का यूज़ करेगा ? अपन का करेगा। अपन ने जो भक्ति की,जो पूजा की, जो संस्कृत में जो शब्द का....उसी का ही करेगा ना ? करेगा ना! उसमें बाप ने शास्त्रों के रहस्य बताएं।

शास्त्रों के श्लोक के जो भी रहस्य थे..... उसमें बाबा ने बताएं।आदि का पार्ट एक अलग पार्ट चला। ठीक है !***अब आओ मध्य में --*** --अपन का शरीर छूटा। शोभा बच्ची (गुलज़ार दादी) में आए। अब शोभा बच्ची (गुलज़ार दादी) के संस्कारों के अनुसार बाप बोलेंगा ! है तो बाप ना! बाप है !उनका रिकॉर्ड, वो टेप रिकॉर्ड चेंज हो गया। अब उसमें आया तो कैसा बजेगा ? ऐसा ही बजेगा ।अब कहते हैं ..अपन तो शरीर पुरुष का ,बाप भी परम पुरुष । पुरूष और परमपुरुष दोनों मिल गए तो ज्यादा बदलाव आवाज़ में नहीं आएगा। लेकिन जब टेप रिकॉर्ड आया शोभा बच्ची(गुलज़ार दादी) का ।तो उनका जो शरीर था... वो कैसा था? (फीमेल).... पुरुष और फीमेल दोनों मिल गए तो तीसरा आवाज निकला । वो जो परम पुरुष का आवाज निकला । हैना ! जब वो , एक आवाज मिल कर के, तो इससे निकलेगा तो आवाज तीसरा ही निकलेगा ना? हैंना ! अपना बाबा शोभा बच्ची (गुलज़ार दादी)के शरीर का आधार लिया बाजा बजाया तो फिर कैसा आवाज निकलेगा? तीसरा आवाज निकलेगा । और जबकि उनमें अपन भी , अपन का भी बीच-बीच में पार्ट था ।अब साकार का पार्ट मध्य के पार्ट से मैच नहीं किया । नहीं किया। एकदम अलग अलग ,क्यों ? कारण क्या बना? मेल और फीमेल का भी कारण बना लेकिन संस्कारों का भी कारण बना ना। .. है ना ! बाप किस के संस्कारों को यूज करेगा.....थोड़ा-थोड़ा करेगा, वह तो बाबा परमात्मा है ।आत्मा के संस्कारों को मर्ज करके अपनी पावर को निकालता है ।लेकिन जब शरीर के सिस्टम में आता है तो थोड़ा करता है ना !थोड़ा करना पड़ता है ना! सिस्टम के हिसाब से चलाना पड़ता है।अब शोभा बच्ची (गुलज़ार दादी) में आया ....शोभा बच्ची ने ज्यादा भागवत , संस्कार ज्यादा ,ज्यादा भक्त मार्ग में नहीं गई तो उसके अनुसार सब बच्चों को पालना ....जो बाबा ने पालना दिया। लेकिन संस्कृत का श्लोक ज्यादा नहीं कहा । लेकिन बाप वही है !! बाबा ने उस हिंदी भाषा में सबको बड़े प्यार से पालना किया। ..

अब (अंत का पार्ट) आए इसमें ...लेकिन अब अपन का भी पार्ट चल गया अपन का भी बड़ा पार्ट चल रहा है । अभी जब अपन का शरीर छूटा। वतन में गये , वतन में बिठाके बाबाने जो सेवा कराया... जो विस्तार को वृद्धि हुई, जो बड़ी सेवा....! लेकिन आदि सो अंत का पार्ट किया ।अब अपन आ रहे हैं तो अपन हिंदी ही करेंगे ना !! कोई बच्चे कहते है -- बाबा सिंधी बोलके दिखावे एक शब्द । क्यों बोलके दिखावे ? प्रूफ चाहिए ना.....!!! अगर बाबा सिंधी था तो सिंधी में एक शब्द बोलके दिखावे। आप एक बार बाप से परमिशन दे दो ।अपन पूरी सिंधी ही बोलेंगे। लेकिन क्यों नहीं बोलेंगे ? क्योंकि आत्मा का जो संस्कार है ,आत्मा... जो बाजा है, वो जो आप ऐसे करेंगे तो बाजा कौन सा बजेगा ? हिंदी वाला बजेगा। अपन इसका संस्कार इस्तेमाल करेंगे इनका भाषा , बाबा यूज़ करेगा तो क्या निकलेगा? हिंदी निकलेगा । सिंधी थोड़े निकलेगा ! बच्चे कहते हैं --सिंधी बोलके दिखावै, क्यों बोलके दिखावे ? इसमें बाप एक शब्द कहेगा-- बच्चों को अगर संशय है , निश्चय नहीं है तो फिर बच्चों का अपना , अपना मर्जी है। बच्चों का अपना भाग्य है ।अपना मर्जी है । बाप कभी-कभी ज्यादा, ज्यादा मेहनत नहीं करेगा। आओ ना ! आओ ना !नहीं कहेगा। .. क्योंकि वर्तमान समय बच्चों को बाप का जरूरत है । बाप को भी बच्चों का है । है....! लेकिन बाप यह नहीं कहेगा -आओ। ...***आदि मध्य और अंत का पार्ट तीनों ...एक ना***

मिले दूसरे पार्ट से।बजाता एक ही है पर एक ना मिले दूसरे पार्ट से ।जैसे एक जन्म ना मिले दूसरे जन्म से ऐसे एक पार्ट ना मिले दूसरे पार्ट से । अब कोई कोई बच्चा कहता है बाबा पहले जैसे बोलके दिखाओ । क्यों?? भई बाबा ने अब बाजा ऐसा दिया है तो अपन पहले जैसे कैसे बोलेंगे। अब उनको कहेंगे पहले जैसा शरीर बनाके दे दो अपन उस में जाकरके ऐसे बोल देंगे । हां भई अगर बच्चे कहते हैं पहले जैसे बोल कर दिखाओ.... अपन भी कहते है पहले जैसा शरीर दे दो।* ऐसे बोलेंगे।भई अपन का थोड़ी गलती है पहला जैसा शरीर है ही नहीं और जो बाजा मिला है उससे ऐसे ही बजाना पड़ेगा। है ना!(बाबा जो कहते हैं अहो प्रभु तेरी लीला अपरम अपार। तेरी गत मत तू ही जाने अब यह वही समय आ गया) .. यह वही समय है यह वही समय है फिर बाद में कहेंगे - ***अहो प्रभु!! तेरी लीला..... अपरमअपार। ये भी रोल था ड्रामा में हमें पता ही नहीं पड़ा ।*** ठीक है बच्चों !

19.12.2020

(*10) बाबा ने जो तन लियाा तो ऐसा सं कल्प चलता है कि शरीर काला क्यों है?**

हाँ ठीक है, ठीक है कितना अच्छा संकल्प चलता है। ***अब अपन एक पूछे सबसे बड़ी बात शुरू से कौन सा ज्ञान दिया? आत्मा का पाठ पढ़ाया,*** फिर सोचते है जब भगवान को आना था तो थोड़ा गोरा बना देता तो क्या जाता । यही सोचते हैं थोड़ा गोरा बना देता काला क्यों बनाया। अच्छा दूसरी बात सबसे पहले ये ***सोचने वाले बच्चे फेल है कि बाप ने बाबा गोरे तन में क्यों नहीं आये।आजकल पुरानी दुनिया वाले भी काले गोरे में वो फर्क बंद कर दिया है और ये तो ज्ञानी बच्चे हैं।*** अच्छा सही अर्थ क्या है? क्या कहते हैं विष्णु की लक्ष्मी, ब्रह्मा की बेटी सरस्वती गोरी है, ठीक है गोरी है? शंकर की पार्वती पर महाकाल की कौन होंगी ? महाकाली!! अच्छा चलो ठीक है। अगर बाप एक पूरा अभी तुरंत क्या इस दुनिया में कोई महाकाली की पूजा करना बंद कर सकता है? करें तो तुरंत बैठे-बैठे बाप इसको एक सेकंड में गोरा बना देगा। ये बाप की वर्तमान समय गेरेंटी है। चाहे कुछ लिखवावे। ***माहाकाली का पार्ट पूरा खत्म करें, काली का पार्ट खत्म करें तो अभी इसी घड़ी इस शरीर को इतना चमकीला, इतना गोरा कितना सुंदर बना देगा... पूरे संसार में कोई नहीं होगा। अभी तुरंत तुरंत बाप तुरंत चमत्कार करने वाला है। अब सोचे*** ।जब पार्ट महाकाल का है तो दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी कहाँ से आएंगी कहाँ से आएंगी ? कौन आएंगी ? महाकाली आएंगी । ***महाकाल की महाकाली आएंगी। तो बुद्धि से निकाल दो काला और गोरा । आज सारी दुनिया में महाकाली की पूजा हो रही है और काली कलकत्ते वाली कहा गया है। नाम ही किसका है कलकत्ते वाली काली या काली कलकत्ते वाली यही कहते हैं ना तो*** फिर... किसलिए अगर आप सोचो अगर ऐसे रंग की वैल्यू नहीं होती है तो बाप ये रंग इस सृष्टि में इस मिट्टी में ही नहीं देता। ये धरती का रंग भी कैसा है, साँवला है । काले गोरे में भेद करना बंद करें क्योंकि महाकाल की तो महाकाली ही होंगी। कोई दुर्गा, लक्ष्मी सरस्वती का पार्ट अब हो

चुका ओके। फिट हो गया वापस पूछेंगे कोई? जो पूछे तो उसको बतावे.... और वो जो पूछेंगे तो वो सच्चे बच्चे नहीं... क्यूँकि ज्ञान का सही माइने नहीं पता है। ठीक है ओके.... क्योंकि ***वर्तमान समय पार्ट किसका है? बोलते हैं ना महाकाल और महाकाली का एक साथ पार्ट चलता है और ये वही समय है क्योंकि? विनाश भी कौन करता है ? दोनों ही करते हैं? कौन करते हैं महाकाल, महाकाली करते है ।*** नारायण की लक्ष्मी, ब्रह्मा की बेटी सरस्वती, शंकर की पार्वती, महाकाल की महाकाली!! जोड़ा बन गया तो संकल्प कहाँ से चलेगा। बुद्धि से निकाल दो । ओके और कुछ है किसी की बुद्धि में । कुछ है तो बतावे । है कोई काले गोरे का प्रश्न।

18.01.2021

(11) पूरे विश्व में - "ओम मंडली रिचेस्ट इन द वर्ल्ड" एक नारा लगेंगा।**

अभी सभी बच्चे बैठ जावे अभी क्या करना है? आगे की यात्रा कैसी होंगी... पूरे विश्व में... अब विश्व के हर कोने-कोने से एक आवाज जरूर निकलने वाला है क्या? " ***मेरा बाबा आ गया"। ये जा रहे हैं पूरे विश्व में जो कहते हैं ना "ओम मंडली", "आदि सो अंत"।*** देखो कई कहते हैं, कैसे थे ब्रह्मा बाबा... भई ऐसे थे ब्रह्मा बाबा, जिन्होंने जो अनुभव किया, उन्होंने वो सुनाया पर जिन्होंने देखा ही नहीं, जो अनुभव ही नहीं किया। उनको क्या पता, इसीलिए आज तक हर जगह से कोई कोई बच्चे मुरली को कैसे पढ़ते थे। कोई भी थोड़ा सा भी परेशान हुआ, मुरली को उल्टा पढ़ने लगे। ***अपनी मुरली को सीधा कर लेवे क्योंकि उल्टा पढ़ने का समय चला गया। चला गया ना, क्योंकि कहते हैं ना आधा कल्प ब्रह्मा के रात होती है.... आधा कल्प ब्रह्मा का दिन होता है तो अब क्या हो गया है। दिन हो गया ना और दिन में सब मच्छर, कीड़े, मकोड़े सब अंदर चले जाते हैं ना। तो अभी कौन आया है? बाप आया है। अब सब की मुरली सीधी करने आया है।*** कैसे करने आया है। सब टेढ़ी पढ़ रहे थे मुरली को। केहते हैं.... यहाँ बाबा ने ये कहा, वहाँ बाबा ने ये कहा, लेकिन अब बाबा ने क्या कहा, अब की यात्रा कैसी है? ***पूरे विश्व में - "ओम मंडली रिचेस्ट इन द वर्ल्ड" एक नारा लगेंगा।*** ठीक है ना "ओम मंडली" !!

18.01.2021

(12) "भारत माता शिव शक्ति अवतार अंत का यही नारा है।"

बच्चे आप खड़े हो जाओ, आप भी खड़े हो जाओ, खड़े हो जाओ आप भी। अब इधर सब दिखाओ सामने आए इनको देख रहे हैं... ***"भारत माता शिव शक्ति अवतार अंत का यही नारा है।"*** अब इसी में देखो क्या आया है इधर आओ इधर इधर! पूरा भारत भी है और आध्यात्मिकता भी है। ***दोनों आ गए ना आ गए। भारत भी और बाप भी..*** . भारत का बाप भारत की महिमा कब हुई? देखिए जब भारत की भूमि पर... भगवान आते हैं तो भारत की महिमा होती है। अंतिम समय का ये नारा सबसे अलग ये कौन जा रहे हैं?

यह ***"ओम मंडली रिचेस्ट इन द वर्ल्ड" के बच्चे जा रहे हैं। "शिवशक्तियाँ" जा रही है... "पांडवसेना" जा रहे हैं। अब अंतिम समय पूरा विश्व आपके पीछे होंगा क्योंकि अब नारा लगेगा*** "विश्वशांति" का नारा ठीक हैना...? ***बाप आए हैं पूरे भारत को सिलने के लिए। क्या करने के लिए? सिलने के लिए सब फट गए ना ! सब कपड़े अलग-अलग हो गए। और बाप अभी क्या करने आए हैं। सबको जोड़ने के लिए आए हैं।*** अब पूरे विश्व में हर एक के दिल से निकलेंगा, मुख से निकलेंगा - "मेरा बाबा आ गया", "प्यारा बाबा आ गया।" कहाँ कहाँ सभी रो रहें हैं और यहाँ सभी बैठके हँस रहे हैं, क्यों हँस रहे हैं? ***क्योंकि पेपर में पास हो गए हैं। ये सभा कौनसी है। पेपर में पास होने वालों की सभा है। कौनसा पेपर है? बाप की पेहचान का पेपर ।*** भल कोई कहे नहीं है, कोई कहे है कोई फिर कहे हो नहीं सकता। अब ये बताओ इस विश्व में संसार में ऐसी कौन सी वस्तु है, कौनसी चीज ऐसी है, जो नहीं हो सकती हो। कोई ऐसा कर्तव्य है? जब सतयुग से कलयुग... कलयुग सतयुग हो सकता है तो क्या नहीं हो सकता !! पूरा विश्व परिवर्तन हो सकता है तो क्या नहीं हो सकता ! और जब जहाँ बच्चा बैठकर बाप को पुकारे तो क्या वहाँ बाप नहीं हो सकता !! ***कहते हैं ना भक्ति मार्ग में एक चीज है "भक्त" "भावना" और "भगवान"। तीनों की राशि एक है ना... जहाँ भक्त हैं, वहाँ भावना है और वही फिर भगवान भी होता है। पूरी फैमिली एक साथ होती है ना ! "भक्त" - बच्चा, "भावना" - माता और "भगवान" - पिता तीनों आ गए, और देखो बाप, बच्चे, और ये जो मिलन है, ये भक्त और भगवान का नहीं है, ये किनका है? बाप और बच्चों का।*** देखो...भक्त क्या करते हैं, भक्ती करते है पर समझते क्या है कि मैं भगवान के चरणों की धूल हूँ... दास हूँ । यही समझते हैं ना लेकिन बाप क्या केहते हैं बच्चे बाप के गले का हार है। बच्चे बाप के सिरताज है। ***हर एक बच्चा बापको कैसा चाहिए अभी - "वफादार" कौनसा बच्चा चाहिए... दिल से वफादारी बाप के प्रति कुछ भी नहीं खाली कर दो मन को, हम ऐसे करेंगे तो हम इतना आगे जाएंगे नहीं....। मुझे मेरे बाप के दिल पे चढ़ना है तो मैं अपने बाप के दिल पर चढ़ गया तो मैं सबसे आगे जाऊंगा।*** ठीक है ना, ***अगर सुख शांति का परिवार बनाना है तो दिल को साफ करो। दिल में एक दिलाराम को बैठाओ और बाप के प्रति वफादार।*** आज से पहले जो भी हुआ हो, चलो छोड़ दो... पर आज के बाद क्या करेंगे? "वफादार" माने क्या लिस्ट निकालो, ***वफादार किसको कहते हैं? "फरमानबरदार" किसको कहते हैं? "सच्ची दिलवाले" किसको कहते हैं?*** क्योंकि ये जो स्थान है, एकदम साफ सुथरा बिल्कुल प्लेन है। यहाँ भल बच्चे भोले हैं, पर बाप तो बाप है ना !!भल बच्चे हैं और बाबा को क्या चाहिए। हर बारी बाबा जीतनी वारी भी आएंगा यही कहेंगा अपन को भोले बच्चे चाहिए। कौन से बच्चे? भोले बच्चे भोलेनाथ के भोले बच्चे चाहिए। खाली कर दो इधर से, साफ कर दो। ***मैं कुछ नहीं हूँ, ना मैं जानता हूँ अपने आप को। मैं जानता अपने बाप को हूँ और मैं पूरे विश्व में किसीको नहीं जानता। बस अब मुझे पुरे विश्व में बाप का परिचय देना है ।*** ठीक है बच्चों? बाप की प्रत्यक्षता हो गई..? हो गई है तो बतावे हाथ खड़ा करें। हो गई या होगी...। होगी ना तो बाप फिर परमधाम में क्या करेगा जाके। जाएंगा? ***बाप की प्रत्यक्षता नहीं हुई तो बाबा ऊपर क्या करेंगा?*** आजकल

जो भी मुरली आती है, भल पढ़ो सभी बच्चे पढ़ो पर उसमें भी क्या आता है? सब अच्छे से छाँट के अच्छे से निकालके, अच्छे से पर कोई बात नहीं मुरली तो बाप की है, ये सोच कर पढ़ो। ***पर अगर किसमें ये लिखा है कि बाप मधुबन के अलावा कहीं और नहीं आ सकता तो इसमें अपन कांटा लगाते हैं। पूरा कांटा क्योंकि बाप कहाँ कहाँ आया। बाप का कर्तव्य कहाँ - कहाँ चला... पहले पूछते हैं? मधुबन ने बापको बनाया या बापने मधुबन को बनाया।*** (बापने मधुबन को बनाया) पक्का!! पहले मधुबन था? (नहीं...) तो किसने बनाया बापने बनाया। सभी बच्चों के साथ मिलके बनाया। तो जब बच्चों के लिए मधुबन बना सकता है तो बच्चों के लिए मधुबन छोड़ने में देरी थोड़ी लगेंगी !! *__तो बच्चों के लिए बाप 10 मधुबन और बना सकता है।__* तो ये बाप का प्यार है। और अब कहे मधुबन बन चुके हैं बस आपकी यात्रा की बारी है। ऐसे ऐसे हर स्थान पे सबकुछ तैयारी हो चुकी हैं। अच्छा बच्चे खुशी में डांस करो, नाचो गाओपूरे विश्व में.... ये ओम मंडली है। कौन सी मंडली है? ***जब बापने स्थापना किया है तो अधूरा छोड़के थोड़ी जाएंगे, भई पूरा करके जाएंगे। भल जन्म मिले ना मिले पर शरीर तो मिल गया और तीनों एक साथ हो गए और जब तीनों एक साथ है, तो कर्तव्य बहुत जल्दी पूरा होंगा ।*** तैयार होना...? सभी तैयार हैं? ये तो नहीं कहेंगे, नहीं नहीं अभी थोड़ा रेस्ट कर ले बाबा थोड़ा बाद में करेंगे। इस शिवरात्रि चारों तरफ बाप का परिचय पहुँच जावे। बाप की दृष्टि भी पड़ी तो बहुत कल्याण है । ***अंतिम समय का जो बापने वायदा किया है ना... कौनसा वायदा किया है? पूरे विश्व में दृष्टि का पार्ट चलेगा... पूरे विश्व में सभी आत्माओं पे बाप की दृष्टि पड़ेंगी और दृष्टि से वंचित तो कोई रहेगा नहीं तो यह समय अभी नजदीक आ गया है।***

08.01.2021

(*13) "अंतिम समय का पार्ट है दृष्टि का।"*

सभी धर्मों की एक पुकार परमात्मा है निराकार"।

एक बारी पढा दिल में बैठ गया। ठीक है ना देखो बच्चे भल कोई मिले ना मिले भल मेजोरिटी *अपने बाबा की दृष्टि तो हर एक बच्चे पर पड़ेंगी ही... यह तो बाबा ने क्या कहा है? अंतिम समय का पार्ट है दृष्टि का।* **अब मधुबन में बाबा ने कहा कि अंतिम समय का पार्ट दृष्टि का है पर क्या हुआ ? नहीं हुआ ना, नहीं हुआ तो फिर बताओ... अगर होगा ही नहीं तो फिर यह तो परमात्मा फिर झूठे पड़ गए। गलत हो जाएगा ना ! भई** *परमात्मा वायदा करता है बैठकर बच्चों अंतिम समय का पार्ट दृष्टि का चलेंगा, नजरों से निहाल करेंगे। अगर वो ही नहीं हुआ तो फिर परमात्मा तो झूठा पड़ गया।* और बाप कभी झूठ बोल नहीं सकता। ***बाप ट्रूथ है, सत्य है और "सत्यम शिवम सुंदरम" है तो वह सत्य कभी झूठ का सहारा तो नहीं लेंगे ना।*** तो जब तक बापने जो जो कहा है वो वो पूरा नहीं होता तब तक बाबा परमधाम में जाएगा भी नहीं। देखेंगा भी नहीं। केहते हैं ना आऊँगा तो अपना लक्ष्य पूरा करके ही आऊँगा। अब ये तो सिद्धांत नहीं है ना कि बाबा मधुबन में ही आएंगा। भई एक बात बतावे मंदिर में बैठनेवाले भक्त वो वहाँ बैठकर

भी याद कर रहे हैं, तो क्या बाबा वहाँ नहीं जाएंगा? क्या वो बच्चे नहीं है बाप के। ***जो सन्यासी इतने समय से पहाड़ों में बैठकर, बर्फ में बैठकर, तपस्या कर रहे हैं क्या उनसे नहीं मिलेगा?*** जरूर मिलना चाहिए ना। ***अगर कहेंगे कि एक ही स्थान पर परमात्मा बंधा हुआ है तो फिर ये किसी शास्त्र में भी नहीं है फिर। न किसी वेद पुराण में नहीं है। ये किसी मुरली में भी नहीं है।अब कहते, नहीं बाबा मधुबन में ही आएगा और कहीं आ नहीं सकता, तो बाबा कहेगा बाबा तो कोलकाता में भी आया... बाबा ने तो कराची से पार्ट शुरू किया.... बाबा तो दिल्ली में भी आया। कितनी जगह गिनवाएँगे । बाबा तो एक-एक बच्चे के लिए भी आया। बाबा तो एक छोटे से स्थान पर भी आया।*** आया ना?? जब अपन जाते थे कहाँ कहाँ चक्कर लगाने, तो बाबा आते थे.... क्या गिनवाएँगे कितने स्थान पर बाबा आया। और अगर ये कहे कि सिर्फ मधुबन में ही आएंगा अपन ये कहेगा उनसे बड़े महामूर्ख कोई नहीं है। एकदम सामने से बोल रहे हैं कि एक ही स्थान पर भगवान का पार्ट चलता है। ***पूरीसृष्टि किसकी है? चलाने वाला कौन है?*** और अगर कहेंगे पूरी सृष्टि में जब बच्चों के प्यार में बाप परमधाम छोड़ सकता है, बुद्धि में सोचना... ***जब बच्चों के प्यार में, दुख तकलीफ में इतना प्यारा घर जहाँ परमपिता परमात्मा का वास है, उसको छोड़ सकता है तो क्या कराची को कोलकाता को मधुबन को नहीं छोड़ सकता !! क्या मधुबन को नहीं छोड़ सकता !!*** छोड़ने के बात दूसरी है। अब छोड़ना मना क्या छोड़ना माना ये नहीं कि भई चलो बच्चे इतने बैठे हैं जो अभी तक नहीं मिले हैं जो अभी जिन का पार्ट अभी तक पूरा नहीं खुला है, नहीं आए हैं जो एक कोने कोने में बैठकर चिल्ला रहे हैं, वो कहाँ जाएंगे? कहाँ जाएंगे? क्या उनसे नहीं मिलेंगे? जरुर मिलेंगे हर एक कोने में बैठकर बच्चे क्या बोलते हैं। हम ना ढूँढ ढूँढ कर थक गए हैं। अब हमारे पैर दुखने लग गए हैं, टिपरी घिस गई है, हम नहीं आएंगे... आपको प्यार है ना तो आप आ जाओ। ऐसे बच्चे पुकार रहे हैं। ऐसे बच्चे बोल रहे हैं भई हमें तो प्यार है पर हम अब थक गए हैं, अब ढूँढ नहीं पाएंगे। अगर आपको प्यार है तो आप आ जाओ और हमसे मिल लो। तो बाप उन बच्चों को क्या कहता है, ठीक है आप तैयारी करो और बाप पहुँच रहा है। ऐसे बच्चे केह रहे हैं जिनको आपने भी नहीं देखा ऐसा ऐसा स्थान है तो बाबा जाएंगा... मिलेंगा। ये पूरा विश्व बाप का है, बाप का अधिकार है पर ***प्यार में बाप को बांध लो अधिकार में पकड़ कर बैठेंगे.... नहीं नहीं आप कहीं जाओगे नहीं, इधर ही बैठे रहो, तो बाप तो हवा है चाहे कितनी भी मुट्ठी कस के पकड़ लो निकलना उसको आता है।*** तो ये तो भूल जावे कि बाबा एक ही स्थान पर आएगा। ठीक है ना बच्चों।

05.12.2020

(14) बाबा यह जो पूरी प्रकृति है, वाइब्रेशन से चलती है, जब प्रकृति में वाइब्रेशन जा रहा है बहुत सारी आत्माओं से तो उसका रिजल्ट में इतनी देरी क्यों है?*

बिल्कुल रिजल्ट में देरी है। एक माँ जब बच्चा छोटा होता है, गलती करता है...माँ सिखाती है, गिरता है... माँ उठाती है, बड़ा होता है तो भी हर तरह से उसको समझाने की कोशिश

करती है। ऐसा तो नहीं है कि सब बच्चे गिरे माँ ने उठाए और सब बच्चे गिर रहे हैं, माँ संभालती है उठा रही है। और बच्चा कहेगा इसको खत्म कर दो। तो माँ के पास वह और भी बच्चे हैं जो अच्छे भी हैं जो उठके चल रहे, जो नाम रौशन करने वाले हैं, एक लेवल पे आ चूके हैं। और एक बच्चा दुखी होकरके क्या कहता है। सब खत्म कर दो। नहीं.... एक लिमिट देखेंगे। ***माँ के अंदर सहनशक्ति तो देखो कितनी होती है !! और ये प्रकृति भी क्या है, कितना सहन कर रही है किसके लिए ? हम बच्चों के लिए आप बच्चों के लिए। क्यों? क्योंकि यही बच्चे वो है जो अपने परमात्मा को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनेंगे। जैसे ही हुआ (प्रत्यक्षता का कार्य) ऐसे फिर किसीका सुनेगी नहीं।*** वाइब्रेशन एक नहीं पहुँच रहा है अनेक तरह के संकल्प पहुँचते हैं। मेजोरिटी तो दुखी है.... कि- हे परमात्मा उठालो, खत्म कर दो, सब खत्म कर दो, बहुत दुखी हो चुके हैं। चल रहे हैं ना !! क्या मेजॉरिटी चल रहे हैं? ठीक है, मानो 70 - 80 परसेंट चल रहे हैं। 10 - 20 पर्सेंट वह भी तो चल रहे हैं कि हमें परमात्मा का नाम बाला, परमात्मा की प्रत्यक्षता, या परमात्मा प्रत्यक्ष होगा पूरे विश्व में हम सबका परमपिता। परमात्मा कौन है ये कोई नहीं जानता। सब भगवान को याद करते हैं, देवी देवताओं को याद करते हैं, अनेकों को याद करते हैं। ***कोई किसी की भक्ति में लीन, कोई किसीकी शक्ति में लीन हो रहा है।*** लेकिन एक जिसने हम सबको बनाया है, वो कहाँ प्रत्यक्ष हुआ है ? वो होगा ना, वो हुआ तो ये सब खत्म। फिर बच्चा गिर रहा है, उठा हुआ है, अब बोल रहा है, अभी-अभी माफ कर दो, फिर नहीं होगा। फिर किसी की माफी नहीं होंगी। ***जब तक एक "माँ" (प्रकृति)अपने "पति"(प्रकृतिपति), "पिता" (परमपिता)को प्रत्यक्ष नहीं कर देती तब तक कैसे सृष्टि का वो (परिवर्तन) हो सकता है? ठीक है। परिवर्तन होगा पर अपना बाबा जब चारों तरफ से निकलेगा "मेरा बाबा आ गया"। एक तरफ से प्रत्यक्षता का नगाड़ा एक तरफ से विनाश का नगाड़ा, दोनों एक साथ बजेंगे।*** फिर विनाश !! यह स्टेज है यहाँ विनाश होते-होते इधर आया। यहाँ प्रत्यक्षता के नगाड़े बजते, बजते, बजते, बजते चारों तरफ फिर पीछे से कौन आता है? फिर मेरा बाबा आ गया... फिर श्री कृष्णा आ गया। पीछे पीछे वो आएगा। यह चक्र है, घूम रहा है, जल्दी हो जाएगा। ओके... !! ***बाबा अभी कुछ समय पहले शिव बाबा ने बोला था...कि प्रकृति माँ है और परमात्मा पिता है तो जब माँ का डिसरिकर्ड होता है तो बाप भी साक्षी हो जाता है फिर वह इंटरफेयर नहीं करता। तो अगर इनका डिसरिकॉर्ड हुआ तो सजा बहुत बड़ी है।ऐसे बोला था और फिर बाबा ने कहा था कि बात बहुत गहरी है। ब्रह्मा बाप से पूछना***हाँ कितनी अच्छी बात है प्रकृति माँ (नेचर), प्रकृति माँ (पाँच तत्व का शरीर) और डिसरिगार्ड। तो माँ का तो कितना डिसरिकॉर्ड कर रहे हैं। रोज डिसरिगार्ड कर रहे हैं। प्रकृति का अर्थ क्या है? यह (निसर्ग)प्रकृति है, यह (शरीर) प्रकृति है.... यह जो हर शरीर पाँच तत्वों से बना है प्रकृति है। ठीक है ना इसमें बैठी कौन है? आत्मा बैठी है। अब हर एक प्रकृति दूसरि प्रकृति के साथ गलत काम कर रही है। ***आत्मा अपने प्रकृति के साथ उसकी प्रकृति के साथ गलत काम करवा रही है, पाप करवा रही है, गलत हो रहा है तो यह क्या हो रहा है। डिसरिकॉर्ड हो रहा है। और ये डिसरिकॉर्ड होगा तो कब तक ? जब***

"माँ" का डिसरिगार्ड होता है ना तो "पिता" साक्षी हो जाता है। फिर किसी भी चीज में... किसी भी चीज में इंटरफियर नहीं करेगा।* एक बच्चा माँ का केहर नहीं देख पाएंगा, तो पिता का तो कहाँ दिखेंगा ? यह पूरी प्रकृति, पूरी प्रकृति क्या है? माँ है ! दासी क्यों कहते हैं, ***प्रकृति दासी बनेगी। दासी का अर्थ क्या है? दासी नहीं माँ बनेगी। जैसे एक माँ अपने छोटे बच्चे को कितना पालती है, एक दासी के जैसे करती है ना। बच्चा रोता है, उठाती है, दूध पिलाती है भोजन.... दासी के जैसी लगी रहती है। आगे पीछे, आगे पीछे दासी के जैसे लगी रहती है ना?*** दासी नाम दे दिया, मतलब दासी समझ लिया। प्रकृति के बाप बन गये !! दासी का अर्थ माँ भी होती है, जो पालना करने वाली होती है। दासी क्या करती है? पालना करती है ना माँ बनकरके पालना करती है, तो यह क्या है? तो यह प्यार है, प्रकृति का प्यार है और सतयुग में प्रकृति माँ होंगी । इधर भी माँ है लेकिन अब माँ बड़ी क्रोधित है। ***क्रोधित क्यों है क्योंकि कितना अत्याचार हो रहा है समझ में आया।*बाबा अभी कुछ समय पहले शिव बाबा ने बोला था...कि प्रकृति माँ है और परमात्मा पिता है तो जब माँ का डिसरिगार्ड होता है तो बाप भी साक्षी हो जाता है फिर वह इंटरफियर नहीं करता। तो अगर इनका डिसरिगार्ड हुआ तो सजा बहुत बड़ी है - ऐसे बोला था और फिर बाबा ने कहा था कि बात बहुत गहरी है। ब्रह्मा बाप से पूछना*** हाँ कितनी अच्छी बात है प्रकृति माँ (नेचर), प्रकृति माँ (पाँच तत्व का शरीर) और डिसरिगार्ड। तो माँ का तो कितना डिसरिगार्ड कर रहे हैं। रोज डिसरिगार्ड कर रहे हैं। प्रकृति का अर्थ क्या है? यह (निसर्ग)प्रकृति है, यह (शरीर) प्रकृति है.... यह जो हर शरीर पाँच तत्वों से बना है प्रकृति है। ठीक है ना इसमें बैठी कौन है? **आत्मा बैठी है। अब हर एक प्रकृति दूसरी प्रकृति के साथ गलत काम कर रही है। आत्मा अपने प्रकृति के साथ, उसकी प्रकृति के साथ गलत काम करवा रही है, पाप करवा रही है, गलत हो रहा है तो यह डिसरिगार्ड हो रहा है। और ये डिसरिगार्ड होगा तो कब तक ? जब "माँ" का डिसरिगार्ड होता है ना तो "पिता" साक्षी हो जाता है। फिर किसी भी चीज में... किसी भी चीज में इंटरफियर नहीं करेगा।** एक बच्चा माँ का केहर नहीं देख पाएंगा, तो पिता का तो कहाँ दिखेंगा ? यह पूरी प्रकृति, पूरी प्रकृति क्या है? माँ है ! दासी क्यों कहते हैं, प्रकृति
दासी बनेगी। दासी का अर्थ क्या है? दासी नहीं माँ बनेगी। जैसे एक माँ अपने छोटे बच्चे को कितना पालती है, एक दासी के जैसे करती है ना। बच्चा रोता है, उठाती है, दूध पिलाती है भोजन....। दासी के जैसी लगी रहती है। आगे पीछे, आगे पीछे दासी के जैसे लगी रहती है ना? दासी नाम दे दिया, मतलब दासी समझ लिया। प्रकृति के बाप बन गये !! दासी का अर्थ माँ भी होती है, जो पालना करने वाली होती है। दासी क्या करती है? पालना करती है ना माँ बनकरके पालना करती है, तो यह प्यार है, प्रकृति का प्यार है और सतयुग में प्रकृति माँ होंगी । इधर भी माँ है लेकिन अब माँ बड़ी क्रोधित है। **क्रोधित क्यों है क्योंकि कितना अत्याचार हो रहा है समझ में आया**

30.04.2021

(15) *विनाश के time क्या करना है?*

बड़ी खुशी में बोलते हैं खुशी खुशी से पूछते हैं, नाँच नाँच के पूछते हैं। क्या पूछते हैं पता है-- ***"विनाश कब होगा?" ऐसे पूछते हैं। "डेट बताओ... फिक्स करो"। वो जो इतना बाहर बारी-बारी जो बच्चे पूछते हैं, विनाश कब होगा, हम बहुत दुखी हो गए, विनाश कब होगा?***

अच्छा अगर उनका पड़ोसी चला गया या उनके घर में से कोई चला गया तो क्या बोलते हैं - "भगवान तेरे से बड़ा बुरा कोई नहीं है"। दुनिया का पूछा तो विनाश पूछते हैं, पर ये क्यों नहीं सोचते कि विनाश अर्थात हमारे लौकिक में भी जा सकते हैं। जिससे आप बहुत ज्यादा प्यार करते हैं, पहले उसको भी ले सकते हैं और खुद को भी ले सकते हैं। यही विनाश है "आप मुए मर गई दुनिया"। और जब शुरुआत करते हैं, जब आसपास से लेते हैं तो कहते हैं मैंने ये थोड़ी बोला था कि हमारे घर वालों से उठा लेना। ऐसे थोड़ी होता है!! मतलब अपना...अपना और दूसरों को मरने की दुआएं करते हैं और पूछतें है कि विनाश कब होगा? विनाश होगा तो क्या हम बचेंगे !! हाँ बाबा ने कहा है कि मरने की स्थिति परिस्थिति चेंज हो जाएंगी। हम बच्चे भी तो जाएंगे ना... अपन तो पहले ही जा चुके हैं। जाएंगे ना? सोचो... लेकिन उसमें एक बहुत बड़ा फर्क होंगा विनाश में जो दुनिया पाप कर्म कर रही हैं, आज देख रहे हो... ***क्या कहा था? कोई किसी को जलाने वाला भी नहीं बचेंगा, कोई किसी का संस्कार करने वाला भी नहीं बचेंगा।है कोई ? सब लाइन में लगे हैं। अभी मेरे वाले की बारी है... अभी मेरे वाले की बारी है उनको नंबर देते हैं एक, दो, तीन, चार, पांच छे। (चार कन्धा भी नहीं मिलता बाबा अभी तो...) मिल रहा है कुछ? (संस्कार करने के लिए भी पैसा ले रहे हैं) कितना घोर कलयुग !! इससे घोर कलयुग क्या आएंगा?*** जिन्दे की तो कदर छोड़ो मरने वाले की भी नहीं है। इससे घोर कलयुग है कोई और ? ऐसा इससे और घोर कलयुग आ सकता है? नहीं आ सकता है ना... तो? इसलिए यही विनाश है और ये विनाश देख रहे हैं। अब सोचो! अब अगला सीन बताते हैं-- अब तो कम से कम जला भी रहे हैं ,अब तो कोई मशीन से जला देते हैं, लेकिन आगे सब साइंस के साधन ठप्प, जलाने वाला भी नहीं बचेगा। तो पूरे संसार में ये शरीर सड़ने लगेंगे ऐसी स्थिति आने वाली है। ***और हाँ जैसे बाबा के बच्चे हैं, प्यारे बच्चे हैं अपने कर्मों से, अपनी याद से,अपने विचारों से बाबा उनकी छत्रछाया बना देंगा। जैसे दुनिया में क्या होता है? जब बहुत गर्मी पड़ रही होती है तो छाता निकालते हैं... लेकिन ऐसी स्थिति अब होने वाली है उनकी जो बापके बच्चे हैं... जो याद में रेहते हैं। कहते हैं ना जब बहुत तेज धूप होती है तो क्या लेते हैं? छाते से क्या होता है? बाबा क्या है? "छाता"! "बाप की याद" !! अच्छा दुनिया वाली छाता कितनी चीजों से मिलके बनता है सोचो? और जो बापकी याद का छाता है वो याद से, अच्छे कर्म से, प्यार से ज्ञान से धारणा से, सेवा से, इन सारी चीजों से बनता है बाबा की याद का छाता और वो परमानेंट आपका रहेगा।*** क्यूँकि उसके ऊपर जितना आपने उसमें.... जितना मोटा बनाएंगे उतना ही वो अच्छी घनी छाँव देंगा और उसपे आपका नाम लिखा जाएगा - ये फलाने का छाता है इसको कोई नहीं लेंगा। ***इसलिए बाबा यही कहेंगा इस दुनिया में भी अपने कर्मों पे ध्यान दो,अच्छे कर्म करो,अगर कर्म अच्छा नहीं**

हुआ तो छाते में छेद हो जाएंगा। जितना कर्म बुरा छाते में उतने ही छेद समझ में आया। और जब छेद होते हैं, तो ना बारिश को रोक पाते हैं,ना धूप को रोक पाते हैं। तो अपने कर्मों पर पूरा ध्यान देना है।* अटेंशन!! कोई भी ऐसा कर्म ना होवें, सबसे बड़ा पाप कर्म है हिंसा करना, हर तरह की हिंसा। आज की दुनिया में देखो कितना भ्रष्टाचार है, छोटी छोटी बच्चियाँ सेफ नहीं है । देखा...!! देखो दुनिया में बाप तो रोज देखते हैं। छोटी छोटी बच्चियाँ सेफ नहीं। एक दूसरे को मार देते हैं। कितना भ्रष्टाचार है। मारते तो ऐसे हैं जैसे चींटी को मार रहे हैं। इंसान को मारना ऐसा हो गया जैसे चींटी को मार रहे हैं। एक दो को ऐसे मार रहे हैं। बाप तो रोज देख रहे हैं तो इससे ज्यादा भ्रष्टाचार क्या होंगा। कितना पाप कर्म है, पूरा संसार दुख में चिल्ला रहा है,रो रहा है। बोलते हैं ना,अभी जैसे कोई भी चीज होती है तो सबको लाइन में लगा दिया। मंदिर में जाओ तो भी लाइन में, कुछ भी खरीदने जाओ तो भी लाइन में, कुछ लेने जाओ तो भी लाइन में, अब श्मशान में भी क्या हो गया? श्मशान में भी लाइन में जाओ। इससे बड़ा पाप कर्म क्या होंगा, इससे बड़ी दुर्गति क्या होंगी जो उस स्थान पर भी लाइन में लगना पड़े। ***आप सोचो! और बाप क्या केहते हैं बच्चे अगर आप बाप के प्यारे बच्चे हैं, अच्छे बच्चे हैं याद वाले बच्चे हैं,किसी को दुख नहीं देते हैं, तो उन बच्चों की छत्रछाया बाप करेंगा और उनके शरीर का संस्कार भी प्रकृति करेंगी। और जो प्रकृति करती है तो देखो!*** समझ में आया? और उनकी शरीर छोड़ने की कला भी बड़ी प्यारी होंगी। कैसे? बैठे रहो, "ॐ" करते रहो, उड़ गए। "ॐ" करते-करते उड़ जाएंगे, ध्यान में बैठे-बैठे उड़ जाएंगे। ऐसे तो नहीं मरेंगे! किसी का पूरे शरीर को खोल खोल के देख रहे हैं। काम की चीज है तो निकाल लो। सोते-सोते भी शरीर छूट जाएंगे ऐसी स्थिति होंगी। इतना अच्छे से शरीर छोड़ेंगे और शरीर में कोई भी ऐसा बीमारी से या फिर कुछ भी ऐसे शरीर नहीं छोड़ेंगे तो कितनी अच्छी मौत है! कितना शरीर भी छोड़ना एकदम आसान। आज आप देखो आज की स्थिति कैसी है? किसी को कोई बड़ी बीमारी लग गई। इससे बड़ी बीमारी कोई होगी अभी? देखो मालूम है ना? देखते हो ना टेलीफोन में रोज? नहीं देखा करो क्यूँकि मन खराब होता है, दुखी होता है ***इसलिए बैठकर के "ॐ" करना शुरू करो, ठीक है। रोज करना है, घरवालों को भी कराना है क्योंकि आज की स्थिति में अगर इन सब चीजों से दूर रहना है तो "ॐ" जरूरी करना है ओके।*** अच्छा बच्चों बाप तो यही कहेगा सदा खुश रहो,भल दूसरा अगर दुखी है ***उसको मनोबल दो, मन की ताकत दो, पर उसको देख करके रोना, उसको देख करके दुखी होना ये अच्छे बच्चों की निशानियाँ नहीं है। उसको आप हिम्मत दे सकते हो, ताकत दे सकते हो, हौसला दे सकते हो, जीने की उम्मीद बढ़ा सकते हो। आप बच्चों का ये कर्तव्य है।*** उनको देख करके रोना ये चीज नहीं। हाँ पूछो!

28.08.2020

(*16) "FIRST LESSSON IS LAST LESSON"*

पहला लेसन..... लास्ट लेसन। फर्स्ट पढ़ाई.... लास्ट पढ़ाई। है ना !!! फर्स्ट पढ़ाई कौन सी? मैं आत्मा हूँ, और मैं बाप की बच्ची हूँ। लास्ट पढ़ाई कौन सी? लास्ट पढ़ाई भी

क्या? जैसे दुनिया में जब बच्चा छोटा है, तो उसको किस चीज का अभिमान होता है? होता है? नहीं..... वो एकदम इनोसेंट होता है, एकदम भोला, प्यारा, मतलब कहेंगे उसकी स्थिति कौन सी है ? आत्मिक। वही बच्चा जब बड़ा होकर के, बूढ़ा हो जाता है, एकदम बूढ़ा तो वही बच्चा एकदम लास्ट में फिर बच्चा बन जाता है। क्यों बनता है? क्योंकि अब उसकी स्थिति.... क्यूंकि ना वो बोल सकता ना सुन सकता। देखने की दृष्टि खत्म। फिर उसकी स्थिति कैसी आती है? "आत्मिक स्थिति" और बच्चे जैसा संस्कार बन जाता है। बच्चे जैसा क्यों बनता है? क्यों बनता है बच्चे जैसा? क्योंकि वापिस उसको बच्चा या बच्ची बनना है। इसलिए इसी जन्म में वो बूढ़ा होने के बाद क्या बन जाता है? एकदम छोटा बेबी !!!सोचो क्यों बनता है- बेबी !! क्योंकि वो अगले जन्म में फिर से बेबी बनने वाला है। फिर से छोटा बेबी बनने वाला है। तो बाप क्या कहेंगा? बेबी बन के रहो। छोटे बच्चे बन के रहो। बड़े में बड़ी टेंशन होती है। फ़िक्र होती है। बोझ चढ़ जाता है, अगर छोटा बेबी बनते हैं तो..... तो क्या? ***बस बाप यह कहेंगा अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो।***

20.08.2020

(*17) "कर्मातीत की हाईएस्ट स्टेज "*

कर्मातीत" कर्म से अतीत। सबसे पहला.. अर्थ कि जब आपका इस संसार में सब कुछ हिसाब-किताब पूरा हो जावे, और आपकी पुरानी देह का त्याग हो जावे, और वतन में आप जा कर के बैठ जावे.... "कर्मातीत"। उससे भी उपर स्थिति कर्मातीत से भी ऊपर स्थिति "हाईएस्ट कर्मातीत" जो बिंदु बन के बैठ जावे... कर्मातीत का अर्थ, अब मानो अपन बैठे हैं ऊपर, ऐसा तो कहेंगे नहीं कि भई हाँ स्थूल रूप से कर्म नहीं कर रहे हैं। सूक्ष्म का तो सब कुछ चल रहा है ना। क्या सूक्ष्म का कर्म नहीं होता? फिर ***कर्मातीत की हाईएस्ट स्टेज है, परमधाम की स्टेज। हाँ* *स्थूल रूप से कहेंगे कर्मातीत, लेकिन सूक्ष्म रूप से आप कर्मातीत नहीं केह सकते। क्योंकि सूक्ष्म रूप से अपन बहुत चारो तरफ चक्कर लगाते हैं।*** बाप बोलते हैं ये करा के आओ, वो करा के आओ। उसको साक्षात्कार करा के आओ। उसकी बात सुनके आओ वो क्या मांग रहा है। कोई-कोई कुछ मांगता है, कोई बोलता है भगवान इतना ले लो इतना दे दो... इतना ले लो... इतना दे दो..... कोई बोलता है ये लो थोड़ा सा प्रसाद एक बच्चा दे दो। ये लो थोड़ा सा प्रसाद एक घर दे दो, एक गाड़ी दे दो, एक बंगला दे दो। सारा दिन यही तो बैठके सुनते हैं अपन। अब ऐसा तो है नहीं कि भई..... हैना सभी के पास जाना पड़ता है। मंदिर, मस्जिद गुरुद्वारे, चर्च सब जगह जाना पड़ता है। कोई गाली देते हैं कोई प्यार करते हैं।***बच्चे सम्पूर्णता का अर्थ क्या होता है?*** संपूर्ण इस कर्म इस कर्म क्षेत्र से ऊपर चले गए। यहाँ पाप पुण्य का अर्थ होता है। उस पाप पुण्य से ऊपर उठ जाना। एक अलग स्थिति है। ****दूसरी बात संपूर्णता का अर्थ है "सं"....."पूर्ण" सारी चीजों को समेटना सूक्ष्म में, स्थूल में, और बिंदु रूप में बन जाना। ये होता है संपूर्ण... संपूर्ण... संपूर्ण अवस्था।* *** (पर वो तो हाईएस्ट संपूर्णता कहेंगे ना) हाईएस्ट संपूर्णता कहेंगे !! देखो

संपूर्णता के भी कई मतलब है। एक संपूर्णता सूक्ष्म वतन की होती है, एक संपूर्णता होती है परमधाम की। तो परमधाम की संपूर्णता अब तक हुई नहीं है। हाँ सूक्ष्मवतन की संपूर्णता पूरी तरह से है। क्योंकि हाई... हाई (high) संपूर्ण अवस्था कहेंगे, वो परमधाम की होती है। उसके बाद फिर आते हैं जन्म ले कर के, फिर तो इस जन्म की रील ही कट हो जाती है।

11.02.2021

(18) बाबा ये जो भोले बच्चे जो भटकाए हैं इन अलग अलग पार्टिओं के लोगों ने और आने भी नहीं दे रहें है उनको, तो उनका क्या कर सकते हैं ?

बाप आया है ***देखो बच्चे बारी-बारी बाबा क्या कहते हैं, सूत मूँझा दिया है, उलझा दिया है यह कोई भक्ति मार्ग वालों के लिए नहीं कहा। यहीं पर ही जो हुआ यहीं पर ही जो शूटिंग हुआ उसी के लिए कहा सूत किसने मुंझाया... द्वापरयुग से जो आए उन्होंने ही मुंझाया और बाबा अभी आकरके क्या कर रहा है... एक-एक धागे को सीधा कर कर के कर कर के बच्चों को दे रहा है कि बच्चे इसका मतलब ये है। अभी अपने को सीधा जाना है सतयुग में, तो रास्ता भी सीधा दिखाएंगे।*** अब देखो जाना तो वही है अब आपको कहेंगे इस गली से मुड़के उस गली में जाना फिर उधर जाना, फिर उधर जाना। ये तो क्या हुआ, ये तो मुँझा दिया ना तो अभी बाबा सूत को सुलझाने आया है। ***अभी बाबा आया है सीधा सीधा रास्ता बताने। बहुत सारी चीजें हैं वापस रिपीट करोगे तो बुद्धि खराब होंगी क्योंकि वो एक कचरा है जो लेके बैठे हैं उसको निकाल दो।*** सत्यता सब बच्चे जानते हैं, जानते हैं ना? हर एक बच्चा जानता है, बाबा आया है। डायरेक्ट छलांग लगाना है सीधा सतयुग में। और बीती को फुल स्टॉप लगानी है, बिंदु और फिर बन जाना है "बिंदु"। "बिंदु" जाएंगी उड़के परमधाम में वहाँ से आएंगी फिर सतयुग में। ओके समझ में आया? ***देखो बच्चे इस सृष्टि के मनुष्य जो भी मन में आया जो भी पढ़ा मिक्स करके खिला देते हैं। उनको भी नहीं बताएंगे...कहेंगे भई ये चावल ना जापान से आए थे। खाने वाला क्या सोचेगा जापानी चावल खा रहें है। या रशिया से आई थी दाल उसने वहीं खिलाया, बच्चों ने वही खाया और बुद्धि में वही बिठाया।*** लेकिन चावल दाल कहाँ से आई है बच्चों को क्या पता जो बताया गया वही सत सत सत.... सतवचन महाराज करते गए ठीक है। सतवचन महाराज!!! भोले बच्चे हैं ना क्या करेंगे, सत वचन ही करेंगे ! तो अब बाबा आया है देखो बच्चे कहते हैं ना अगर प्यार सच्चा होगा ना अंतिम घड़ी में बाप दौड़ के अपने बच्चे का हाथ पकड़ लेगा और आप बच्चों का प्यार किससे था। बाबा से था, सच्चा प्यार था तो बाबा ने वेस्ट नहीं जाने दिया ना, ***अंतिम घड़ी में सभी बच्चों का हाथ कसके पकड़ लिया। तो क्या हुआ अंत भला सब भला।आप की अंतिम घड़ियाँ सुधर गई तो पूरा सतयुग सुधर गया...त्रेता सुधर गया... द्वापर सुधर गया....सब कुछ सुधर गया और पावरफुल बन गए।*** कहते ना ठोकर खाकर गिरे रहे, पड़े रहे उठाने वाला कौन? बाबा ने क्या कहा विदेशियों ने कंगाल बना दिया भारतवासियों को। कितने धनवान थे कहाँ गया सब धन ? ***कहेंगे बाबा लूट**

लिया...शूटिंग हो गई। विदेशियों ने भारतवासियों को लूट लिया। भले भारतवासियों को लूटा पर क्या हुआ... बाप का प्यार तो दिल से नहीं निकाल पाए, तो धन तो बाबा ने छुपा के रखा है फिर भी मिल जाएगा।* बच्चे तो अपने है ना... बच्चे तो बच गए जो नहीं बचे हैं, वो आ रहे हैं। ***धीरे-धीरे आएंगे, सब आ रहे हैं जहाँ जहाँ फँसे हैं ना धीरे-धीरे निकल के बारी बारी बारी बारी सब आ रहे हैं। यहाँ से बहुत बड़ा आवाज जाकरके बुद्धि में टकराएंगा।*** अच्छा एक बात बताते हैं। पानी होता है ना पानी, जब पानी अपने ऊपर आता है तो धीरे-धीरे हम पूरा प्रबंध करते हैं कि ये टूटे ना, बांध ना टूटे, नहीं टूटे... लेकिन जब वो और ऊपर आएगा तो क्या होगा? टूटेंगाना। प्रबंध कर रहे हैं पूरा अच्छे से पैक कर रहे हैं, टूटे नहीं, लेकिन इतना सा होल काफी है, टूटने के लिए ठीक है। कब तक? ***वो टूट करके ऐसी बाढ़ आएगी। देखो संभालने के लिए बच्चों को तो तैयार करना पड़ेगा ना ! आप कहेंगे बाबा अब इसको कैसे कहाँ बिठायें... कहाँ बिठायें... कहाँ उठाये तो आप बच्चे तैयार नहीं होंगे तो इतना सा होल कहाँ से करेंगे !!तो जैसे पानी को कोई नहीं रोक सकता तो आज की पब्लिक को भी नहीं रोक सकता। रोक सकता हैं..??? जहाँ पानी और पब्लिक वहाँ बाढ़ ही बाढ़ ठीक है।*** ढेर बच्चे आएंगे क्योंकि समय समाप्ति की तरफ है। संदेश हर किसी को जाएंगा। ***बाबा ने क्या कहा मुरली सुनने वाला जब सतयुग में आ सकता है... तो ओम करने वाला त्रेता में। समझदार बच्चे बन गए।*** वो एक सेकंड का काम है, आप उसकी फिक्र नहीं करो। उनकी छलांग तो एक सेकंड में आएंगी पर बच्चे तैयार है ना !!

13.02.2021

(19) "आदि सो अंत"

बाबा हमेशा कहते थे "आदि सो अंत"। देखो जब पहले बाबा कहते थे बच्चे जो आदि में होंगा, वो अंत में भी होंगा तो अपन सोचते थे, बाबा ये शरीर बूढ़ा हो गया है और आप कहते हो चौरासीवा जन्म है, तो अंत में कैसे आएंगे। क्योंकि ***जब साकार में थे तो बाबा ने सारा पार्ट क्लियर नहीं किया। वो कौन है... खजांची है ना ! सारी चाबी तो नहीं देगा।*** हाँ बस खजाना निकाल निकाल के देते रहेंगा। अभी इसको पकड़ो पहलेइसको खत्म करो, फिर वापिस दूसरा दूँगा, अपना बाबा ऐसा है। ऐसे ही बच्चों को भी क्या करता है बाबा? आप कभी सोचना बैठके... जब अपन को पूरा ज्ञान नहीं दिया, जब अपन को पूरी चाबी नहीं दिया, उस टाइम, तो बच्चों को क्या देगा !! सोचो... अगर बच्चों को सारे खजाने की चाबी मिल गई होती तो सब क्या होते मालिक बन जाते ना!देखो यहाँ पार्ट रिपीट हुआ तो 5000 साल में वही ड्रामा चला, कैसे...? जब बाबा को पता पड़ा कि अभी भारत में चोर आने वाले हैं तो सारे सोने की द्वारका को नीचे डाल दिया, और जो बचाकुचा था थोड़ा थोड़ा ऊपर आ गया क्योंकि द्वापरयुग से फिर चोर आ जाते हैं, आते हैं, सब लूटके ले जाते हैं तो। तो भारतवासी कंगाल हो गया। लेकिन सही रास्ता आप बच्चों को पता है ना? कंगाल कौन-कौन है, कंगाल है इधर? नहीं धनवान हो...। क्योंकि आपको पता है कि आपका घर सेफ है आपके सोने की द्वारिका सेफ है, नीचे है अच्छे से। तो मालामाल होना

क्योंकि खजाने की चाबी देने वाला बाप मिल गया है। यही... यही ड्रामा जो है कैसे चला फिर जैसे अभी क्या हुआ ब्राह्मणों की रात ब्राह्मणों का दिन। दिन पूरा हुआ... तो रात में आए चोर, चोरी करके लेके चले गए। फिर क्या हुआ ? ***सबकी अपनी -अपनी पार्टी बन गई खजाना तो वही था। था ना वही?? जहाँ जहाँ जाते हैं मुरली कौनसी सुनाते हैं? वही तो मुरली सुनाते हैं ना !! पढ़-पढ़ के वही खजाना यूज कर रहे हैं क्योंकि उनको यूज़ करना नहीं आता है तो उल्टा पकड़ लिया। कभी उल्टा सुना रहे हैं, कभी टेढ़ा सुना रहे हैं। तो फिर बच्चे फँसते हैं क्यूँकि है तो बापका ही....। माल तो बाप का ही है। तो बच्चे प्यार में फँस गए। वाणी तो बाप की ही है*** तो अभी अगर मानो तलवार है, चलाते रहो चलाते रहो लेकिन उसमें धार नहीं है तो बड़ी मेहनत लगेंगी। लगेगी ना !! अब कहते हैं बाबा ज्ञान में तो हम बहुत पुराने हैं पर मेहनत बहुत लग रही है, पुरुषार्थ तो हो नहीं रहा, पीछे क्यों जा रहे हैं? इतनी ***मेहनत करके आगे बढ़ रहे हैं पर फिर भी पीछे जा रहे हैं कारण क्या? क्योंकि मुरली उल्टी पकड़ी हुई है। अब बाबा आया है... क्या करने के लिए सीधा । तो सभी ने सीधी मुरली पकड़ी?? जितनी जिन्होंने भी उल्टी पकड़ी थी ना वो सीधी पकड़ने के लिए बाप के पास आ रहे हैं।*** हर एक बच्चा प्यार में फँस गया। देखो इसीलिए बाबा ने सारा खाजाना आदि में नहीं लुटाया क्योंकि बाबा को मालूम था, चोर आएंगे, चोरी करके ले जाएंगे। अगर बच्चे चतुर है तो बाबा चतुर सुजान है। और अभी अपने आप खजाना निकाल निकालके देंगा। अभी ऐसे नहीं रखेंगा पोटली ये लो जो भी आओ लेके जाओ। बच्चे कहेंगे हाँ ये बात ठीक है, सब आएंगे... बाबा के पास बैठेंगे.... अच्छा बाबा ने ये कहा... फिर वापिस बाबा आएंगा तो फिर बाबा और भी कुछ बोलके चला जाएंगा। कहाँ तक पकड़ेंगे, बाबा किसके पकड़ में आने वाला नहीं है। क्योंकि बाबा पारा है और पारा फिसल जाता है। तो प्यार से बाप को याद करना है। ***भले बच्चे जो केहते हैं ना कि हमें ये खजाना नहीं चाहिए तो बाबा कहेगा कोई बात नहीं... आप साइड में रहो*** अपने और बच्चे आने वाले भीड़ कम करो, कम करो... कम करो। क्योंकि बाबा के कितने बच्चे इंतजार कर रहे हैं। ***बाप का प्यार चाहिए, खजाना चाहिए तो वेलकम नहीं चाहिए तो भीड़ कम !*** क्योंकि बाबा आया है अभी सभी को क्या बनाने के लिए....? इसीलिए बाबा कभी भी.... देखो जैसे छोटा बच्चा होता है ना अब छोटा बच्चा इतना है, उसका बाप बड़ा है। अब छोटा बच्चा कहेगा मुझे ये दे दो तो बाप कहेगा, ठीक है ले लो। अब बच्चे को जो मिल गया, क्या वही बाप के पास था? बापने आपको इतना सा दिया है। वो किस किस चीज का मालिक है, कौन जानता है !! और बच्चे को अभिमान हुआ , वाह मेरे बाप ने मुझे सब कुछ दे दिया, मैं मालामाल हो गया...मैं धनवान हो गया... अब मैं देख लूँगा अपने बाप को भी अब सारा माल तो मेरे पास आ गया। चलो बाबा अभी आप बाहर जाओ तो बाबा कहेंगा, ठीक है, बाहर तो जा रहे हैं पर पूरे खजाने की चाबी लेके जा रहे हैं। और वो चाबी ऐसी है जहाँ बाप जाएंगा ना खजाना पीछे पीछे पीछे पीछे आएंगा। आप थोड़ा सा रखो एक चम्मच में, खाते रहना। बाप के पास तो भंडार है। तो ये बच्चे हैं, जो थोड़ा सा मिला और क्या कहते हैं...?? ***(चूहे को हल्दी की गाँठ मिली तो पंसारी बन बैठा) अच्छा! तो पंसारी तो छोड़ो यहाँ तो कहते हैं अब मैं शिव हूँ । (हाँ बाबा दूसरी पार्टियों में तो बच्चों***

से लिखाते भी है) क्या लिखते है? (कि मैं प्रजापिता हूँ और मैं तुम्हारा बाप हूँ... ये लिखाते भी हैं।)* अच्छा तो बोलो बाप एक है और प्रजापिता ! पहले वो बड़ा भाई है, और बाप कौन है..? (शिव बाबा) एक बाप है, ठीक है। हम सभी आत्माओं का पिता एक है हम सब एक हैं और एक के ही हैं बस यह बुद्धि में फिट कर लो। ज्ञान चाहे कितना भी आ जावे बच्चा चाहे कितना भी बाप समान क्यों ना बन जावे पर वो बच्चा ही रहेंगा। वो शिवबाबा कभी नहीं बन सकता। ***कोई भी बच्चा चाहे कहाँ भी बैठा है ये संकल्प करे ही नहीं कि मैं बाप का भी बाप बन सकता हूँ। तो इसलिए क्या करना है, मैं कौन हूं? मैं एक छोटा सा... प्यारा सा बच्चा हूँ। और जैसे छोटे बच्चे कैसे होते हैं एकदम भोले।*** है ना? भक्ति मार्ग में भी, दुनिया में भी छोटे बच्चों को कहते हैं, ये भगवान का रूप है। कहते हैं ना क्यों कहते हैं? क्योंकि उसको मालूम ही नहीं है कि चोरी क्या होती है, चलाकी क्या होती है, क्रोध क्या होता है, ईर्ष्या क्या होती है। जैसे जैसे बड़ा होता जाएगा उसके अंदर वो सारी चीजें आती रहेंगी। तो आप क्या बन जाओ ? छोटे-छोटे बच्चे बन जाओ... प्यारे प्यारे बच्चे बन जाओ जो कि सब में बाप नजर आवे। कहते है ना बाप बच्चों से प्रत्यक्ष होंगा... ठीक है। बाबा होंगा बच्चों से प्रत्यक्ष कि जब देखेंगे ये कौनसी सभा जा रही है.... ये कौनसे फरिश्तों की सभा जा रही है... ये फरिश्ते कहाँ से आए हैं? और ***बाप को भी कौनसे बच्चे चाहिए? भोले भोले बच्चे !! भोले बच्चे क्यों क्योंकि भोलानाथ भोलो का ही है।***

08.01.2020

(20) हाईएस्ट प्योरिटी की स्थिति क्या है?*

हाईएस्ट प्योरिटी ! बच्चे आवे वतन में दिखावे..। ***हाईएस्ट प्योरिटी बच्चों की होगी अंतिम समय में। अंतिम समय में !!*** बच्चे सोच रहे हैं बहुत सारे पूछने वाले भी हैं, बाबा से ये पूछना.., बाबा से वो पूछना...। हाईएस्ट प्योरिटी और नाम कितना बड़ा दे दिया हाईएस्ट प्योरिटी !! बना सकते हैं?? बना सकते हैं?? दिन रात एक हो जाएगा तब हाईएस्ट प्योरिटी। लेकिन एक बात बताएं बच्चे आप हाईएस्ट प्योरिटी पर जाएंगे तो इधर के बच्चों को कौन संभालेगा?? भल जाओ हाई हाई क्या होता है? हाई होता है सबसे ऊंचा होता है। अब हाईएस्ट प्योरिटी है तो फिर हाई है मतलब पहले लेवल बताओ लेवल कौन कौन से लेवल है?? पहले लो होता है.. फिर मीडियम होता है.. ***अब हाई चले जाओ आप परमधाम में जोति बिंदु आत्मा मतलब हाईएस्ट प्योरिटी,और इसके लिए आपको दोनों शरीरों का त्याग करना पड़ेगा। सूक्ष्म शरीर का और इस देह का... तो पहुँच जाएंगे हाईएस्ट प्योरिटी के पास हाईएस्ट प्योरिटी बनके।*** ठीक है समझ गए। अब ये भी प्योरिटी क्या है बच्चे? इतना शरीर में रहेंगे ना थोड़ा, थोड़ा, थोड़ा, थोड़ा चलता रहेगा। किसी में मनमुटाव... किसी का संस्कार नहीं मिला... किसी से मनमुटाव हो गया... ये थोड़ा-थोड़ा ठीक है। लेकिन इस थोड़े -थोड़े में भी बाबा की सेवा कितनी स्पीड से हो रही है !! ठीक हैहाई मतलब हाई। हाई मतलब क्या? अब तो ये देखलो कितना ऊपर है फिर देखो...। वह अवस्था आई मतलब आपको इस पुरानी देह का त्याग निश्चित

है। कर्मातीत सूक्ष्म वतन वाली। कर्मातीत अवस्था सूक्ष्म वतन में, मतलब सब कर्मों के बंधन से मुक्त होकर शरीर को त्याग कर बन गए कर्मातीत।और ***हाईएस्ट मतलब एकदम सूक्ष्म शरीर से भी पार अपने बिंदु रूप में समा जाना एकदम प्योर.... वह है हाईएस्ट। तो अब अगर बच्चों को हाईएस्ट पे ले जाए....*** देखो रास्ता तो बता दिया है पर जाने नहीं देंगे, अभी रुको इतना सेवा कौन करेगा ?अब ऊपर परमधाम में तो अपन भी नहीं गए हैं। कर्मातीत का गायन गाया जाता है ना ! बाबा कहते थे कर्मातीत मतलब कर्म से अतीत मतलब कर्मातीत। मुक्त..! कर्म करना यह सब छुट्टी हो गई ***ऊपर मतलब सूक्ष्म वतन एक स्टॉप है। वह स्टॉप है उसके बाद फिर ऊपर हाईएस्ट।***

16.05.2020

(21) *ज्वालामुखी योग क्या?**

सूक्ष्म वतन में बापदादा दोनों को कौन से शरीर में ::- धर्मराज के अंदर देखे,उनकी दृष्टि से देखे। उनकी दृष्टि के सामने हो...और मै एकदम पावरफुल बनता जा रहा हूँ....। मेरे सारे पाप कर्म विनाश हो रहे है । थोड़ा तो तकलीफ होगा क्योंकि धर्मराज की दृष्टि के सामने आना मासी का घर नहीं है । है ना! ***ज्वालामुखी योग भी कहाँ करे? सूक्ष्म वतन में धर्मराज की दृष्टि।ठीक है!!*** कई कहते है परमधाम में ज्वालामुखी होता है तो ये गलत है क्योंकि परमधाम में ज्वालामुखी हो ही नहीं सकता।अब ये बतावे... ***परमधाम में ज्वालामुखी योग कैसे होगा? परमधाम क्या होता है? वहाँ पर कहते है शांतिधाम ,वहाँ ज्वाला कैसे निकलेगी।ज्वालामुखी धाम कब कहा,क्या कहा? शांतिधाम, परमधाम, स्वीट होम, ऐसे कहते है ना!! मुक्तिधाम अब सारे हिसाब -किताब तो होते है सूक्ष्म वतन में ....तो फिर ज्वालामुखी योग कहाँ परमधाम में थोड़े करेगे? और क्या परमधाम में थोड़ी आग जलेगी जो ज्वालामुखी योग होवे।*** बच्चों को कहना कभी कोई पाप कर्म हो जावे तो सूक्ष्म वतन में बैठे।धर्मराज बाप के सामने बैठे..... देखे उनकी दृष्टि से ...पावरफुल ज्वाला निकल रही है और सिर्फ मैं हूँ वहाँ पे और कोई नहीं और मुझे बाबा पूरा पावन बना रहा है।ठीक है बच्चो।योग का उल्टा फुल्टा निकाल दिया ,कभी योग को उल्टा लटका दिया कभी सीधा लटका दिया।सही यथार्थ रीति से जानकर कोई बच्चे याद ही नहीं करते।इसलिए कंफ्यूज हो रहे है ...कब कहाँ ...कब कहाँ ।

19.10.2020

(*22) बाबा ने मुरलियों में कहा है कि परमधाम में तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। परमधाम में तुम मुझे याद करो तो अब आप (ब्रह्माबाबा) बोलते हैं कि धर्मराज के सामने बैठ करके तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तो यह बात समझ में नहीं आ रही की लास्ट वाली स्थिति जो है धर्मराज के सामने सजाए खा करके विक्कर्म विनाश होंगे। तो यह दोनों कैसे अलग अलग हो गया ?*

अच्छा अब क्या कहेंगे... बात तो दोनों ही बाबा ने बोली है। आप सोचो! बच्ची का विचार तो चलेगा। बात किसने बोली... दोनों बाबा ने की बोली है। अब यह भी नहीं सोचते कि दोनों अलग-अलग है।अब अगर यह सोचेंगे तो भी रॉन्ग है क्योंकि धर्मराज की बात तो बाप ने शोभा बच्ची (गुलज़ार दादी) के द्वारा भी बोली है, और परमधाम वाली बात भी बोली है। अब इसका सही अर्थ क्या है -- बच्चे, बाप ने क्या कहा ***अपनको बिंदु रूप में याद करो, किसमें याद करो, बिंदु रूप में !जितना याद करेंगे, इतनी शक्तियाँ आएंगी और विकर्म विनाश होंगे। ठीक है।*** परमधाम में मुझे याद करो। अब यह बताओ यहाँ बैठे हैं, मन बुद्धि से परमधाम में जाकर के बाप को याद करेंगे, करेंगे !! लेकिन करेंगे किसके द्वारा? शरीर के द्वारा। शरीर नहीं है तो कहाँ से कर लेंगे? विकर्म विनाश होंगा... बाप को याद करनेसे विकर्म विनाश होगा। अब बताओ बापने जो पॉइंट बोली है, अपन इसमें कुछ मिक्स हो गया है। बच्ची को कहना वह यह भेजें पूरा क्लियर करके लिखके भेजें। कौनसी मुरली में है वह भेजें। ठीक है अब हर एक बच्चा... सब याद कर रहे हैं। सब कोई अपने अपनी दिशा पे लेके जा रहे हैं। कोई कहता है ऐसे बाप को याद करो तो ऐसे होंगा । ऐसे बाप को याद करो तो ऐसे होंगा। ज्वालामुखी योग कहते हैं। ज्वालामुखी योग से बाप को याद करने से भी विकर्म विनाश होंगे। अब कई बच्चे कहते हैं कि परमधाम में ज्वालामुखी योग होता है। कई बार अपनी बुद्धि की पॉइंट डालकर नाम बाप का लिखते हैं। कितने ऐड करते हैं कितने उसमें वो करते हैं। कितनी तांक झाँक करके उसमें जो भी करते हैं, भल करें लेकिन बताओ अब अपन यह कहना चाहते हैं कि ***परमधाम में ज्वालामुखी योग कहाँ से जलेगा। वहाँ कहाँ ज्वालामुखी है, उसको क्या कहते हैं? (शांतिधाम) ज्वालामुखी धाम कहा आज तक !! किसी शास्त्र में वेद में बता दो। किसी मुरली में बताओ कि ज्वालामुखी एक घर है। ज्वालामुखी स्थान पर याद करने से विकर्म विनाश होंगे।*** निर्वाणधाम..., परमधाम..., शांतिधाम यह कहा है ना !! ज्वालामुखी धाम कब कहा है। बच्चों के याद करने के तरीके भी अलग अलग हो चुके हैं। भल याद करें पर याद तो बाप को ही करते हैं पर विधि क्या है? सही विधि आज बाप बता रहे हैं और एक ही बार बता रहे हैं। प्यारे बाबा... मीठे बाबा.... सच्चे बाबा... सच्चे धाम में रहते हैं। शांति धाम में रहते हैं। उसको अगर वहाँ याद करेंगे तो हम आत्माओं के अंदर प्रेम, सुख , शांति , पवित्रता... सब कुछ सारी शक्तियाँ आएंगी और सबसे पहले फर्स्ट पे है "शांति"। क्योंकि वो है ही शांतिधाम। ****अब आ जाओ इधर! इधर कहाँ सूक्ष्मवतन में धर्मराजपुरी में, ज्वालामुखी पुरी में। ज्वालामुखी रूप से याद करना कैसे ? जब बाप संपूर्ण ब्रह्मा में आते हैं। सूक्ष्म वतन में जब उनकी दृष्टि से ज्वाला निकलती है और आत्मा लाइट के शरीर में उसके सामने बैठती है और महसूस करती है वो पावर वो शक्ति मुझमें आ रही है, और मुझ आत्मा के जन्म जन्मांतर के पापकर्म भस्म हो रहें हैं।वह है ज्वालामुखी योग।*** और वह परमधाम में नहीं होता है, वो सूक्ष्म वतन में होता है। समझ में आया। उसका पार्ट दो जगह वर्तमान समय में चलता है। शंकरपुरी में, और ब्रह्मापुरी में। दोनों जगह ही..... इसीलिए महाकाल और धर्मराज ! समझ गए। धर्मराज होता है पूरे ब्राह्मण परिवार के लिए और ज्वालामुखी योग।

अब शंकरपुरी का तो नाम ही नहीं लेंगे क्योंकि बच्चों के मन में क्या आता है? शंकर पार्टी। अरे...! पार्टी का नाम क्यों लेते हो शंकर कौन है? वो कोई जन्म जन्मांतर का दुश्मन थोड़ी है कौन है वो ? बिना जाने शंकर पार्टी, फलानी पार्टी, यह पार्टी, वो पार्टी कहते हैं। किसी का रहस्य जानते नहीं हैं और नाम रख देते हैं, वो पार्टी, यह तो महाबुद्धू है। बिना जाने...!! बिना जाने। तो जो ज्वालामुखी योग हैं वो सही मायने में है, सूक्ष्म वतन में। ***जब धर्मराज संपूर्ण ब्रह्मा, स्थूल ब्रह्मा, शिव परमपिता परमात्मा तीनों एक में होते हैं...और उनके सामने बैठते हैं और जब उनकी दृष्टि से ज्वाला निकलती हैं, वह ज्वालामुखी योग होता है, जिससे आत्मा के जन्म जन्मांतर के पापकर्म विनाश होते हैं। समझ गए।***

02.08.20

(23) ॐ के मार्क्स 50 परसेंट है। 50%

बच्चे, ओ.....म। आज (ओम बाबा की बड़ी मजा आई हमको) ***जैसे जैसे आप बच्चे करते जायेंगे , अभ्यास होता जाएगा। आपके अंदर से ही कई ध्वनियाँ निकलेंगी। ऐसा लगेगा कि अपन के अंदर ही कई लोग बैठे हैं, और जो गुंजार कर रहे हैं- ओ..... म (ॐ) ये स्थिति है पावरफुल स्थिति पावरफुल स्थिति है। ॐ के मार्क्स 50 परसेंट है। 50% !!*** और ये रहस्य अंतिम समय में....। देखो बच्चों भक्ति मार्ग में भी जो कोई साधू, सन्यासी बाहर जाता जंगल में जाता था, पेड़ के नींचे क्या बोलता था। "ॐ"....। उसके अंदर इतनी शक्ति, इतनी शक्ति। वो उस समय चाहे किसी को श्राप देवे, या किसी को वरदान देवे तो तथास्तु हो जाता था। कौन सी शक्ति थी वो। बस... "ओ"(परमात्मा)....."मैं"(आत्मा)..... और जंगल प्रकृति के बीच में बैठकर क्या कह रहे **हैं। *"ओम"। और ऐसा.... ऐसा वातावरण आप लाइट हाउस बन जाएंगे। ऐसा लाइट हाउस कि आपके आसपास तक तो दूर-दूर तक जो भी कुछ भी गलत चीजें हैं, सब की मुक्ति। मुक्ति दाता का अर्थ ॐ का गुंजारा ही सर्व को मुक्ति...। आपके आसपास, आपके शहर, आपके देश, ये पूरे विश्व में । ऐसा आप करो, और मन लगाकर करो ।*** कई बच्चे तो ऐसे कहते हैं - बाबा ने तो कहा है ना, बाबा की श्रीमत का पालन कर देते हैं। ॐ कर लेते हैं, बाबा ने कहा है तो। ना !! ऐसा नहीं। नहीं... मन से करो, और खुद सुनो फिर। ***जैसे..... आत्मा के 7 गुण..... हर एक गुण बोलेगा..... "ओम" फिर सात आवाज आएगी। क्या? "ॐ" और आपको लगेगा वाह हम कितने सारे बैठकर ओम कर रहे हैं। अकेले में बैठ कर के भी क्या लगेगा, अरे इतने सारे बैठ करके ओम कर रहे हैं। कोई छोटी ताकत नहीं है।****

12.12.2020

(24) बाबा ये ॐ कैसे करना है लम्बा या छोटा बोलना है?

ना लंबा हो ना छोटा हो, बीच का हो ना लंबा हो ना छोटा हो "ॐ"* ऐसे नहीं करना है ठीक है। थोड़ा बड़ा हो ताकि जैसे हम ***"ओssssम" बोलतें हैं तो परमधाम से बाबा**

नीचे आते हैं, हमारा ये बुद्धि का दरवाजा खुलता है और इधर में ज्ञान की वर्षा, प्यार की वर्षा, शांति की वर्षा होती है। ठीक है ना, और हर एक ॐ मैं जब आप मुख से ॐ करते हो, ॐ कहां से किया (मुख से) और मन से क्या लिया संकल्प हर एक ॐ में कहना जैसे ॐ किया.... ॐ के बीच में ये रहे मैं आत्मा गई..... परमधाम.....अपने बाबा से मिलके आई अपने बाबा को साथ लेके आ गई। फिर दूसरे ॐ में.... वाह !! मेरे बाबा ने मेरा बुद्धि रुपी दरवाजा खोल दिया है और मैं आत्मा सारी शक्तियों से भर गई हूँ एकदम पावरफुल बन गई हूँ.... फिर ॐ वाह ! मुझ आत्मा से जन्म जन्मांतर की मैल खत्म हो गई है। मैं आत्मा ज्ञान की वर्षा में, प्रेम की वर्षा में, शांति की वर्षा में, नहा रही हूँ और नहा धोके एकदम साफ सुथरी बन गई हूँ ।* एक हीरा जिसमें अलाये निकलती है, मिलावट निकलती है तो हल्का हो जाता है। ऐसे मैं आत्मा.... फिर ॐ करो.... ॐ करके..... फिर मैं आत्मा पूरी तरह से पावरसे भर गई हूँ । वाह ! मेरा बाबा वाह !! ठीक है बच्चों।

04.06.2020

(25)*स्टार्ट में यही हुआ था, ब्रह्माबाबा के मुख से शिव बाबा ॐ ध्वनि करवाते थे सभी बच्चों को... और साक्षात्कार में चले जाते थे...*

अगर किसी ने अभी "ॐ" नहीं किया तो फिर उसके मार्क्स भी बहुत कटने वाले हैं। क्योंकि यह पार्ट अपना ! भई जहाँ अपना बाबा और अपन "ॐ" तो जरूर है !! बना ही सब उससे है। नंबर कटेंगे कटेंगे ही। पहले बता रहे हैं। जिसने बैठकर नहीं किया तो उसके नंबर कटेंगे ही। है ना! फिर जो बच्चों को कहेंगे ये लो लिखो.....अरे ये "ॐ" का भी आ गया इसमें सवाल। बाबा यह तो पढ़ाया नहीं है हमें कभी। नया सिलेबस आ गया। ***अरे बाबा आप ने पढ़ाया नहीं अरे!! तो पहले इतना तो सिखाया था ना कि बैठ कर के जब बाबा आए तब क्या कराते थे- "ॐ"* *ब्रह्म से शिव बाबा पधारे बोलते ध्वनि ॐ*** क्या बोलते हैं ? "ॐ" तो "ॐ" की इस ध्वनि से हुआ परिवर्तन पूरे विश्व का परिवर्तन हुआ। सभी सुनते हैं तो इतना बुद्धि लगाना चाहिए। तो वही जो भेड़ चाल है वह समझेंगे नहीं। बस चलेंगे --- ***लेकिन जो समझदार है वह अपना रास्ता खुद बना लेंगे ।*** है ना !! इतना सुनते हैं... कोर्स में सुनते हैं। सात रोज की भट्टी में सुनते हैं। कितने अच्छे-अच्छे रिकॉर्ड सुनते हैं। सब कुछ तो आता है। फिर भी कहते हैं हमें बताया नहीं तो कहेंगे मूर्ख हो फिर, पता ही नहीं था ---तो फिर क्या सुना आज तक। कहते हैं हम इतना समय से ज्ञान में है, हमें सिखाया नहीं। तो अब तो सिखा रहे हैं !! अगर अब नहीं मानेंगे तो सीधा पेपर में कितने आधे नंबर कटेंगे। जिसने यह नहीं किया भले पूरा पेपर लिख दिया। ****यह एक ही.... एक ही जो सवाल है यह पूरे 50 नंबर का** है।* नही बाबा के पास 100 का है ना !!आपके उस एग्जाम में 10 –10 का होता है --5-5 का बाप के पास सीधा.... यह सबसे बड़ा है जिसने इसको किया वह फुल पास है। ठीक है !!अब यह परिवर्तन तो होगा और जो बच्चा जो भी अभी आएंगे इधर मिलन मनाने तो सबसे पहले दो चार बच्चे सामने बैठे

और सभा में ही बैठकर के पहले "ॐ" करावे। और जो यह सोचता है यह क्या हो रहा है ? यह तो हमने कभी सीखा नहीं। ये तो कभी हम सेंटर पर जाते थे सिखाया नहीं, और ये तो बाबा हो नहीं सकता। भल ना आवे चलेगा !! (स्टार्ट में यही हुआ था, ब्रह्माबाबा के मुख से शिव बाबा ॐ ध्वनि करवाते थे सभी बच्चों को... और साक्षात्कार में चले जाते थे...) तो यही तो हुआ था अगर सोचते हम नहीं करेंगे तो भल आपकी मर्जी है। बाबा पहले से ही बता रहे हैं। यह होगा ही होगा। आएंगे सभी बैठ करके "ॐ" करेंगे। मन लगाकर के करेंगे !

बाबा ने ओम का महत्व बताया

I. सबसे पहली बात आपके अंदर की सारी शक्तियां जागृत हो जाती है।
II. ओम करने से आपका पूरा घर गूंजने लगता है।
III. और एनर्जी ,पावरफुल एनर्जी आपके घर को बांध देती है और आसपास में भी पावरफुल वाइब्रेशन फैलाते हैं।
IV. ओम की ध्वनि करने से चारों तरफ के बच्चे खींचते हैं खींचे हुए आते हैं, खींचे हुए आते हैं।
V. इतना यह जो घर है ना यह रात को लाइट हाउस बन जाता है। ऐसा लाइट हाउस की दूर-दूर से आत्माएं देखती हैं।
VI. ओम की ध्वनि करने से आपका मन, बुद्धि, तन सारी कर्मेंद्रियाँ शांत हो जाती है।
VII. और डायरेक्ट बाप से शक्ति मिलती है।
VIII. डायरेक्ट शक्ति मिलती है। कोई तो वाया -वाया होकर आती है। लेकिन यह जो है यह डायरेक्ट पावर मिलती है।
IX. "ॐ'सिर्फ इसमें... "ॐ" यह शक्ति इतनी पावरफुल है, कि आप रात को श्मशान में बैठकर के भी ओम करेंगे ना तो शमशान के भी भूत-प्रेत भाग जाएंगे। वह भी सब मुक्त हो करके अपनी यात्रा की तरफ चले जाएंगे।
X. "ॐ" अगर किसी के अंदर कोई भी गलत प्रभाव है, चाहे कितना भी पुराने से पुराना है , तो वह सारे प्रभाव को खत्म कर देगा।
XI. खासकर शारीरिक बीमारियों को भी "ॐ" की ध्वनि करने से बहुत प्रभाव पड़ता है।
XII. अच्छा !!अपना बाप शिव पिता परमात्मा इतनी बड़ी हस्ती आ करके कहती है "ॐ"
XIII. शुरुआत कहां से हुई? "ॐ" से*

फायदे बहुत हैं आज थोड़े बताएं फिर बहुत बता देंगे ।
अच्छा बच्चों !!

08.08.2020*

(26) बाबा हम बच्चे सतगुरु के साथ जाएंगे ना महाकाल के साथ जाएंगे ?

नहीं ! ***बच्चे सतगुरु के साथ जाएंगे।* *जो बाप से प्यार करते हैं, वो ! बाहर वालों के लिए मतलब क्या? और देखो धर्मराज किसके लिए है, ब्राह्मण बच्चों के लिए सब कुछ जानते हुए भी वो कर्म करें जो ड्रामा में नहीं, जो श्रीमत के विरुद्ध है। तो उसके लिए कौन है धर्मराज....।*** और धर्मराज से खतरनाक तो कौन है महाकाल है।* क्या कहेंगे... !! सारी सृष्टि को रचने वाला कौन है? (शिव बाप) अच्छा ये किसकी उंगलियाँ है। (शरीर की पाँच उंगलियाँ है) शरीर की.... इससे तिलक किसने लगाया? आत्मा ने आर्डर कीया... इस बच्चे को क्या लगाओ? (तिलक लगाओ) तो केहना किसका माना ? (आत्मा का) पर यह पाँच उंगलियाँ किसकी है? (शरीर की हैं) ऑर्डर किसने किया? आत्मा ने। जो बाबा ये पुतले बनाया है, जो ये पूरी बनाया है वो सब किसके हैं? बाप के बनाए हुए। और जब बाप उनके द्वारा कर्म कराता है, तो कौन कराता है? ***बाप कराता है, अब विनाश.... बाबा जब कहते हैं बच्चे मैं विनाश नहीं करूँगा... क्योंकि सारा पाप फिर मुझ पे चढ़ जाएंगा... सहीं कहते हैं। बाप अपने बच्चों को थोड़ी मारेगा, क्योंकि वो उस समय बाप है, वो महाकाल नहीं है। पर जब वो महाकाल बनता है, और जिसके द्वारा विनाश होता है, तो उसका तो कोई जन्म मरण में चक्र ही नहीं है। तो पाप कहाँ से चढेंगा !! चढेंगा क्या? नहीं चढेंगा !! क्योंकि वो पाप और पुण्य से भी परे है। लेकिन कराता कौन है? (बाप ही कराता है) इसीलिए भक्ति मार्ग में शिव शंकर का गायन करतें हैं।*** शिव शंकर मतलब शिव....(ज्योतिर्बिंदु). फिर शंकर....जुड़े हुए.... क्योंकि वही दोनों जब शिव और शंकर जब समा जाते हैं तो..... कहते हैं ना भक्ति मार्ग में जब शंकर की तीसरी आँख खुलती है तो क्या होता है? तांडव होता है विनाश होता है। जब दोनों जुड़ते हैं, इसलिए भक्ति मार्ग में शिव शंकर कहते हैं।***बाप आपके साथ होंगे !! महाकाल जब आएंगा तो बाप अपने बच्चों को लेकर के.... भक्ति मार्ग में सुना है ना !रियल में सुना है बिल्ली के पूंगरे देखो कितने समय तक पढ़े रहे अग्नि में (12 साल बताते हैं) आप सोचो उनको खाना पानी दाना किसने दिया? वहाँ तो आग जल रही थी फिर भी खाना पानी दाना मिल रहा है। और फिर वो खेलते हुए निकल रहे हैं... ये बिल्ली के पुंगरे हैं।***

07.02.2021

(27) मुरलियों में आता है आज की मुरली में भी आया है ओम का अर्थ मैं आत्मा हूँ और यह मेरा शरीर है जबकि आपने बताया है.. 'ओ' मना "परमात्मा" और 'म' याने "आत्मा" किसको माने फिर?

दोनों को मानो। आज की पढ़ाई में एक शब्द के कितने मतलब होते हैं, जानते हैं ना तो ये कौनसी बड़ी बात है। हाँ भई ये पेहले मतलब बताया अब इसका सीधा मतलब बता दिया उसमें "ओम शांति" का अर्थ क्या है, मैं आत्मा शांत स्वरूप हूँ...मैं आत्मा परमधाम की रहने वाली हूँ। मुझ आत्मा का पिता परमपिता परमात्मा शांति का सागर है... आगया ***इसको थोड़ा विस्तार किया। "ॐ" को "वो" और "मैं" कर दिया। बताओ है तो***

वही !! वही है ना इसमें कौन सी बड़ी बात हुई है। ओम ही, वो और मैं होता है और शांति मतलब क्या होता है?* बाबा ने - मैं आत्मा परमधाम की रहने वाली हूँ ... शांत स्वरूप हूँ । शांति मेरा स्वधर्म है। ये ओम शांति का अर्थ है ठीक है लेकिन ओम का अर्थ क्या है? अगर आप शांति को निकाल दो तो ओम का क्या अर्थ बच गया, "वो - मैं" ठीक है और बीच का साइलेंट है "प्रकृति", क्योंकि "ॐ" के अंदर ही "प्रकृति" है। समझ में आया? यहाँ आकर के तो ॐ में बोलते हैं। *परमधाम में बैठ करके थोड़ी "ॐ" बोलेंगे !! तो प्रकृति साइलेंट क्यों हुई क्योंकि यहाँ बैठकर शरीर रूपी प्रकृति को लेकर ही बोलते हैं "ॐ" बोलते हैं जब आत्मा शरीर से निकल जाएंगी परमधाम में चले जाएंगे क्या तब बोलेंगे "ॐ"?? नहीं बोलेंगे ना। "ॐ" बोलने के लिए भी तो क्या चाहिए? प्रकृति का आधार लेकर ही आप "ॐ" बोलते हैं* । इसलिए *"ॐ" में तीन चीजें हैं - "आत्मा"- "परमात्मा" - "प्रकृति" ठीक है।* समझ में आया और शांति लगाया तो क्या हुआ कुछ बदला? मैं आत्मा शांत स्वरूप हूँ । मैं आत्मा शांतिधाम की रहने वाली हूँ । शांति का सागर मेरा पिता है। समझ में आया। अब आप शांति को निकालो तो क्या हुआ "ॐ" का अर्थ क्या हुआ? ***वो और मैं तो ये तो और जैसे ज्ञान को विस्तार कर दिया। बाप ने आकर सार कर दिया।*** ऐसे ही ओम शांति का शांति को निकाल कर के क्या कर दिया? "ॐ" कर दिया सब उसी में ही आ गया, समझ में आया

07.02.2021

***(28) जिस समय अंतिम समय अापने देह को त्यागा था, उसी समय स्पष्ट हो गया था सारा*?**

बिल्कुल नहीं होता है। शरीर जब तक होता है हाँ ऐसे कहते हैं ना ***संपूर्ण बनना माना, कमी कमजोरियाँ सब समाप्त, संपूर्ण बनना माना प्रकृति के पांचों तत्व का शरीर स्वाहा, संपूर्ण बनना माना अपने बाप की छत्रछाया में आ गए... संपूर्णता इसको कहते हैं। पूरे संपूर्ण शरीर का त्याग कर दिया। पर ज्ञान की प्राप्ति जैसे ही वतन में बैठे, तब तो मालूम पड़ा!!*** अपना बाबा क्या बोलता है...बच्चे ये भी पोटली है.... बाबा ये भी पोटली है !!! अच्छा ये भी पोटली है... बाबा अगर ***आप शरीर छूटने से पहले बता देते तो बाँट देता। तो बोलता है इसलिए तो नहीं बताया कि सारी बाँट दोगे।* इसलिए तो नहीं बताया ये खजाना रखा है।आपको मालूम पड़ जाएंगा मेरे पास खजाना है तो सब दान कर दोगे, तो क्या किया... *अपन ने पूछा, बाबा फिर अब इसको बाटेंगे कैसे? क्या सोचा इस पोटली को कैसे बाटेंगे? बाबा ने कहा उसके लिए थोड़ा इंतजार करो। बाँटने का साधन तैयार हो रहा है।*** अच्छा...!!! देखा सृष्टी पे कहाँ किस कोने में हो रहा है, चेक करते रहे करते रहे। इतना बाबा अपना प्रोग्राम कुछ कुछ कुछ कुछ चिपकाता रहा कहीं कहीं पे। जहाँ जहाँ से आवाज आ रही है... बाबा इधर आ रहे हैं... इधर आ रहे हैं। अपनी दाल चावल बनाता रहा। इसीलिए बनाया ना कि जब भंडारा एक जगह होगा तो सब की दाल चावल आ जाएंगी, पूरी आ जाएंगी। तो भई इकट्ठा करके ही तो सब को खिलाया जाएंगा ना। अब बेचारा दाल वहाँ लेने जाएंगा... चावल उस

कोने में लेने जाएंगा... पूरी उस कोने में लेने जाएंगा तो कैसा लगेंगा घूँमता ही रहेंगा है ना !! तो दाल चावल वालों को भी बोल रहे हैं, अभी सही समय आ गया है आ जाओ! फिर बाद में क्या होंगा? अब यहाँ एकदम नेचुरल खाओ, अच्छे से पियो... ज्ञान कभी खत्म ही नहीं होगा और कुछ पूछना है।

(07.02.2021)
(29) विज्ञान कहता है हमारी पृथ्वी सोलर सिस्टम का हिस्सा है और ऐसे अनेक सोलर सिस्टम गैलेक्सी है, याने आकाशगंगाएं हैं याने अनेक सूर्य और पृथ्वी हो गये तो क्या यह सचमुच सही बात है या पूरे ब्रह्मांड में एक ही सूर्य और एक ही पृथ्वी है जिस पर जीवन चलता है, कभी से इसकी सच्चाई जानने को उत्सुक थे...

देखो बच्चे विज्ञान क्या कहता है? और ज्ञान क्या कहता है बात कौनसी है, ***विज्ञान कब तक है जब तक की सृष्टि है, जब तक वैज्ञानिक है तब तक विज्ञान है*** लेकिन ज्ञान क्या होता है। वि-ज्ञान जो इस पृथ्वी का जिसको ज्ञान है वो विज्ञानी। जिसको इस सृष्टि का जिसको इस विश्व का ज्ञान है, वो विज्ञानी पर ज्ञान.... ज्ञान क्या होता है *जो तीनों लोकों का जो इस संसार से भी ऊपर...जो आदी मध्य, अंत का ज्ञाता है, उसको ज्ञान कहा जाता है।* **जिसके सामने "वि" नहीं लगता अर्थात "विश्व" नहीं लगता, दुनिया नहीं लगती ठीक है उसको कहते हैं ज्ञान। ज्ञान - जिसका आदि, मध्य, अंत ही ना हो। अब ये बताइए विज्ञान और ज्ञान में क्या फर्क है? हाँ सूर्य का निकलना देरी से होता है पर इस पृथ्वी पर सूर्य एक ही है। अगर आपके भारत में अभी दिन है तो कहीं जगह अभी रात है। एग्जांपल - एक बीच में डंडा खड़ा करो और उस पर एक बत्ती लगा दो बत्ती लग गई। बत्ती का मुख सामने है *जहाँ बत्ती तक रोशनी जाएंगी वहाँ सवेरा हो गया , लेकिन बत्ती के पीछे अंधेरा है***, और जब बत्ती घूमती रहती है, घूमती रहती है, घूमती रहती है, जहाँ जहाँ घूमेंगी वहाँ वहाँ दिन होगा ! लेकिन बत्ती के पीछे रात। लेकिन बत्ती तो एक ही है !! ऐसा नहीं होती है कि भारत में अलग सूर्य उदय हुआ है और विदेश में कोई दूसरा सूर्य उदय होंगा। बत्ती एक ही है पर वो घूँमती है। और पृथ्वी भी एक ही है। ***जैसे-जैसे घूमेंगी जहाँ रोशनी जाएंगी, वहाँ दिन और पीछे साइड रात रहेंगी ।***

(07.02.2021)
(30) बाबा कहते हैं कि बहुत सारे सूर्य है, चंद्र है जोकि तुरंत तुरंत घूमते रहते हैं !

बच्चे वो सूर्य चंद्र नहीं होते हैं। वो ग्रह नक्षत्र होते हैं। अच्छा बताओ इतने सारे सूर्य हो तो यह पृथ्वी बचेंगी !! (गरम हो जाएगी हीट से.... विस्फोट हो जाएंगी) हीट क्या जल जाएंगी...!! बोलता है गरम हो जाएंगी...भई गरम तो अभी होती हैं। इतने सारे सूर्य हो तो पृथ्वी होगी ही
नहीं। सृष्टि बचेंगी ही नहीं, वो पूरी तरह से नष्ट। एक बीज तक पैदा नहीं होंगा अगर इतने सारे सूर्य हो।केहते है घुमते रहते है... घूमना क्या काम है उनका? उनका रोशनी देना काम

है। हाँ लेकिन नाम कुछ और रख दिया है क्योंकि बच्चों को सिर्फ वि-ज्ञान है, ज्ञान नहीं है, क्या है, वि-ज्ञान है, पर ज्ञान नहीं है।
ओके!

26.09.2020

(31) कई कई कहते हैं बाबा मिलने के लिए क्यों नहीं बुला रहे है ?

बुला रहे हैं.... ***ड्रामा में हर एक आत्मा का पार्ट उसके अनुसार चलेगा ना। चलेगा ना? तभी तो पार्ट प्ले कर पाएंगी।*** वो क्या कहते हैं दुनिया मैं भी जिनका पार्ट ड्रामा में बीच में आता है, उनको याद करा के भेजते हैं, यह बोलना है। अब आपको भेज दिया और आपको याद नहीं अपना पार्ट कि बजाना कैसे है तो फेल हो जाएंगे। इसलिए नहीं सोचो कि बाबा बुलाओ। ***ड्रामा में सही समय पर, सही स्थान पर बच्चों से सेवा लेना है।*** क्योंकि हर एक आत्मा का पार्ट इस ड्रामा में क्या कहेंगे... जहाँ जिसका भाग्य जितना खुलना है उस समय अपने आप बुला लेंगे। जल्दबाजी नहीं करो.... मेरेको भी भेजो.... मेरेको भी भेजो.... मेरे को भी फिल्म में काम लेना है मेरे को भी भेजो। नहीं ***बाप है ना....। सही समय पर सही कर्म करने के लिए आपको उस स्थान पे भेजेगा। फिर देखते हैं... बैठकर के देखेंगे....अच्छा बजाओ, बजाओ पार्ट बजाओ देखते हैं कितना बुद्धिवान है पार्ट बजाने के लिए । कहीं कहीं तो बाप शिक्षा देते हैं, वो शिक्षा को भूलकर दूसरा कुछ करने लगते हैं। अपनी मनमानी करने लगते हैं।*** तो फिर क्या हो रहा है ड्रामा में? "फिक्स" क्या हो रहा है? फिक्स हो रहा है। ठीक है बच्चों...अच्छा ओम शांति !

22.02.2021

(32) कहती है बाबा किससे बने हैं...?

बाबा किससे बने होंगे!! बाबा अपने आप से बने हैं अपने आप से कोई बनता है? नहीं बनता। आप अपने आप से बने हो, नहीं बने होना... नहीं बने हो ना ***बाबा सारे गुणों से मिलके बना है। बाबा सर्वशक्तियों से मिलके बना है। बाबा सागर है !! जैसे सागर को किसी ने पैदा नहीं किया। ऐसे बाप को किसी ने पैदा नहीं किया।*** अच्छा कोई कहेंगा कि सागर किससे बना है... पानी से। बाप किससे बना है? सारी शक्तियों गुणों से वो बाप बना है। एक पानी से बना है, एक सर्वशक्तियों से बना है पर जो पानी से बना है वो...किसने बनाया है... वो बापने बनाया है। पर उसको बनाने वाला कोई नहीं है, ठीक है। जैसे नदियों का जन्मदाता सागर हो सकता है। है?? तलाब का भी हो सकता है, ठीक है, एक गिलास का भी हो सकता है, एक मटके का भी हो सकता है... है ना? ***लेकिन सागर को किसने जन्म दिया, ये क्या कहेंगे भई ऐसी कौन सी माँ है जिसने सागर को जन्म दिया होंगा ? दिया...??*** पानी के सागर को किसने जन्म दिया? पानी के सागर को ज्ञान सागर ने जन्म दिया तो बाप भी बना है ज्ञान से बाप सारी शक्तियों का एक पुंज है। दिखता

भल छोटा है पर करता बड़ा धमाका है। बाप उनसे बना है। बाप किसी तत्व से नहीं बना किसी भी पदार्थ से नहीं बना। क्योंकि बाप
को बनाने वाला इस सृष्टि में कोई तत्व ही नहीं हुआ।हाँ हर एक तत्व का रचयिता बाप है। ***वो स्वयंभू है।*** इस सृष्टि पे जितने बीज डालोगे वो अंकुरित होंगे.. पर बीज किसने डाला है। मनुष्य ने डाला है, तभी बीज अंकुरित हुआ है, किंतु ***बाप स्वयं में एक ऐसा बीज है जो किसी ने नहीं डाला जो कोई उसको नहीं उगा सकता। इसीलिए वो स्वयंभू! है, जो स्वयं स्वयं ही अंकुरित होता है तो बापका रचयिता कोई नहीं है, वो सदाशिव है। सदा था... शिव आदि हैं... अनंत है सृष्टि के आदि में भी रहेंगा और अंत के बाद भी रहेंगा वो सदा रहेंगा ठीक है।*** वो शिव है परमपिता परमात्मा निराकार। समझ में आ गया...। इस सृष्टि में... ***इस सृष्टि में तो छोड़ो सूक्ष्मवतन में भी वो लाइट नहीं है जो वो लाइट है। उसकी जो अपनी एक चमक है उसकी जो अपनी एक लाइट है, वो किसी की भी नहीं हो सकती। वो किसी तत्व की नहीं। किसी रंग कि नहीं किसी रूप की नहीं किसी लोक की नहीं और किसी आत्मा की भी नहीं है।*** इसीलिए उसको परम आत्मा कहा जाता है। वो लाइट उस एक अकेले की है, किसी भी आत्मा की नहीं । ***समझ में आया। समझ में आया कि शिव किससे बना है?*** बड़ा अच्छा सवाल था।

14.01.2021

(33) बाबा हम इतनी दवाइयाँ खाते तो फिर सोचते हैं कि बाबा जब अंतिम समय आएंगा, जंगल में जाएंगे तो दवाइयाँ तो छोड़नी पड़ेंगी?

तो जंगल में लेके जाएंगे तो दवाई तो देंगे ना आपको !! तो फिर कोई बात नहीं। इतना दवाई है इतना फ्रूट समझ कर खाओ ठीक है। जब आगे की यात्रा बाप के ऊपर छोड़ रहे हो तो बाप सर्जन है, डॉक्टर है, जो भी खिलाये। ***ये जो है ना बीमारियाँ.... बाबा ये... बाबा ये... बाबा ये... सब छूमंतर हो जाएंगा और आपको पता भी नहीं पड़ेगा कि आपको कौन सी बीमारी है क्यूँकि डॉक्टर ही नहीं रहेगा जो बताए की आपको ये बिमारी है...*** सबसे बड़ी बीमारी तो डॉक्टर ही है। एक बार बुद्धि में डाल दिया कि आपके पेट में बड़ी गांठ है... तो वो गांठ अगले दिन इतनी बड़ी हो जाती है। जब बताने वाला ही नहीं रहेंगा कि आपके शरीर में ये बीमारी है तो आपको पता ही नहीं पड़ेगा। पता नहीं पड़ेगा तो आप ठीक हो जाएंगे है ना। क्योंकि बीमारी यहाँ से नहीं होती पहले बीमारी यहाँ से होती है। डॉक्टर ने बताया आपको ये घुटना टूटा हुआ है। तो बैठ गया जो थोड़ा बहुत था ना ठीक-ठाक वो भी टूट गया। अब क्या हुआ जब बताने वाले डॉक्टर ही नहीं रहेगा जंगल में तो क्या होगा ! ***अपने जमाने में बताते क्या... उस समय डॉक्टर थोड़ी था कोई। वेद वेद था कहाँ दूर दूर रहते थे। अच्छा किसी को बड़ा सा बुखार हुआ तो क्या होता है ये आटा होता है ना आटा का जो छानते हैं जो ऊपर निकलता है। उसको घोला , ये लो पी जाओ सुबह तक बुखार खत्म।*** अभी ये ट्राई नहीं करना ठीक है। और वह भी कच्चा ही बुखार खत्म। किसी को कुछ हुआ कोई भी पत्ता तोड़के ऐसे

घीसा लगा दिया। ***नीम का पत्ता खा लिया, लगा दिया..*** . दातून में पहले कैसे.. आज तो ऐसे घिसते रहतें हैं... घिसते रहतें हैं... घिसते रहतें हैं... फैसिलिटी वैली आ गई है दाँत वाली फिर भी साफ नहीं होते। और पहले तो क्या था चलो भई टहलने जाते हैं एक पेड़ से दातून तोड़ा कर लिया। दातून हो गया वाह वाह वाह सारा दिन अच्छा बढ़िया !! मजबूत दांत होते थे। शुरू कर दो करना। ***पहले तो दातुन करते थे और दांत मजबूत रहते थे। अपन के भी लास्ट में ही एक या दो दांत गिरा था बस ज्यादा नहीं गिरा था। वो भी देखो, 90 के पार हो गए थे तब जाकर के।*** (आपके टाइम में तो ब्रश आया नहीं था ना बाबा) अंग्रेजों के पास था। अंग्रेजों के पास तो सब कुछ था ब्रुश भी था, सब कुछ था उनके पास कैसे नहीं होगा बताओ। सबसे ज्यादा इन्वेंशन तो उन्होंने निकाली है। वो थोड़ी दातुन करते थे । अंग्रेज थोड़ी दातुन करते थे तो फिर क्या करते थे, ब्रश ही करते थे ना हाँ स्टाइल थोड़ा अलग लगता। अब तो नए नए स्टाइल का बन गया है, सबकुछ इसीलिए उस जमाने में भी सब बच्चे बैठ करके दातुन करते थे। नहीं तो रेत या राख से करते थे ऐसे ऐसे, क्या चमकते थे !! तो बताओ ? इतना बढ़िया था सब कुछ। किसी को दांत में दर्द ही नहीं होता था। आज कल तो सब बूढ़े हो गए। क्या हो गया? बूढ़े हो गए। और फिर जब अपनी यात्रा पर जाएंगे तो सब एक बार तो वो सामने जरूर घूमेंगा... "आदी" !! कौन घूमेगा? **" *आदी" जरूर घूमेंगा। आदि मतलब अपना आदि का जो समय है। अपने जाते-जाते एक बार वो जरूर आदि सो अंत... आदि सो अंत... !! वंडरफुल परमात्मा का ड्रामा है आदि सो अंत करने के लिए।*** चाहे वो कहीं से कहीं तार भिड़ावे पर आदि सो अंत को पूरा जरूर करेंगा। संगमयुग का इसी संगमयुग में सृष्टि का भी आदि और
अंत समाया है। चारों युगों का आदि और अंत समाया है। यही संगम युग है। इधर शूटिंग हो रही है। ***शूटिंग थोड़े पलकी पूरे 84 जन्म चलती है। अपन सब हर किसी ना किसी जन्म के साथी बैठे हैं। हर कोई किसी ना किसी जनम के साथी, संबंधी, माँ, बाप भाई, पति, पत्नी सब बैठे हैं। कहाँ न कहाँ किसी न किसी जन्म के। ठीक है बच्चों ओके।****

21.01.2021

(34) बाबा जैसे कालचक्र होता है, वैसे महाकाल चक्र भी होता है क्या?

देखो समय से बड़ा कोई चक्र नहीं सबसे बड़ी बात है। कालचक्र, इस सृष्टि में महाकाल चक्र तीनों लोकों का चक्र चलता है। ***महाकाल चक्र का अर्थ क्या है?*** जो चक्र होता है वैसे तो इस संसार में चक्र ही चक्र है। जन्म-मरण का चक्र है, पाप-पुण्य का चक्र है, रात-दिन का चक्र है, सुबह-शाम का चक्र है और एक आत्मा और परमात्मा ये भी चक्र है। ये चक्र ही तो चल रहा है ना अभी ! बाबा आता है, प्यार करता है ये चक्र है ***लेकिन महाकाल का चक्र एक बार चलता है। हर 5000 वर्ष में चलता है।*** देखो बच्चे शास्त्रों में बहुत सारी बातें ऐसी है जो सब उलझा के रख दिया है। इधर का धागा इधर डाल दिया। इधर का इधर डाल दिया। पूरा सूत उलझा हुआ है। ***बाप आता है सूत सुलझाने और**

बच्चे पूरा यही सोचते हैं नहीं मैं एकदम बराबर करूँगा। मुझे आता है सूत सुलझाना अच्छे से।* जो जो बुद्धि में आया लिख दिया, उसको लगा यही सही है, जिसने जो, जिसको जो टचिंग हुआ अपने अनुभवों के आधार से हर किसीने अपना मत उसमें लिख दिया, तो क्या हुआ उलझ गया। अब सभी इस चक्र में उस चक्र में उलझ चुके हैं। लेकिन वर्तमान समय अपन सभी बच्चों को एक ही चक्र देखना है। आत्मा और परमात्मा का ! क्योंकि बच्चों अगर आपको यह चक्र समझाने लगे ना ये सब चीजे, अपन कहते हैं ना बच्चों की बुद्धि को उलझाना नहीं है। ये जितना उलझाके रखा है सबने वो इधर सुलझने के लिए आएंगे। ***दोनों मिक्स कर दिया बाप की मत और शास्त्र मत दोनों मिक्स हो गई तो एक नया चक्र बन गया। दोनों मत मिक्स होकर के एक बुद्धि में एक नया चक्र बना दिया।*** महाकाल का एक ही चक्र होता है बच्चों, एक ही चक्र महाकाल! बोलते हैं ना किसी का काल आया है। और फिर बोलते हैं पूरे संसार का महाकाल आया है। काल क्या होता है? जो शरीर छोड़करके वापिस आ जाये । काल से एक बार बच सकते हैं। महाकाल तो एक ही बार ठप्पा लगाता है। बार-बार चेक भी नहीं करेंगा कि सही है या गलत है। इसमें सही क्या है गलत क्या है... नहीं.... उसके पास कोई चेकिंग नहीं होता। यह काल और महाकाल। अब आप बच्चों ने कई बार सुना होगा कहते हैं ना काल शरीर को खाता है। आत्मा को कभी काल खा नहीं सकता अर्थात आत्मा की कभी मृत्यु नहीं हो सकती। काल का अर्थ है मृत्यु और काल का अर्थ है सबसे बड़ा समय, कि जिसका समय समाप्त हुआ... खत्म !! शरीर का वंडरफुल चक्र है, लेकिन ये चक्र में बारी- बारी, बारी-बारी, एक के बाद एक समझाएंगे ठीक है। जो कहते हैं फलानि दुनिया ये दुनिया वो दुनिया बहुत सारी दुनिया बना दी है तो इसका भी एक अर्थ है। कहते हैं ना इतने लोक बना दिए इतनी दुनिया बना दी लेकिन दुनिया किसको कहते हैं सबसे पहली बात दुनिया इस संसार को इस विश्व को, जहाँ साँस लेने की प्रक्रिया हो, भोजन खाने की प्रक्रिया हो, ये है दुनिया, इस संसार को दुनिया कहते हैं। और एक होती है आत्माओं की दुनिया जिसको परमधाम कहते हैं, और एक होती है सूक्ष्म। सिर्फ तीन लोकों का वर्णन है। आत्मा अर्थात बिंदी, सूक्ष्म अर्थात लाइट का शरीर, स्थूल अर्थात देहधारी। लेकिन हाँ कर्म के अनुसार ये पहले भी बताया था, अगर एक संगठन है जहाँ सुख ही सुख है, उसको भी कई कहते हैं, ये भी एक लोक है। एक सूक्ष्म लाइट के शरीर की आत्माएं इकट्ठी होती है, जहाँ दुख दुख है नेगेटिव एनर्जी वाली है, तो उन्होंने भी क्या कह दिया, ये भी एक लोक हैं। अपनी बुद्धि से हर तरह से, सब जगह से कई कई लोक बना दिए हैं, लेकिन अब देखो ये क्या है? कुर्सी है ना ये एक है या बहुत सारी हैं एक है लेकिन इसमें कितने सारे छेद हैं। गिनो कितने होंगे बहुत सारे होंगे, है ना... यह भी एक दुनिया हो गई... यह भी एक दुनिया हो गई। सब एक-एक दुनिया हो गई तो गिनती करो, कितनी हो गई। लेकिन ये तो एक ही है ना !! ये एक होल नहीं होगा तो चलेगा ये सब प्लेन हो जाएंगा तो भी चलेगा, पर ये (कुर्सी)ही नहीं होंगी तो कैसे चलेगा !! समझ में आ रहा है? कुछ कुछ समझ में आया या थोड़ा कुछ समझ में आया? पूरी सृष्टि का मालिक एक है। संसार एक है। अब उसमें ही इतना इतना सा हमने बनाके रखा है। हर कोई अपनी अपनी मत ले करके एक बना लिया तो मतलब वो क्या हो गया ये दुनिया ही एक है भई ये एक ही है। इसमें ही अलग अलग अलग अलग

अलग प्रकार की चीजें हैं। ***वही वाली बात हो गई कि हाथी कैसा दिखता है?अगर पाँच अंधे उसको पकड़ ले, तो हाथी कैसा दिखेगा। (सब का अनुभव अलग अलग होगा) हाथी ऐसा दिखता है पर जिसने आंख कान सब कुछ खोल कर देखा है तो हाथी तो उसी को ही सही दिखेगा ना।जिन्होंने आंख पर बड़ी सी पट्टी बांध के रखी है। उसको तो हाथी खंभे जैसा भी दिखता है। हाथी दीवार जैसा भी दिखेंगा तो इसीलिए आंख कान खुले रखेंगे तो हाथी एक ही दिखेगा। जो केहते हैं हाथी ऐसा है... हाथी ऐसा है तो मतलब अज्ञानता की पट्टी अच्छे से बांधके रखी है तो वही दिखेंगा ना ! तो शास्त्रमत क्या है और श्रीमत क्या है?*** शास्त्रमत और श्रीमत दोनों जब एक होती है तो खिचड़ी बनती है और आता है बाबा शिव परमपिता परमात्मा आया है श्रीमत देने शास्त्रों को रिफाइन करने, रिफाइन करके अलग निकालने। इसलिए अपने को इसमें उलझना नहीं है। उलझेंगे तो उलझते ही चले जाएंगे, उलझते ही चले जाएंगे, उलझते ही चले जाएंगे। ठीक है बच्चों और कुछ।***बाबा कई जीव है जो हजारों वर्ष लाखों वर्ष जीते हैं तो उनका चक्रमें हिसाब कैसे है?*** उनका भी चक्र है। उनका कभी हजारों का चक्र होंगा तो कभी लाखों का होंगा पर उसको महाकाल चक्र थोड़ी कहेंगे। उसको महाकाल चक्र कैसे कहेंगे बताओ। समय के अनुसार होता है। एक बात बताओ अगर महाकाल चक्र उसको कहेंगे क्योंकि महाकाल का चक्र जब चलता है ना, तो एक भी नहीं.... तो देखो वो महाकाल चक्र से बाहर है क्योंकि सृष्टि को साफ करने के लिए बाबा ने कहाँ , कहाँ क्या छुपा के रखा है बच्चों को मालूम थोड़ी है । अब सारा संसार जब पलटी होगा तो क्या-क्या बाहर निकलके आएंगा देखा थोड़ी है। अभी अपन जो देखते हैं वही सत्य है। जो देखा हाँ इसकी शिकिल ऐसी है ये सत्य है, पर इन आत्माओं ने पिछले जन्म में कौनसा शरीर लिया... वो भी तो सत्य है ना, पर ये भी सत्य है और वो भी सत्य है जो आपने देखा ही नहीं जो उन्होंने भी नहीं देखा जो किसी ने भी नहीं देखा। पर जिसने देखा सत्य है ना ये सत्य है। आपने देखा, संसार है आपने देखा सृष्टि 5000 साल की बनी हुई है। बापने बताया ज्ञान दिया वो तो सत्य है ही पर इसके परे भी बहुत बड़ा सत्य है। उस सत्य को क्या समझना है, क्योंकि बाबा ने क्या कहा है, अभी तो बच्चों को इतना सा ज्ञान दिया है। थोड़ा सा ज्ञान दिया है। फिर बच्चे कहते हैं, नहीं नहीं, हमें पूरा ज्ञान है भई अगर आपको पूरा ज्ञान हो जावे तो फिर शिव बाबा को कुछ काम नहीं है अभी !! शिवबाबा क्या करेगा फिर !! पूरा ज्ञानी बन जावे...कि पूरा आ गया है तो क्या होंगा? फिर तो शिव बाबा को आना ही नहीं चाहिए। फिर जरूरत ही नहीं पड़ेगा शिव बाबा का !! ***बतावे पूरा ज्ञान माना क्या? वो परमात्मा एक ऐसी शक्ति है, ऐसी पावर है जो कभी अपने पूरे खजाने की चाबी किसी को नहीं देंगा। अगर वो चाबी दे देवें ना तो भक्ति मार्ग में उसकी पूजा ही नहीं होवे। उसको कोई बुलावे ही नहीं।*** * बच्चे इतने होशियार है तो बाप कैसा होगा? ये सोचते हैं कि नहीं हमारे पास सारी प्रॉपर्टी है। भई जितनी आपने देखी उतनी ही है, जितनी आपको दिखाई गई उतनी ही देखी। वो जो आपने देखी ही नहीं जो आपको पता ही नहीं कि बापकी प्रॉपर्टी कहाँ -कहाँ है, तो आपको कैसे पता पड़ेगा !! तो ये *बापकी प्रॉपर्टी अर्थात एक ऐसी चाबी बापके पास है जो बाप कभी किसी को नहीं देंगा।* किसी को भी माना किसी को भी नहीं.... नहीं...। भूल जाना...। किसको लगता है कि ये मुझे देंगा...

अपना पॉकेट खाली। जितना इधरसे देना होता है ना बोलता है, ये ले, इधर डालके ले जाओ, इतना ही दूँगा जितना बाँटके आना है।

21.01.21

(35) बाबा एक भाई बोल रहा था कि बाबा को ज्ञानी बच्चे पसंद है तो कैसे आपके बाबा बोलते हैं कि बाबा को भोले, बच्चे पसंद है? बाप इतने दिन से ज्ञान सुना रहे तो उसका क्या?

अच्छा मुरली मे बात आती है ना ज्ञानी तू आत्मा और योगी तो आत्मा कौन है फिर? अगर ज्ञानी तू आत्मा पसंद है तो योगी तू आत्मा कौन है फिर ! यह बात भूल गए उनको याद दिलाओ फिर। एक बात बताएं, भक्त है मंदिर में याद करते हैं, रोज जाते हैं, जल चढ़ाते हैं , फूल चढ़ाते हैं, फल चढ़ाते हैं। कुछ नहीं पता उनको कुछ ज्ञान का नहीं मालूम। क्या वो बापके प्रिय नहीं है? है ना? तो फिर कैसे कहते हैं कि बाप को ज्ञानी तू आत्मा ही पसंद है तो ***फिर योगी तू आत्माओं का पॉइंट भूल गए !! *** योगी तू आत्माएं ज्ञानी तू आत्माएं ! बाबा ने क्या कहा ज्ञान का अर्थ क्या होता है। ***ज्ञान अर्थात अपने को जाना और बाप को जाना, जिसको ये ज्ञान हो गया वो परमज्ञानी है। वो सबसे ऊंचा ज्ञानी है।*** और जो जबरदस्ती के ज्ञान में लोटपोट करते हैं और अभिमान झलकता है तो अपने प्यारे बाप को वो पसंद आएंगा? वो तो दुनिया वालों को भी पसंद नहीं आएंगा, तो बापको कहाँ से आएगा बताओ। दुनिया वाले भी उसको क्या कहेंगे? ***ज्ञान होता है, निर्माणता होती है, शक्ति होती है, प्यार होता है। वो बच्चे बापको पसंद आते हैं।*** एक ज्ञान ही सुनाओ बैठकर... याद कुछ नहीं प्यार कुछ नहीं, मुँह से दस दस घंटा बोलते रहो, ज्ञान सुनाते रहो, खिचड़ी बनाते रहो, खाने का टाइम नहीं है। फिर उनको कौन पसंद करेगा? "ज्ञानी योगी तू आत्माएं" बाप को पसंद है और ***वर्तमान समय एक ही चीज है कि बारात चलनी है भोलेनाथ की।*** ज्ञान तो बहुत सुनाया क्या पाया क्या किया, कितनों को आप समान बनाया.... आप सामान तो बना दिया पर बाप समान किसी ने नहीं बनाया। कितनों को बनाया? उल्टा ज्ञान..... !! ज्ञानी तू आत्माऐं पसंद जरूर है पर वो जिसको खुद का ज्ञान हो और बाप का हो। ***अच्छा एक बात बतावे रावण भी परमज्ञानी था। वह कौन था? कहते हैं ना भक्ति मार्ग में सबसे बड़ा विद्वान, ज्ञानी रावण था वो तो पसंद नहीं आया। जब तक प्यार है तब तक बाप है।*** हमें रावण के वंशज नहीं बनना है। चले गए थे उधर अभी वापस आ गए हैं। अभी बाप के पास आ गए हैं। इसीलिए इतना ज्ञान बापको नहीं चाहिए । अगर ऐसा होता तो पूरे विश्व में, आपकी चर्चा होती क्योंकि बाप तो जीरो है। ज्ञान में भी वो हीरो है ही लेकिन फिर भी क्या कहता है बच्चे मैं आपका सेवक हूँ । मैं आपका सेवाधारी हूँ । इतना निर्माण कोई ज्ञानी बच्चा बोलेगा !! मैं तो परमज्ञानी हूँ ये कौनसा ज्ञान है !! अपना बाप कहते है मैं आप बच्चों का सेवक हूँ । अपना बाबा रोज नमस्ते करता है, गुड मॉर्निंग करता है, अपना बाबा इतना प्यार करता है। कभी कहा-- मैं सबसे श्रेष्ठ ज्ञानी हूँ ! मेरे से ज्यादा इस संसार में किसी को ज्ञान नहीं है। कहा ऐसा ? और बच्चे क्या करते हैं, जो अपने आप को ज्ञानी तू आत्मा समझते हैं, वो क्या करते

हैं। मेरे से ज्यादा ज्ञान किसी को नहीं है। मतलब कि ***जो बापके भी बाप बन जाए, वो बापको बिल्कुल पसंद नहीं है।*** बिल्कुल पसंद नहीं और उन बच्चों का बाप क्या करेगा !! ***बाप को चाहिए अभी योगी तू आत्माएं। हाँ ठीक है ज्ञानी तू आत्माएं पसंद है पर साथ-साथ निर्माणता भी चाहिए। निरअहंकारी भी चाहिए, प्यारे भी चाहिए योगी भी चाहिए वो पसंद है।*** ऐसा नहीं ज्ञान से सब कुछ..... चलो बनाओ फिर सतयुगी दुनिया बनाओ। बनाएंगे...? बिना यादके बनाके दिखावे कोई, सिर्फ ज्ञान से....। बनाएगा कोई? तैयार है। पूछ लेना सबसे.... कोई सिर्फ ज्ञान से ही सतयुगी दुनिया बनाते हैं तो उनको बुलाओ। सतयुग में भी सिर्फ एक ही ज्ञान होंगा आत्मा का। वहाँ पर ज्ञान जीरो कोई ज्ञान नहीं। और हम क्या बन रहे हैं, देवता बन रहे हैं तो जब यहाँ पूरे संसार से ज्ञान पे जीरो लग जाएगा तभी तो सतयुग पर जाएंगे। अब तो सीधे-सीधे बोलते हैं। एक बात की बस एक ही बाप को भोले बच्चे पसंद है। अगर जो कहते हैं, हम नहीं मानते। बाबा को ज्ञानी बच्चे पसंद है तो बाबा उनको ये कहेगा तो आप अपने तरीके से अपनी सेवा करते रहिए। भल करते रहिए कोई बात नहीं अच्छा है, सुनाते रहिए कि जैसा राजा वैसी प्रजा। अपने जैसे ही सब तैयार करेंगे और बाप कहते हैं बाप समान बनाओ, ठीक है, समझ गए और कुछ और कुछ किसी को पूछना है।

19.10.2020

(36)"भारतमाता शिवशक्ति अवतार अंत का यही नारा है" ?

बाप आया है सर्व का कल्याण करने के लिए और ***अंतिम का यही नारा है। "भारतमाता शिवशक्ति अवतार अंत का यही नारा है"*** भारतपिता शिवशक्ति अवतार अंत का यह नारा नहीं कहा जाता । क्या कहते हैं ? माता कहा जाता है ? माता जगत जननी है। भारत माता... ***भारत माता किसको कहते हैं? माता जो भारत को सुपुत्र देने वाली माँ जो भारत माता है । भारत माता जो पूरे विश्व को महाराजा देने वाली माँ !!*** ऐसे कोई भारत माता का नारा कौन लगाएगा? ऐसे थोड़ी कोई भी आएगा। कौन है भारत माता? इतना भी बुद्धि नहीं है बच्चों में। भारतपिता थोड़ी कहा है !! क्या कहा है?? क्या कहा है...भारतमाता तो कहाँ बुद्धि भटक

रही है। कहाँ जा रहे हैं सोचलें अपने आप में। जहाँ माताओं की माता पूरे संगठन को लेके एक नारा लगाएगी -- "भारत माता शिवशक्ति अवतार"। तो इतनासा ही समझ ले, तो पूरी हिस्ट्री, जोग्राफी समझ में आ जाएंगी। इस ज्ञान को जिसने समझ लिया, उसने संपूर्ण समझ लिया। सब कछ समझ लिया, तो यह सोचो कि अब अंतिम समय का क्या नारा है। अंतिम समय का नारा है -- "भारतमाता"। अब यह नारा कौन लगाएगा? और ये आवाज कहाँ से निकलेगी? यहाँ से निकलेंगी हैना । फिर मत कहना है माँ अपने संगठन में ले लो, लेलो क्योंकि वर्तमान समय शरीर की उम्र देख करके शिकिल देखकर के दूर भागते हैं। ***फिर इसी शिकिल की एक झलक पाने के लिए तरसेंगे। एक दर्शन दे***

दो। क्योंकि झुंड इतना बड़ा हो जाएगा दिखेंगी थोड़ी फिर !! और बच्चे सोचते हैं, ऐसे तो बाबा कबसे बोलते आए हैं। बोलते आएं है अभी तक देखा थोड़ी है। देखने का समय है अभी। बोलने का समय चला गया। ठीक है, बच्चे... ।*अच्छा और....

19.10.2020

(37) रावण के 10 सिर होते हैं। होते हैं..?? 10 सिर कौन-कौन से होते हैं?

(बच्चों ने जवाब दिया अभी तक जो हमें बताया गया है कि पाँच विकार स्त्री के पाँच विकार पुरुष के मिलाकर 10 सिर...)दस सिर होते हैं। बिल्कुल सही। अब ***दूसरा अर्थ बतावे पाँच विकार काम..., क्रोध...., लोभ...., मोह, अहंकार और तत्व पाँच । पाँचों क्या है? जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी आकाश, तो मिलकर हो गए दस ।*** और वर्तमान समय पतित प्रकृति भी क्या है, प्रकृति क्या है? दुख दे रही है। ***प्रकृति को मिलाकर के कितने हो गए? (10) तो टोटल मिल गया खिलाड़ी दस। जब एक खिलाड़ी मैदान में आता है, तो वह कितना तांडव करता है? चाहे वो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार कोई भी हो। अब दूसरा खिलाड़ी प्रकृति -- जल, अग्नि , वायु...अब इसमें से एक भी प्रकृति का तत्व अगर खेल खेलना शुरू कर देवें तो नंबर वन खिलाड़ी !!*** सोचके देखो! खिलाड़ी 10, लेकिन जब खेल खेलते हैं तो 11 होते हैं और ***इन सब का बॉस कौन है? अपना बाबा !!* *आप बच्चों ने कभी देखा कि जो ग्यारवाँ खिलाड़ी होता है, वो कभी खेलता नहीं है। वह सिर्फ बैठ करके आराम से क्या करता है?*** 10 खिलाड़ी को खेलते हुए देखता है। पर कभी ग्यारवाँ खिलाड़ी अपने आप नहीं खेलता। ऐसे ही परमपिता परमात्मा वो खिलाड़ी है। बॉस है !! वो सिर्फ देखेगा। सिखाके तो बहुत अच्छा भेजा है ऐसे करना, ऐसे करना, ऐसे करना है। और वो 10 खिलाड़ी जब इधर खेल खेलते हैं। अब यह सोचो एक खिलाड़ी खेल खेलेगा तो क्या होगा? और जब दस खिलाड़ी मैदान में उतर जाएंगे तब क्या होगा? सोच लो! 10 खिलाड़ी सब दस दस... ऐसा नहीं बारी -बारी आएंगे। खैर बारी-बारी भी आएंगे। बारी-बारी ही आएंगे क्योंकि काम... फिर क्रोध। क्रोध और काम ने खेला फिर मोह आ गया...। ये सब बारी बारी खेलते हैं। सब खिलाड़ी बारी बारी खेलते हैं ना ! ऐसे ही प्रकृति के तत्व जहाँ पानी होंगा वहाँ आग थोड़ी ना लगेंगी! और जहाँ आग होगा, वहाँ पानी थोड़ी है। हवा....! ये (धरती) फँटना बिजलियाँ गिरना। हर एक खिलाड़ी बारी बारी खेलेगा। और अपना दम दिखाएगा कि मेरे में कितनी ताकत है। क्यूँकि आज से पहले हम उनके साथ खेलते थे। और अब वो पूरे संसार पूरे विश्व के साथ खेलेगा, और बैठा -बैठा कौन देखेगा? डायरेक्टर !! देखता रहेगा। जितने भी विकार है... ***अंतिम समय में पाँच विकार भी अपनी चरम सीमा पर होंगे, और इस अंतिम समय में प्रकृति के पांचों तत्व भी अपने चरम सीमा पर होंगे। तो बाप कहना चाहते हैं, बच्चे अपने चारों तरफ ऐसा घेरा बनाओ... "सबसे पावरफुल घेरा है निश्चिंतता का"। "बेफिक्र बादशाह का" !!*** फिक्र किस चीज की?? जब बादशाह पूरे विश्व का हमारे साथ है तो कौन बनेंगे ? बेफिक्र बादशाह !! बेफिक्र हम... बादशाह वो... दोनों मिलकर बन गए बेफिक्र बादशाह !! क्या बन गए? "बेफिक्र हम" "बादशाह बाबा" दोनों मिलकर

क्या बन गए? बेफिक्र अलग होता है, बादशाह अलग होता है। अब जोड़ दिया तो क्या बन गए? बेफिक्र बादशाह! ***क्योंकि बादशाह साथ है तो बेफिक्र है।*** और अगर बेफिक्र हैं तो ही बादशाह साथ है !! तो अपनी तो जीत है ना क्योंकि बेफिक्र बादशाह! हम बच्चे बेफिक्र, वो बादशाह। परवाना- शमाँ हैना। परवाना- शमाँ.... शमाँ वो परवानें हम... बेफिक्र हम बादशाह वो। बादशाह वो बेफिक्र हम.... तो कितना निश्चिंत बन जाएंगे? हां तो... जब वह हमारे साथ है,तो हम बेफिक्र हैं और निश्चिंतता का घेरा। और निश्चय हमारा बाबा हमारे साथ है। हमारा घेरा पक्का है। ठीक है

01.03.2020

(*38) किसी आत्मा ने बाबा से सेवा के बारे में पूछा*

देखो बच्चे ! हर कोई आत्मा अलग-अलग तरह की भक्ति में है।। अलग-अलग तरह की पूजा कर रही है अलग-अलग तरह के मैसेंजर पैगंबर हैं । अब मानो वह मानते हैं हनुमान जी को भगवान। तो आप उनको कहोगे कि-- भगवान आया है तो उनको हंसी तो आएगी ।आज तक हमें तो दिखाई नहीं दिया । हम तो इस... इस... इस... देवता की पूजा करते हैं।उसको मानते है-अरे भगवान ऐसे कैसे आ सकता है । वो इसलिए हंसते हैं कि उनको भगवान की सही पहचान नहीं है। इसलिए उनको क्या आती है ? हंसी आती है ,गलती उनकी नहीं। लेकिन उनको भगवान की , सही, सत्य पहचान जो होती है वो है ही नहीं। तो कभी भी बच्चे एक मिनट की दोस्ती -आप कैसे हो ,आपकी तबीयत कैसी है , आप ठीक हो ? ऐसे.....!आपको पता है दुनिया में क्या हो रहा है ? देखो चारों तरफ कैसे-कैसे हो रहा है ,क्या हाल हो रहा है? है ना !तो ऐसे ही हाल में ***भगवान ने वायदा किया -- यदा यदा धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत है । भवति अमेरिका नहीं कहा, भवती इंग्लैंड नहीं कहा , भवती न्यूजीलैंड नहीं कहा, और लंदन नहीं कहा। क्या कहा? भवति भारत है। मतलब जब-जब धर्म की ग्लानि होती है तो मैं भारत में आता हूं ।*** भारत कहा ना- तो ये वो समय है -देखो !अपने चारों तरफ ।देखो!! कितने हाहाकार हो रहे हैं धर्म के नाम पर झगड़े हो रहे हैं ।पहचानो - ये वही समय है।***भगवान आ गया है वो आ करके अपना गुप्त रूप में कर्तव्य कर रहा है । फिर उनको लाइन पढ़ाओ - जब मैं आता हूं तो मूढ़मती लोग मुझे नहीं पहचान सकते। है ना ! मैं गुप्त रुप में आता हूं।***फिर उनको यह याद दिलाओ , उनको समझ में आएगा.... अरे !इसकी बात में तो बड़ा दम है , फिर वो सुनेगा। तरीका समझ में आ गया । हाल चाल पूछो दुनिया की । दो मिनट का ही काम है। दुनिया की स्थिति का वर्णन करो, फिर सुनाओ -- भगवान ने वायदा किया है कि मैं आऊंगा । उसके बाद क्या करो ?फिर बताओ कि जब भगवान आता है, तो सभी उसको नहीं पहचान पाते इसीलिए हमने पहचान लिया कि भगवान इस धरा पर आ चुका है ।अगर आपको भगवान से मिलना है तो आप उसकी पहचान लो उसके बारे में जानकारी लो, तब आप उससे मिलो..... और हम आपको भगवान से मिलाएंगे ।तरीका समझ में आ गया बस यही करना है !! ठीक है बच्चों!

15.03.2020

(39) पुनर्जन्म जो होता है अपने हिसाब से होता है आत्मा ही डिसाइड करती हैं?

कर्म के आधार से पूर्ण जन्म होता है और यह सिस्टम ऑटोमेटिकली आत्मा में ही रिकॉर्ड भरा है। ***कर्म के हिसाब से आप का कर्म डिसाइड करता है कि आपको जन्म कौन सा मिलेगा।*** क्योंकि वह जो सिस्टम होता है ना... बाबा जब बनाता है ना ऑटोमेटिकली इतना शरीर ऐसे फिट करके बैठत है, कि आप जैसे मानो कर्म का चक्र जब आप इधर से फेंकते हो तो वह घूम के उसका रूप बड़ा होकर आपको मिलेगा। आपने जितना फेंका है, उससे वह घूम के.....क्योंकि सृष्टि क्या है? (गोल है) बाबा कौन है? (गोल है) ड्रामा भी गोल है आत्मा भी गोल गोल है तो कर्म भी क्या हो गया? गोल हो गया। तो कर्म का घूम के आएंगे तो क्या होगा? ऑटोमेटिकली यह सिस्टम है कि जो कर्म करेगा उसके अनुसार उसका अगला जन्म डीसाइड होता है। लेकिन इस संगमयुग पर.... इस ***संगम युग पर अंतिम समय में, जब हम सब जाएंगे तो अपना पूरा खाता, चोपड़ा पूरा क्लीन करके ही जाएंगे। ऊपर जाएंगे। फिर यहां आकर डिसाइड.....*** जैसे देखो आप बच्चे सतयुग में महाराजा बनते हैं, राजा बनते फिर द्वापर युग में जब आते हैं तो, जो ऊपर से नई नई आत्माऐं आती है, वो क्या बनती है वो राजाएं बनती है। और हम उनके वजीर होते हैं। क्यों होते हैं? क्योंकि उनको अक्ल ही नहीं होती। तो अकल कौन देते हैं, आप बच्चे ही देते हो। फिर भी राजा आप ही होते हो। क्यूंकि राजा वजीर के बिना चलता ही नहीं है!! फिर भी उनको.... हां उनका दिमाग का रिमोट भी आप बच्चों के हाथ में ही होता है। ठीक है? उसके बाद भी जो राजाए बनते हैं, चेले चमचे रखते हैं, तो भी नई नई आत्माएं आती हैं। तो जैसे नई नई आत्माएं आती है, तो उनके वजीर भी बनते हैं। फिर भी सृष्टि आप बच्चों से ही चलती है। फिर भी अलग अलग राज्य का राजा.....चलो बच्चे जाओ वजीर बनो। उसके राजा के वजीर आप बनो ऐसे। मतलब हम बच्चे पूरा..... पूरा 5000 वर्ष पार्ट बजाते हैं। इसलिए जो ड्रामा है ना बड़ा वंडरफुल है। आज तक किसी ने ऐसा रहस्य बताया? कहीं भी घूम के आजाओ... कहेंगे मैं बाबा हूं, पर रहस्य बताओ क्या हुआ था? गोल गोल जरूर घुमाने लग जाएंगे। बुद्धि को गोल-गोल ऐसे घूमाएंगे, भाई समझ में नहीं आ रहा है। जा रहे हैं। ***इसलिए यह जो ड्रामा है यह आदि से अंत का पार्ट चल रहा है***

04.06.2020

(*40) ड्रामा की शूटिंग कहाँ हो रही है (संगम पर) तो परिवर्तन भी कहाँ? (संगम पर)*

क्या बाप के रचे हुए यज्ञ में परिवर्तन नहीं होगा ?? होगा !! इस 100 वर्ष के युग का परिवर्तन ही हर युग का परिवर्तन होता है।*** क्योंकि ड्रामा की शूटिंग कहाँ हो रही है (संगम पर) तो परिवर्तन भी कहाँ? (संगम पर) *तो परिवर्तन शुटिंग मैं शूट हो गया।*** तो जैसे

सतयुग गया त्रेता में दो कला कम हुई कुछ परिवर्तन हुआ ।त्रेता गया द्वापर आया तो कुछ कितनी कलाएं कम हुई तो परिवर्तन हुआ।। और परिवर्तन के साथ....
विरोध तो जरूर हुआ। *__अब अपन थे.... बाबा आए तो कितना विरोध हुआ? उस जमाने में । अपन गए शोभा बच्ची (गुलज़ार दादी) आई तो कितना विरोध हुआ ?? कितने बच्चे छोड़ कर चले गए।__* **सबसे बड़ा परिवर्तन तो अब का है -क्या ?? सबसे बड़ा परिवर्तन तो अब का है-अब कितने छोड़कर जाएंगे इसलिए गायन 8 का 108 का ,1000 का, 16108 का गायन है ।* __ऐसे तो बाप के बच्चे लाखों है तो माला लाखों की क्यों नहीं बनी?? हजार में क्यों गिनती हुई क्योंकि यही समय है बाप को सही रीती से पहचानने का माला लाखों की गिनती हो रही थी ना !! एक लाख की माला गिनती होनी थी, या 9 लाख की माला गिनती होनी थी ! --1000 में क्यो गिनती हुई है ? क्योंकि *बाप को पहचानना- जो बच्चे बाप को पहचानते हैं वह गायन 16000 की ,16108 तक की माला का है ।*__ उसमें भी वो भी बच्चे क्या सोचते हैं ?अरे बाबा ऐसे कैसे?

20.06.2020

***(41) जब आप अव्यक्त हुए उस समय लास्ट क्लास में कहा आपने निराकारी ... निर्विकारी... निरअहंकारी.... तो अब प्रश्न यह है कि निर्विकारी में तो पांचों विकार की बात आ गई जैसे काम, क्रोध,**

लोभ, मोह अहंकार से मुक्ति आ गया तो फिर से तीसरा शब्द निरअहंकारी क्यों...?*

अच्छा निराकारी मतलब क्या? मैं आत्मा.... निर्विकारी मतलब कोई भी विकार नहीं। निरअहंकारी मतलब जो आपने पूरा जीवन में जितना ज्ञान लिया है, जो सीख रहें हैं, ***जो ज्ञान का भी अभिमान ना हो... वो होता है... वह होता है निरअहंकारी।*** निर्विकारी अलग जिसमें कोई विकार ना हो। ये ज्ञान में... जो बोलते हैं हमारे अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार नहीं है हम एकदम निर्विकारी हैं.... यह भी एक अहंकार है। यह है सूक्ष्म अहंकार इन सब चीज... ज्ञान के अहंकार से भी परे एकदम निअहंकारी वह होता है। ऐसा नहीं हम रोज.... स्वाभिमान अलग होता है लेकिन सूक्ष्म में अहंकार अलग....। अब कोई बच्चे तो कहते हैं बाबा हमें कोई अहंकार नहीं आवे..... लेकिन धीरे, धीरे, धीरे, धीरे धीरे सूक्ष्म रूप में क्या होता है? आ जाता है !! तो कहते हैं, लेकिन फिर भी क्या होता है? आ जाता है। अगर कोई मुझे कहे कि ये कमी है अभी इसको ठीक करना है। तो क्या कहेंगे.... अरे मेरेको इतना समय हो गया... बाबासे मिले हुए मेरे को सब नॉलेज है.... मैं सब जानता हूँ... या मैं सब जानती हूँ.... तो उसको क्या कहेंगे? यह भी ज्ञान का अभिमान है। इस अभिमान से भी पार जाना है। दूसरी बात सूक्ष्म रूप निर्विकारी , निरअहंकारी। निर्विकारी इस स्थूल दुनिया से, और फिर निरअहंकारी इस दुनिया के भी पार से। *__उससे भी पार निरअहंकारी।__* जब अपन इस शरीर में आते हैं बोलते हैं बात करते हैं... इस

शरीर के सूक्ष्म शरीर के...स्थूल बंधनों से भी पारा। कौनसा...? एक मैं आत्मा, और कुछ नहीं..।

(42) एक ऑडियो में बाबा ने लक्ष्मी नारायण के स्वयंवर के बारे में बताया था। जैसे मम्मा और बाबा को पाता चल गया था कि वे राधा हैं और आप कृष्ण है तो क्या हर आत्मा को अपना भविष्य जीवनसाथी जो होगा वो पता चल जाएगा?

बिल्कुल पता चल जाएगा लेकिन, पुरुषार्थ अनुसार। जीवनसाथी का पता कैसे चलेगा? अब मान लीजिए आज के समय में जोड़ियाँ कैसे बनती हैं? जैसे किसी के साथ किसी का भी विवाह होता है, जरूरी तो नहीं कि दोनों के संस्कार एक जैसे हो। लेकिन कोशिश करते हैं कि दोनों के संस्कारों को मिलाकर के विवाह किया जाए। लेकिन सतयुग में जैसे माला कैसे बनेगी ? मणका एकदम अपने शेप में होता है। ***जैसे-जैसे पुरुषार्थ तीव्र बढ़ता जाएगा, आगे बढ़ता जाएगा तो..अपने जीवनसाथी का भी मालूम पड़ जाएगा।*** ये आपका जो पुरुषार्थ अनुसार ही है। और पुरुषार्थ अनुसार जीवनसाथी उसी को ही मिलेगा जिसका पुरुषार्थ अच्छा है। दोनों के संस्कारों को मिला करके ही पुरुषार्थ भी आएगा। लेकिन अपने आप पता पड़ेगा, कैसे पता पड़ेगा? अगर आपका पुरुषार्थ अच्छा होगा अपने बाप को बड़े प्यार से याद किया होगा। ***आप की स्थिति अच्छी होंगी । तभी तो उस अनुसार आपको जीवनसाथी मिलेगा।*** और जब पुरुषार्थ अच्छा होगा तो कैसे पता नहीं पड़ेगा कि जीवनसाथी कौन होगा !! लेकिन वो पहले पता बिल्कुल नहीं पड़ेगा, क्योंकि अगर पहले पता पड़ जावे। तो मन में फिर विकार आना शुरू हो जाएगे । इसीलिए यह स्टेज भी अंतिम समय की होती है। बाबा भी सबको यह शक्ति नहीं देता है कि सबको अपने जीवन साथी का पता पड़ जाए। जिसको बाबा जानता है अच्छे से कि ये बच्चा सेवाअर्थ ही करेगा जो भी करेगा, उसी को ही वो पावर मिलती है। नहीं तो ये ***अंतिम समय के कुछ क्षण में ही वो शक्ति मिलती है, जब पता पड़ता है। और जब कोई विकार आने का चांस ही नहीं है।***

20.06.20

42) एक ऑडियो में बाबा ने लक्ष्मी नारायण के स्वयंवर के बारे में बताया था। जैसे मम्मा और बाबा को पाता चल गया था कि वे राधा हैं और आप कृष्ण है तो क्या हर आत्मा को अपना भविष्य जीवनसाथी जो होगा वो पता चल जाएगा?

बिल्कुल पता चल जाएगा लेकिन, पुरुषार्थ अनुसार। जीवनसाथी का पता कैसे चलेगा? अब मान लीजिए आज के समय में जोड़ियाँ कैसे बनती हैं? जैसे किसी के साथ किसी का भी विवाह होता है, जरूरी तो नहीं कि दोनों के संस्कार एक जैसे हो। लेकिन कोशिश करते हैं कि दोनों के संस्कारों को मिलाकर के विवाह किया जाए। लेकिन सतयुग में जैसे माला कैसे बनेगी? मणका एकदम अपने शेप में होता है। ***जैसे-जैसे पुरुषार्थ तीव्र बढ़ता जाएगा, आगे बढ़ता जाएगा तो..अपने जीवनसाथी का भी मालूम**

पड़ जाएगा।* ये आपका जो पुरुषार्थ अनुसार ही है। और पुरुषार्थ अनुसार जीवनसाथी उसी को ही मिलेगा जिसका पुरुषार्थ अच्छा है। दोनों के संस्कारों को मिला करके ही पुरुषार्थ भी आएगा। लेकिन अपने आप पता पड़ेगा, कैसे पता पड़ेगा? अगर आपका पुरुषार्थ अच्छा होगा अपने बाप को बड़े प्यार से याद किया होगा। ***आप की स्थिति अच्छी होंगी । तभी तो उस अनुसार आपको जीवनसाथी मिलेगा।*** और जब पुरुषार्थ अच्छा होगा तो कैसे पता नहीं पड़ेगा कि जीवनसाथी कौन होगा !! लेकिन वो पहले पता बिल्कुल नहीं पड़ेगा, क्योंकि अगर पहले पता पड़ जावे। तो मन में फिर विकार आना शुरू हो जाएगे ।इसीलिए यह स्टेज भी अंतिम समय की होती है। बाबा भी सबको यह शक्ति नहीं देता है कि सबको अपने जीवन साथी का पता पड़ जाए। जिसको बाबा जानता है अच्छे से कि ये बच्चा सेवाअर्थ ही करेगा जो भी करेगा, उसी को ही वो पावर मिलती है। नहीं तो ये ***अंतिम समय के कुछ क्षण में ही वो शक्ति मिलती है, जब पता पड़ता है। और जब कोई विकार आने का चांस ही नहीं है।***

06.05.2021

(43) बाबा मुरली में आया था ड्रामा बड़ा या बाबा बड़ा?

ये तो वही बात आ गई मुर्गी पहले आई या अंडा पहले आया। यही आ गया ना? पहले आप बच्चे बताओ ? बताओ बताओ! (किसी बच्चे ने कहा मुर्गी आएगी पेहले तो बाबा... पर बिना अंडा के मुर्गी कैसे?) सही है बिना अंडा के मुर्गी कैसे आएगी? बताओ! (बच्चों ने कहा फिर अंडा भी बिगर मुर्गी से कैसे आएगा?) बिल्कुल !! (दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।) (बच्चे बोले "बाबा बड़ा है") बस... !! देखो, हमेशा ये सोचना है कोई चीज कैसे पैदा हुई किससे पैदा हुई? जब मुर्गी अंडा देती है तो उसको फिर बच्चा बनने में टाइम लगता है ना, बड़ा होने में टाइम लगता है, मुर्गी तक होने में उसको टाइम लगता है। मतलब क्या? अपने बाप जैसा बनने में उसको कितना समय लगा। लगाना?? तो पहले कौन बड़ा? मुर्गी बड़ी। बाप कौनसी बात कर रहे हैं अंडे और मुर्गी की बात कर रहें है ना तो फिर? जब अंडा आता है तो अंडे के अंदर पहले बच्चा बनता है, और उसको बड़ा होने में समय लगता है। लेकिन दिया तो मुर्गी ने ही है, हैना?? ऐसे ही आज के टाइम में बोलते हैं बाबा बड़ा या ड्रामा बडा? ये कहने के लिए बाबा ने कहा - "ड्रामा में पार्ट हर एक आत्मा का है। मैं भी ड्रामा के बंधन में बंधा हुआ हूँ।" इसका अर्थ क्या है? ***अगर ड्रामा बड़ा है, तो भक्तिमार्ग में लिखा होता ड्रामा को याद करने से पापकर्म विनाश हो जाएंगे। शास्त्रों में लिखा होता ड्रामा को याद नहीं करेंगे तो विक्रम बन जाएंगे। लिखा होता ना? ऐसा क्यों लिखा है कि भगवान को याद करेंगे तो आपके जन्म जन्मांतर के पाप मिट जाएंगे। ये क्यों लिखा है? हर मुरली में ये क्यों आता है कि अगर अब आप बाप को याद करेंगे तो पाप विनाश हो जाएंगे। ऐसे क्यों नहीं लिखा होता कि ड्रामा को याद करेंगे तो पाप विनाश हो जाएंगे। लिखा क्यों नहीं? तो कौन बड़ा? बाबा बड़ा... हाँ ।*** दुनिया का कोई भी एक इंसान, चाहे वो कितना भी बड़ा क्यों ना हो, जो नियम कायदे कानून बनाएंगा, उस बड़े व्यक्ति को उस नियम कायदे कानून में खुद को चलना

पड़ेंगा। नियम कायदा उसने दुनिया के लिए बनाया ऐसा नहीं, उसको खुद को भी उस में चलना पड़ेगा। जो इस सृष्टि के नियम कायदे कानून है वो भले बाप ने बनाए हैं पर चलेंगा तो वो भी, हम भी,पूरा विश्व चलेंगा। और ड्रामा की बात अगर कहे ये सृष्टि 5000 साल की है। ***ड्रामा की बात कहे तो ड्रामा इस धरा पे होता है। सूक्ष्मवतन में ड्रामा नहीं होता है, मूलवतन में ड्रामा नहीं होता है।*** ड्रामा कहाँ बोलते हैं अपन? इस धरा पे बोलते हैं ना, तो कैसे कहेंगे? अपनका बाबा तो इस धरा के ऊपर है... सूक्ष्मवतन देखो.. मूलवतन देखो। ड्रामा हम यहीं केहते हैं। अब परमधाम में थोड़ी जाके कहेंगे जो ड्रामा में होगा मिलेगा। कभी कहा? वहाँ तो सूक्ष्म रूप में क्या? आत्मा !! सूक्ष्मवतन में थोड़ी कहेंगे ड्रामा में होगा तो हिसाब किताब मिलेगा। जो मर्जी है अपनी मनमर्जी करो। वहाँ सीधे हो जाएंगे एकदम अदालत में, किसका चलेगा नहीं। तो इस धरती पे कहते हैं कि जो ड्रामा में होगा, इधर ही कहते हैं। तो अब बताओ कौन बड़ा? बाबा बड़ा ना?? बाबा क्यों बोलता है कि मैं ड्रामा के बंधन में बंधा हूँ? बाबा ये केहता है... इस दुनिया की भाषा में उसको नियम केहते हैं। बाप की भाषा में उसको ड्रामा कहते हैं बस। बापकी भाषा में ड्रामा बोलेंगे दुनिया की भाषा में नियम बोलेंगे। बाप भी नियम कायदे कानून में बंधा हुआ है। लेकिन कई बच्चे कहते हैं बाप ने ड्रामा को बनाया या ड्रामा ने बापको बनाया? ***बताओ कोई कहेगा कि ड्रामा ने बाप को बनाया! आज तक की कौनसी मुरली में आया कि ड्रामा ने बाप को बनाया। तो कौन बड़ा? (बाबा) हाँ समय अनुसार आने पर वो ड्रामा को भी बदल सकता है। समय अनुसार आने पर वो नियम में भी बदल कर सकता है, कायदे-कानून भी बदल सकता है पर ड्रामा बाप को कभी नहीं बदल सकता। इसलिए बाप बड़ा क्योंकि बाप है तो ड्रामा है, बाप नहीं है तो ड्रामा का कोई काम नहीं है।*** इसलिए मुर्गी !! आज सारा संसार इसी में उलझा हुआ है.. मुर्गी बड़ी या अंडा बड़ा? अंडा बड़ा या मुर्गी बड़ी? तो ऐसे चक्र से बाहर निकलो।

06.05.2021

(44) बाबा शरीर में जो रोग होते हैं उसको योग से कैसे खत्म करें?

ये दुनिया है ही रोगों की दुनिया और सबसे बड़ी बात है इस संसार में, ***बाप को याद करने से हर रोग से लड़ने की क्षमता, ताकत मिलती है। जितना बाप बुद्धि में रहेगा उतना बाप की याद। इतनी ताकत भी होनी चाहिए ना,क्योंकि याद टिकती नहीं है।*** बच्चे कहते हैं हम तो आपको इतना याद करते, इतना याद करते हैं, फिर भी रोग आता है। पता है बाबा क्या कहते हैं - नहीं आप बापको याद नहीं करते हो। आप बार-बार क्या करते हो - मेरे में रोग है, मैं बीमार हूँ, मेरे पेट में दर्द है, मेरे पैर में ये दर्द है....। भई आप बापके सामने बैठ करके भी किसको याद कर रहे हो? रोग को। अब जिसको याद करोगे, वही आएगा। बड़े रूप में आएगा। बाप को क्यों नहीं याद करते? हर बारी बच्चे यही केहते हैं - बाबा मेरी ये बीमारी ठीक करो ना, बाबा मेरेको ये बीमारी से मुक्त करो ना। आप याद कर रहे हो बिमारी को। तो ठीक कैसे करेगा बाबा? एक बच्चे की बात नहीं है, ये मेजॉरिटी की बात है। अब क्या कहते हैं, हम बीमारी से मुक्त हो जावे तो हम

योग कर रहे हैं। हाँ भल करो। एक बारी संकल्प किया, दो बारी किया हर रोज कहेंगे - बाबा मेरेको ये बीमारी हैं, मेरेको ये बीमारी है, तो बाबा कहेगा - डॉक्टर के पास आए हो, आपने एक बारी अपनी बीमारी की चिट्ठी लिख के दे दी। अब आप अगर रोज डॉक्टर को यही कहेंगे कि मेरेको ये बीमारी है, ये बीमारी, ये बीमारी है तो डॉक्टर कहेगा भई आप दवाई क्यों नहीं खाते हो, रोज आकर बोलते हो, मुझे ये बीमारी है,ये बीमारी है दवाई खानी चाहिए ना। बोलने से थोड़ी दवाई मिलती है, खाने से दवाई मिलती है। पेट में जाएंगी नहीं तब तक बीमारी नहीं ठीक होंगी। ऐसे ही क्या करते हैं बाबा बीमारी है, बीमारी है पर याद नहीं करते। याद बीमारी को करते हैं? और डॉक्टर ने जो श्रीमत दी वो साइड में रख के आ गए। आज भी क्या करते हैं? मेरे को दवाई नहीं दिलाया, मैं बीमार हूँ। जो डॉक्टर के पास दवाई लेने जाते हैं तो खाते नहीं कहते है वो डॉक्टर अच्छा नहीं है। आपको क्या मालूम वो डॉक्टर अच्छा है या नहीं है। आप बिना दवाई खाए अगर बोलेंगे डॉक्टर अच्छा नहीं है, डॉक्टर की दवाई अच्छी नहीं है तो कैसे चलेंगा। पेहले खानी पड़े ना!! अगर बाप की सच्ची सच्ची याद में बैठेंगे, एक बारी संकल्प करेंगे बाबा ये तन आपका है, मन आपका है, तन में कोई भी रोग है तो वो भी आपका है। आपकी दिल है ठीक करना, तो करना, क्योंकि ये शरीर हम समर्पण करते हैं। क्योंकि हम इससे बड़ी सेवा करना चाहते हैं तो इस शरीर को ठीक कर दो। फिर सोचो! और ***"ॐ" कराओ खाली पेट लंबी सांसें "ॐ" काराओ तो उससे हम कहेंगे 50 परसेंट बीमारी समाप्त और पचास परसेंट कम नहीं होता। अगर पचास परसेंट समाप्त हो गया तो 50 परसेंट तो चलते फिरते समाप्त हो जाएंगा। करके देखो। सुबह सुबह एकदम पेट खाली और पानी पियो और लंबी साँस से "ॐ" करो पेट की तो काफी समस्याएं खत्म हो जाएंगी, ठीक है। और जो अपने को चाहिए बुद्धि में, शरीर में ऑक्सीजन चाहिए वो सबसे ज्यादा मिलेंगी और अच्छी वाली मिलेंगी क्योंकि जब हम "ॐ" करते हैं ना तो वो अच्छी ऑक्सीजन लेंगा। बाहर दुनिया में गलत ऑक्सीजन भी हैना तो जब हम "ॐ" करते हैं उस टाइम वो प्रकृति से अच्छी चीज को ढूँढ ढूँढ के लेकर आएंगा अंदर में और बुरी को बाहर करेगा, तो कितनी परसेंट बीमारी खत्म हो जाएंगी।*** तो बाप को याद करेंगे तो ठीक होंगे और बीमारी को याद करेंगे तो बीमारी और आएंगी

06.05.2021

(45) संगम पर परमात्मा से ब्रह्मा द्वारा 21 जन्म की प्रारब्ध मिलती है याने सतयुग के 8 जन्म और त्रेता के 12 जन्म तो 20 जन्म हुए तो 21वा जन्म जो वर्तमान में संगम का एक जन्म है क्या स्वर्ग में ही गिना जाएगा। इस पर कई बच्चे मूँझे हुए हैं। 21 पीढ़ी का मतलब 21 जन्म से ही है ना? कृपया इसे स्पष्ट कीजिए।

अच्छा। सबसे बड़ा स्पष्टीकरण है कि ***जब एक बच्चा बाप के साथ रहता है तो सबसे ज्यादा सुखी होता है तो उसका जन्म कहेंगे हीरेतुल्य क्योंकि वो बाप के साथ है।*** सतयुग में अपन जाएंगे तो क्या मिलेगा भल सबकुछ है - धन, संपत्ति, सुख, शांति, प्रेम खजाना है, सागर है पर एक चीज नहीं है। एक चीज नहीं है- "बाप"। भल कमी भी

महसूस नहीं होती क्योंकि सबकुछ है। तो ये जो *इस वर्तमान समय का संगमयुग है जो सच्चे सच्चे सुख में है,मौज में है,उनका गिना जाएँगा हीरेतुल्य इक्कीसवा जन्म।* **जो दुखी है,बापका बनके भी रोते हैं,चिल्लाते हैं,गाली देते हैं,उनका नहीं है। उनका तो बीस में से भी कम है वो डायरेक्ट सतयुग में नहीं आएंगे। धीरे-धीरे जब सतयुग निकल जाएगा वो फिर बादमें धीरे-धीरे आएंगे। और *जो इस समय मौज में है- "वाह मेरा बाबा मिला है", "मैं भरपूर हूँ", "मैं संतुष्ट हूँ", "मैं निश्चिंत हूँ", "मैं बेफिक्र हूँ" उसका है हीरेतुल्य जन्म। जो बापकी छत्रछाया में है, नाँच रहे हैं,गा रहे हैं, खुशी मना रहे हैं उसका हीरे तुल्य जन्म हैं। भल कुछ भी नहीं है तो भी खुश है और, सब है तो भी खुश है उसको कहेंगे हीरे तुल्य जन्म।*** क्योंकि वो बच्चे बाप के साथ मौज में है, तो वो जो जनम है,ये संगमयुग का जो जन्म है वो 20 जन्मों के साथ ही गिना जाएगा। ठीक है... इसमें कंफ्यूज होने वाली बात ही नहीं है।आपको अभी ज्ञान मिला तो समझ में आया ना डायरेक्ट सतयुग में जाके थोड़ी ज्ञान मिला। यहाँ ज्ञान मिला मिला ना? सबकुछ जानते हुए भी सृष्टि के आदि मध्य अंत को जानते हुए भी इतना दुख लिए इतना सबकुछ हुआ, सबकुछ जानते हैं तब भी खुशी में है,मौज में है। बोलते हैं ना जो राज को नहीं जानते, वो नाराज होते हैं और जिसने राज को जान लिया, वो राजी होकर खुशी में नाँचते हैं।

6.5.2021

(46) लेकिन बाबा ये 21वा जन्म है जैसे आधे बच्चों ने तो बाबा के साथ बनाया लेकिन अभी वाले बच्चे जो बाबा के साथ नहीं है, उनका क्या 21वा जन्म माना जाएगा?

अभी वर्तमान समय आएंगे ना धीरे धीरे। आएंगे ना वो भी तो आएंगे उनको भी तो सुख मिलेंगा, मौज मिलेगा। हाँ जो ब्राह्मण, जो साकार में भी हैं उनका कहेंगे है ना। ये बड़ा पूरा ***100 वर्ष में इतनी खुशी में मौज में है, उनका सबका ये फर्स्ट जन्म है। ये 21वा जन्म कहेंगे या पहला जन्म कहेंगे*** , या यहाँ से शुरुआत करेंगे, कुछ भी लगा लो।

06.05.2021

(48)बाबा अंतिम समय में सब जंगल में जायेंगे तो अभी सारे बच्चे तो यहाँ पर नहीं होंगे कई बच्चे तो अपने घर पर भी बैठे होंगे ना...

हाँ तो भल *__अंतिम समय में जहाँ हम होंगे वो वहाँ पहुँच जाएंगे। और अपने आप ही ऐसी दिशा बनेंगी देखो ये जो पार्ट है बड़ा वंडरफुल__ होंगा।* थोड़ा सा सेहना भी पड़ेगा... सबसे ज्यादा सहना इसलिए भी पड़ेगा क्योंकि पूरे संसार में मौत का बाजार होंगा।आज भी है ना। पूरे विश्व में एक दुर्गंध फैल जाएगी। वो भल थोड़े समय की होंगी, लेकिन जैसे ही हवा का झोंका आएगा तो बाबा आप बच्चों को उस एरिये से दूर लेके जाएगा। अभी बच्चे सोच रहे होंगे ना बाबा अपना घर हो,अपना घर हो। भल सोच रहे हैं।भल थोड़ा बहुत

अभी सफल करेंगे वर्तमान समय,लेकिन वो भी थोड़े टाइम के लिए, लेकिन उसके बाद सब इधर ही। यह नहीं सोचना बाबा ये काम की चीज हैं वहाँ काम आएगी ले कर चलूँ जरूरत नहीं है क्योंकि वहाँ अपन ने काम की चीज रखी है पहले से ही। (किसी बच्चे ने बड़ा ही मासूम सा सवाल किया - दो दो जोड़े लेकर जाएंगे ना?) ये नहीं सोचना कि आपको बोला जाएगा अभी जंगल में जा रहे हैं तो अपनी पैकिंग कर लो। ये नहीं सोचना कहीं पर भी गए अचानक से उधर से उधर निकल दिए।***अचानक होगा सब। ये मौका किसी को देंगे ही नहीं कि आप पैकिंग करो अपनी।***

06.05.2021

(49) बाबा भक्ति, ज्ञान और कर्म तीनों श्रेष्ठ होने चाहिए ना?

देखो भक्ति में अगर कर्म का ज्ञान भी हैं तो कर्म अपने आप श्रेष्ठ हैं। ज्ञान में तो और श्रेष्ठ है क्योंकि बाबा ज्ञान में तो इतना अच्छा ज्ञान देते हैं। ***भक्ति भी श्रेष्ठ ज्ञान भी श्रेष्ठ और सबसे श्रेष्ठ है कर्म, जो भक्ति के साथ ज्ञान के साथ अर्थ सहित जान कर जो कर्म करे वो सबसे श्रेष्ठ कर्म होते हैं। सबसे ऊँचे कर्म होते हैं और उससे भी ऊँचे कर्म होते हैं जो बाप की याद में रहकर के करें। हर कर्म जो बाप की याद में रेहके करे***

13.04.2021

(50)परमात्मा को बुलाने का साधन है ओम?

बुलाने का नहीं सारी शक्तियाँ लेने का साधन है, सारी पावर लेने का साधन है, अपनी कर्मेंद्रियों को समेटने का साधन है। भल हमें लगेगा कि ॐ... ॐ करने से हम आवाज में आ रहे हैं पर ***ॐ करने से हम आवाज से परे जा रहे हैं ये सोचो।*** अगर अभी से बच्चों ने शुरुआत नहीं किया तो ****अंतिम समय अवस्था एकदम कच्ची रहेंगी और बुद्धि योग इधर-उधर भटकेंगा।**** क्योंकि ॐ से आपका जो ध्यान नीचे है अपनी कर्मेंद्रियों में है, अपने शरीर में है, "ॐ" से वो पूरा का पूरा आपके मस्तिष्क में आएंगा। "ॐ" का उच्चारण करने से आपकी नीचे की पावर सारी यहाँ आएंगी और जब यहाँ पावर आती है तो भूल जाते हैं कि अपनका शरीर भी है या नहीं। इतनी ताकत है "ॐ' में। विधि से करें तो सिद्धि प्राप्त होंगी।***आवाज से भी करें और मन से भी करें बाबा?***थोड़ा आवाज करके अर्थात ऐसे नहीं कि जोर-जोर से चिल्लाना है। मन से भी, जैसे आवाज करके किया 10 ही मिनट किया 15 मिनट किया फिर 10 मिनट एकदम साइलेंस में बैठ जाओ क्योंकि सारी पावर आ रही है आ रही है।

13.04.2021

***(51) बाबा आपने शुरू में ॐ ध्वनि से यज्ञ की शुरुआत की थी, बीच में फिर अव्यक्त पार्ट चला, तब आवाज से परे शान्ति में योग करने की विधि सिखाई। अब**

फिर ओम ध्वनि करने से जैसे वापिस आवाज में आ रहे हैं ऐसे लग रहा है। वास्तव में करे तो क्या करें, कैसे करें?*

अच्छा साइलेंट में रहकर के योग की विधि तो बताई पर उस बच्चों से ये पूछो के उस विधि पर खरा कौन उतरा। कौन उतरा बताओ? ***साइलेंट में बैठकर के किसी के बारे में परचिंतन कहीं कुछ सोचना, कहीं कारोबार का सिस्टम चलना कहीं कितना किससे आ रहा है, कहाँ क्लास कराएंगे तो कितना पैसा मिलेंगा कहाँ जाएंगे तो कितना मिलेंगा क्या होंगा, क्या क्या सुनाना चाहिए तो ये मिलेंगा... ये साइलेंट में किया सभी ने..??*** योग कौन सा किया बताओ?? इससे अच्छा तो आवाज वाला ही है ना कम से कम "ओ" (परमात्मा) और "मैं" (आत्मा) तो बोल रहे हैं और बुद्धि योग तो कहीं भटक नहीं रहा है ना। तो इससे अच्छा तो यही है। अच्छा दूसरी बात ये है कि जब हम यज्ञ की शुरुआत करते हैं तो किससे करते हैं? आज भी दुनिया में जब यज्ञ रचते हैं तो क्या करते हैं हर चीज पहले ॐ के मंत्र का उच्चारण करते हैं और जब अंतिम समय आता है तब भी ॐ करते हैं, यही करते हैं ना !! ***ऐसे ही ये बड़ा बेहद का यज्ञ है शुरुआत भी किससे हुई ॐ से। बीच में अर्थात यज्ञ में बहुत सामग्रियाँ चली गई, बहुत धन दौलत चला गया, बहुत गड़बड़ घोटाला चला गया, अब अंतिम समय साफ सुथरा करना है। "ओ....म" मैं आत्मा की तैयारी परमात्मा के पास जाने की हो गई है।*** अब "मैं" आत्मा अपने प्यारे "ओ" परमात्मा के पास जा रही हूँ। याद दिलाओ अपने आपको जब भी "ॐ" करने बैठते हैं। "ॐ" ध्वनि पूरा करते हैं तो 5 मिनट एकदम आंखें बंद रखो और साइलेंट में बैठे रहो... देखो क्या अनुभूति होती है... क्या परमधाम की शांति की अनुभूति होंगी... क्या सुख मिलेंगा...क्या शांति मिलेंगी...

14.09.2020

(52)1969 से 2018 तक ब्रह्मा बाबा का कौनसे युग का शूटिंग हुआ जबकि इन 50 सालों में ब्रह्मा बाबा ने साकार में तो पार्ट बजाया ही नहीं। सिर्फ सूक्ष्म में ही पार्ट बजा। तो क्या सूक्ष्म शरीर से भी ड्रामा का शूटिंग होता है। क्या ब्रह्मा बाबा का द्वापर युग और कलयुग का शूटिंग कब होता है?

अगर आज अपन कहे कि आज के समय में किसी के शरीर के अंदर कोई आ जाता है, कोई दूसरी आत्मा आ जाती है तो क्या उसका शूटिंग होता है? क्यों नहीं होता? दिखती ही नहीं है, लेकिन वर्तमान समय की शूटिंग हो रहा है। आने के बाद शूटिंग हो रहा है। ***इस सृष्टि में सूक्ष्म रूप में भी शूटिंग होता है क्या? ब्रह्मा का दिन ब्रह्मा की रात कहते हैं ना। आधा कल्प ब्रह्मा का दिन आधा कल्प ब्रह्मा की रात।* *कहते हैं आधा कल्प ब्रह्मा की रात तो दिखेगा कहाँ से? आयेंगा ही नहीं। आधी रात में।*** देखो बच्चे द्वापर में जब आते हैं, इमर्ज नहीं होता तो उस समय क्या कहेंगें जो सतयुग से पार्ट बजाने वाले आत्माएं हैं वह एकदम नीचे वाली स्टेज पे आना शुरू हो जाते हैं। उस समय उनका कोई गायन नहीं ज्यादा। बहुत कम ऐसे गायन तो कुछ होता ही है लेकिन आज के इस समय में। लेकिन उस टाइम में उन बच्चों का कोई वह नहीं होता क्या कहेंगे

क्योंकि दूसरे दूसरे राजाये आते हैं तो उनका महत्व जो है, वह खत्म हो जाता है। मतलब कि अपन बच्चों का महत्व खत्म हो जाता है। इसीलिए गायन कम है ब्रह्मा का दिन ब्रह्मा की रात। दूसरा पार्ट सबसे अच्छा चलता है। साक्षात्कार का पार्ट जो कि द्वापर के मध्य से शुरू होता है। तो कई जन्म ऐसे हैं जो। पूरे नहीं हुए द्वापुर के बाद कलयुग तक , जो की शरीर की उम्र पूरी नहीं हुई। कहाँ युद्ध में मारे गए कहाँ किसी चीज में मारे गए तो साक्षात्कार का पार्ट चलता है द्वापर कलयुग में। तो इस समय जो ***50 वर्ष है, उस समय बाप अपन को देता है साक्षात्कार का पार्ट ! जो कि उस दौरान फिर वह चलता है। शूटिंग अभी हो रही है। इन 50 वर्षों में साक्षात्कार के पार्ट की, और यह पार्ट फिर चलता है। कहाँ? द्वापर कलयुग में।*** उस दौरान जन्म पूरे 84 ही होते हैं, लेकिन क्या कहेंगे उम्र के हिसाब से पूरी नहीं। कहाँ बच्चा बन के भी अपनने शरीर छोड़ा है। तो जब उस दौरान उसकी उम्र नहीं।, इधर साक्षात्कार का पार्ट हुआ है क्योंकि बाप द्वापुर कलयुग में मेजॉरिटी... मेजॉरिटी साक्षात्कार का पार्ट हीं कराते हैं।****वह सतयुग त्रेता जो दिखने वाला पार्ट है, शुरू का। सतयुग और त्रेता दिखने वाला जो कि ब्रह्मा का दिन का दिन का गायन होती है।(69 से पहले) और अब थोड़ा समय...। और जो बीच का पार्ट है उसमें कहेंगे द्वापर कलयुग। रात... !! ब्रह्मा की रात। अँधेरे में कुछ दिखाई थोड़ी देता है।**** ***अंधेरे में जो दिखाई नहीं दिया तो शूटिंग तो हुई ना...?***हाँ बिल्कुल हुई है, शूटिंग हुई है। अंधेरे में भी शूटिंग हुई है। लेकिन मेजोरिटी क्या कहेंगे, शरीर भी लिया है, पार्ट भी बजाया है। पर मेजॉरिटी साक्षात्कार का पार्ट बजाया है। जो ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात का गायन होता है। आपको समझ में नहीं आ रहा है ना? ***वो जो साक्षात्कार का पार्ट है उसी को स्थूल रूप में द्वापर और कलयुग में दिखाया गया है। और जो 1969 से 2017 के बीच में जो पार्ट चला है जो आपका साक्षात्कार कराने का वो द्वापुर कलयुग में उसको दिखाया जाता है।***और जो स्थूल रूप में वह सतयुग त्रेता में दिखाया गया है। और भी और भी अच्छे से आने वाले समय में धीरे धीरे धीरे धीरे हर एक का जवाब मिलेगा.... ***और खुलेगा ठीक है। कहते हैं ना बच्चे**

यह समय है और यह समय पर बाप, जितना बाप को परमिशन है, उतना ही बताएंगे लेकिन आने वाले समय में सेकंड बाय, सेकंड बाय, हर एक रहस्य भी खोलते जाएंगे। पर एक बारी में भोजन नहीं देंगे क्योंकि जो अपने आप को बताया है, वो तो है ही, लेकिन इसके ऊपर भी बड़ा राज है। उसके लिए आपको इंतजार करना पड़ेगा।* यह जो बताया है, छोटे रूप में है लेकिन बड़े रूप में इसका और बड़ा राज है। लेकिन बाप क्या कहेगा? बच्चों....धैर्य का फल बड़ा मीठा होता है। ठीक है ना। हाँ जो बताने का है बच्चे, वह जरूर बताएंगे भी। एक छोटे रूप में बताया है बड़ा रूप आने वाले समय में दिखाएंगे भी और बताएंगे भी। हाँ ठीक है ना। हाँ बिल्कुल दिखाएंगे भी और बताएंगे भी, क्योंकि अपन समझ गए हैं कि बच्चों को यह बात ज्यादा समझ में आएंगे भी नहीं। और क्योंकि बाप ने समझाया भी नहीं। और आपको भी समझ में जल्दी नहीं आएंगी । (थोड़ा तो आ गया)

27.02.2021

(53)ब्रह्मा बाबा आप साकार में कहा करते थे "मैं श्री कृष्ण बनूँगा... मिचनू बनूँगा" तो बाबा को वर्तमान में सूक्ष्मशरीर में फरिश्ता पार्ट बजाने में खुशी मिल रही है या श्री कृष्ण के रूप में जल्दी से जल्दी जन्म लेने की तीव्र इच्छा हो रही है?

देखो बच्चे दोनों इच्छा तीव्र है। देखो वर्तमान समय फरिश्ता रूप में पार्ट बजाने में भी मजा आ रहा है। पर सृष्टि में भ्रष्टाचार देख रहे हैं तो दुख भी हो रहा है। लगन भी है कि जल्दी से बाबा का कर्तव्य पूरा हो जावे और जल्दी से जल्दी से अपने परमधाम की यात्रा करें और खुशी इस बात की भी हो रही है कि ये जो घड़ी है, ये सतयुग में कभी मिलने वाली नहीं है। ये जो पल है ये जो बच्चों के साथ मिलना है, बैठना है वो सतयुग में तो कभी होंगा ही नहीं। सतयुग में ये प्यार नहीं होंगा। लाओ आराम से जो भी होंगा जो सिस्टम से बना होंगा जो अपने बाबा ने सिस्टम बनाया होंगा। भल प्यार होगा, बहुत निस्वार्थ प्यार होगा, बहुत प्रेम होंगा पर बिना जाने होगा। आज आप सभी बच्चे जानते हैं कि हम 84 जन्म लेके आए हैं और हम जाकरके सतयुग में ये बनने वाले हैं और वर्तमान समय आप बच्चे जानते हो कि सृष्टि का रचयिता हमारे साथ है। वो परमपिता परमात्मा निराकार शिव बाबा हमसे मिलने आता है, प्यार करता है पर ये वहाँ नहीं होगा। ये वहाँ नहीं जानेंगे तो नशा और खुशी किसमें है? भल एक सेकंड पेपर आया, बाबा की बड़ी याद आई बाबा पेपर आ गया जल्दी से पास कराओ। याद आया एक लक्ष्य पावरफुल लक्ष्य संसार का सबसे बड़ा पावरफुल जो परमपिता परमात्मा हमारा पिता है, वो हमारे सामने है। पर वहाँ तो हम फल खाते हैं, सुख लेते हैं। बस खाना ही खाना है, दुख क्या चीज होती है, किसीको फीलिंग ही नहीं है। सुख का ही हैं, राज्य ही ऐसा है। पर यहाँ पर जैसे कहते हैं ना मंजिल मिली दौड़ी पेहनी.... एकदम पावरफुल संकल्प आया मुझे पाना ही है, मुझे जाना ही है, मुझे हर घड़ी और अंतिम साँस तक बाप के साथ रेहना है। इसी में एक जो नशा होता है ना वो अलग ही होता है। हाँ, भल जाने की खुशी भी है क्योंकि जाएंगे तो फिर क्या होंगा। इस सृष्टि से सारे दुख दूर हो जाएंगे। सृष्टि परिवर्तन हो जाएंगी। ***जाने की भी खुशी है क्योंकि सच्ची....। सभी बच्चे पूछना चाहते हैं कि जब उस जन्म में साकार में श्री कृष्ण बनूँगा, राजा बनूँगा भल ये नशा था, क्योंकि दिखता ही वही था, पर बीच में ये पार्ट बजेगा ये बिल्कुल बाबा ने बुद्धि का ताला नहीं खोला,*** ये एक गुप्त रखा क्योंकि ये तब मालूम पड़ा जिस दिन शरीर छूटा और फिर चार रोज के बाद ऊपर गए ऊपर जाके पूरी फिल्म दिखाई कि अब ये पार्ट बजने वाला है।

27.02.2021

(54) चार रोज के बाद ऊपर गए बाबा?

हाँ बिल्कुल जब तक शरीर रहेंगा भई तब तक नीचे ही रहेंगे ना, तो उसके बाद फिर ऊपर जाकर मालूम पड़ा अब जब ऊपर चले गए तो सारे रहस्य मालूम भी पड़ गए। अब क्या रहा, ***आधार नहीं रहा कि बच्चों को बता देवे कि अपन वापिस आएंगे।*** अगर सच में ऐसा होता अगर पहले से ही मालूम पड़ता बताके जाते तो छंटनी तो नहीं होती

। ***अलग-अलग धर्म तो निकलते ही नहीं धर्मों की रचना भी बहुत जरूरी थी। इसलिए बाबा से बड़ा चतुर सुजान कोई नहीं होंगा।*** आज मालूम पड़ा बाबा ने भेजा बच्चे अभी आपकी तैयारी नींचे है। अभी आप जाओ नींचे अभी आपके कर्तव्य है। बड़ी खुशी हुई... देखा सब... बच्चों को रोते हुए भी देखा, बाबा चले गए अब क्या होगा? अब क्या होगा... बहुत बच्चे रोए पर बच्चियों को जो भी निश्चय बाबा जैसे भी कराना है आप कराना। बहुत बच्ची निश्चय बुद्धि भी हुई बापका पूरा संभाला कर्तव्य किया। अब क्या हुआ फिर मालूम था ना वो... लेकिन सबकुछ मालूम पड़ा ऊपर जाके। वंडरफुल बात थी। ऊपर जाके जब झटका लगता है मालूम पड़ता सब कुछ रहस्य खुलते हैं... ***अरे बाबा आपने पहले क्यों नहीं बताया अपन एक हिंट तो देके आते। बाबा बोलते हिंट तो दिलवा दिया था "आदि सो अंत" हिंट ही तो दे दिया ना और कितना दोगे आप।*** आदि सो अंत... आदि सो अंत। अब ये आदि सो अंत मतलब क्या? सभी बच्चे इसी सपने में खोए हुए कि जैसे आदि में साक्षात्कार हुआ अंत में भी होंगा। इतना ही एक ही एक ही एक ही तार बुद्धि में फिट करके बैठे हैं। वो तो होगा ही आदि सो अंत में बहुत सारी चीजें आ जाती हैं। समझ में आया...?? इसलिए बाबा क्या कहते हैं ये सृष्टि ही एक रहस्यमयी है, जितना खोदोगे उतना मिलेंगा समझ में आया ना सभी को।

16.03.2020

(55) बाबा जो एक अव्यक्त मुरली चली थी जिसमें बाबा ने कहा कि बाप दिल्ली में आये दिल्ली में आए कितनी बार बोला..

वह बड़े रहस्य की बात है। और बच्चों को लगता है कि बाबा को समझ नहीं आ रहा है कि वो क्या बोल रहा है। वही मतलब वो सर्वशक्तिवान सृष्टि को एक ऐसे...ऐसे... ऐसे... ऐसे.. चलाने वाला वो अगर बैठके कह रहा है कि मैं दिल्ली में आया हूँ.... और आप कह रहे हो - नहीं आप मधुबन में हो, तो यह गलत है। क्योंकि दिल्ली में आया। बाबा बार बार कह रहे थे दिल्ली में चलना है.... दिल्ली में चलना है.... ***दिल्ली मतलब क्या ?? परिस्तान !! बार-बार क्यों याद दिला रहे थे? बच्चे अभी समय आ गया है दिल्ली में चलना है। लेकिन बच्चों को क्या लगा?? भूल गया ! बाबा भूल गया..... !! ये बड़ी वंडरफुल बात लगी। भई बाबा भूल गया कि बाबा कहाँ बैठा है।*** बाबा पूरा दिल्ली में ही बैठा। मतलब दिल्ली मतलब परिस्तान !! ये पूरा विश्व क्या बनने वाला है?? दिल्ली बनने वाला है। पूरा परिस्तान में.... अब दिल्ली में बैठा हूँ। उसने कहा - अब क्या मैं दिल्ली में बैठा हूँ ? दिल्ली मतलब क्या? हैना ! लेकिन वही फिर जाकरके पूरा.... अब सतयुग में थोड़ी कहेंगे यह माउंट आबू है....या फिर ये बॉम्बे है.... या फिर ये कलकत्ता है। ऐसे थोड़ी कहेंगे !! एक होंगा। एक दिल्ली, अब दिल्ली में चलना है....। ***बाबा बार-बार केह रहे हैं अब दिल्ली में चलना है। बच्चे कहते हैं नहीं आप मधुबन में आये हो....। अरे मधुबन में तो शरीर बैठा है लेकिन अब दिल्ली में चलने की तैयारी आ गयी। ठीक है बच्चे ! इसीलिए कहते हैं ना.... अब बच्चे बाप के भी बाप बन गए। ठीक है !!* *बाबा एक लिमिट तक बच्चों को बाप बनाता है फिर***

छोड़ के भाग जाता है। भई उनका अपना तरीका है अपना।* अच्छा बच्चे और पूछो...। (दिल्ली मतलब वो भी होता है ना बापका दिल लेने वाली है दिल्ली। तो वो जो साकार तन है वह भी दिल्ली हो गया ना !)हाँ वो भी दिल्ली हो गया। देखो बापकी दिल पर चढ़ने वाले, बाप की दिल लेने वाले, बाबा दिल्ली में आए हैं, लेकिन बाबा बार-बार बार-बार उस समय राजधानी का इशारा कर रहे थे। बाप की दिल लेने वाले दिल्ली वाले, बाबा ऐसे कहते थे। बाबाकी दिल लेने वाले दिल्ली वाले। लेकिन उस समय बाबा बार - बार, बार-बार राजधानी की तरफ इशारा कर रहे थे। ***पर बाबा के रहस्य को बाबा के राज़ को हर कोई समझ नहीं पाएंगा। बेहद की बात है। वही कह रहे हैं बच्चे बाबा का एक शब्द और उसके कई अर्थ निकलते हैं,*** और अब ये तो यही हो गया ना.... मानो भक्ति मार्ग में भी ऐसे ऐसे कहानियाँ भी हैं ऐसे ऐसे है। अगर कहें जैसे साकार में भी अपन ने कहा मम्मा को... मम्मा मुँह खोलो अंडा खिलाएंगे तो बच्ची ने तुरंत कर दिया आआआ । मतलब बच्ची पास क्योंकि उसको बाप पे पूरा निश्चय था। वो बाप पर पूरा निश्चय था। और आज के बच्चे कहेंगे चलो चलो यह खाओ। अरे....! ये तो बिल्कुल भगवान नहीं हो सकता भई। ये तो यह कहता है ये खाओ। उसके पास बिल्कुल मत जाना। और बाप लेता है परीक्षा...। देखो बाप को भी पता था बच्ची को भी पता था, कि मेरा बाबा कुछ भी गलत नहीं होने देंगा । वो बच्ची उसने वो नहीं देखा कि बाबा कर क्या रहें है ? उसने ये देखा कि मुझे बाप पे पूरा निश्चय है। और आज के बच्चे क्या बोलते हैं, नहीं बाबा आप यहाँ नहीं यहाँ....। समझो बाबा क्या केहना चाहते हैं। ये समझने की बातें हैं। ***ये उसी में से बाबा केहते हैं, कोटों में कोई... कोई मैं कोई। (पूरा ब्राह्मण संसार नहीं समझ पाया) अच्छा बच्चे और पूछो और पूछो....***

16.03.2020

(56)*किसी आत्मा ने कहा -बाबा यह वाली बात ना दिल्ली वाली बात.... एक बार एक बहन ने भी बोला था यू ट्यूब पे कि क्या अब सर्वशक्तिमान को बताना पड़ेगा कि वह दिल्ली में है कि मधुबन में आएं है??*

देखो वंडरफुल !! ***पूरी सभा में बाप की इंसल्ट कर रहे हो.....। दिल्ली में है मधुबन में है। उसको पता नहीं है। वो कौन है? सबसे पहली बात हम इसको भूल गए हैं कि वो है कौन। उसको बताना पड़ रहा है, कि नहीं आप मधुबन में बैठे हो*** आप दिल्ली में नहीं बैठे हो। उसमें ही बाप एक एक सभा में बैठने वालों की परीक्षा ले लिया। उसी में ही पेपर ले लिया। जैसे आज-कल भी क्या करतें हैं? ***पेपर कैसे लेते हैं बताओ? कोई केहते हैं हमें अलग से बुलाया जाएंगा, फिर पेपर लेंगे, फिर अपना इंटरव्यू लेंगे। लेकिन कैसे लेते हैं? बाबा ने तो पूरी सभा का ले लिया !! एक ही बार में ले लिया पूरी सभा का !! और मेजोरिटी majority फैल मेजोरिटी फैल।*** कोई कोई बच्चा ऐसा होंगा। अब वो पेपर ले रहा। उन्होंने कहा मधुबन में पेपर लो। मधुबन में भी लेकर आए ना.... लेकर आए ना। बच्चे कहते हैं मधुबन में लो पेपर। ले लिया !! पूरी सभा का ले लिया पर उसमें किसी को सवाल ही समझ में नहीं आया। (किसी ने कहा -बाबा वो क्या बोलते

हैं कि गुलज़ार दादी का जो ब्रेन है ना, शांत हो गया था उसको समझ में नहीं आ रहा था इसलिए....) अच्छा बाबा का ब्रेन तो कभी शांत नहीं होता है। उस समय क्या है अगर शोभा बच्ची (गुलज़ार दादी) का जो ब्रेन है.... वो तो बाबा के आने के बाद तो औटोमाटिकली शांत ही हो जाता है। वो क्यों चलेगा? चलाएगा कौन? बाबा का चलेगा ना भई अपने प्यारे बाबा का चलेगा। मतलब बच्ची भूल गई बाबा नहीं भूला ना..... !!! उस समय बाबा ने सबका उधर ही बैठे-बैठे क्या ले लिया? मेजॉरिटी का पेपर ले लिया। मेजोरिटी का पेपर बाबा ने ले लिया, ***लेकिन किसी बच्चे ने सोचा बाबा की इस बात में बड़ा राज है। हाँ वो बच्चे पास हो गए। बाबा ऐसे नहीं बोल सकता। बाबा की इस बात में तो बडा कुछ रहस्य है जो बाबा बार-बार कह रहे हैं बाबा दिल्ली में आया है, वो बच्चा पास हो गया है।*** कहते ये बाबा को क्या हो गया भई ये बाबा भूल गया है। बाबा भूल गया..... कितनी बड़ी बात बोल दिया भई।बाबा वो, वो क्या कहेंगे जो एक चींटी को भोजन देना नहीं भूलता..वो इतनी बड़ी बात भूल जाएगा, कि बाबा कहाँ पे आए हैं कहाँ पे नहीं आए हैं। सोच कैसे सकते हैं? (वो आवाज़ चेंज नहीं हुआ था ना बाबा। दादी
का जो आवाज़ चेंज हो जाता है बाबा के आने के बाद वो नहीं हुआ था उस समय, तो उनको ऐसा लग रहा था कि बाबा आया कि नहीं आया ये कन्फूजन) ***ये सबसे बड़ा वंडरफुल है। देखो ये बाबा बड़ी कमाल की चीज है। मतलब अब वो सिद्ध भी नहीं कर सकते.....कि बाबा थे या नहीं थे।क्यूंकि खुद फसेंगे फिर।*** खुद किस लिये फसेंगे? भई आप खुद केह रहे हो कि बाबा आप मधुबन में बैठे हो, दिल्ली में नहीं बैठे हो। मतलब कि आप केह रहे हो कि, बाबा आप हो.....। फिर आप ये नहीं केह सकते कि बाबा हो या नहीं हो..... पता नहीं कौन था भई। कौन आकरके बोल गया कि मैं दिल्ली में आया हूँ?? ये भी तो बड़ी वंडरफुल बात है ना। यह सब भूल गए थे कि बाबा ने उस समय पेपर लिया था।(कभी सिद्ध नहीं कर सकते वो कि बाबा नहीं था वो)भई आप खुद बोल रहे हो कि बाबा आप इधर बैठे हो।"बाबा" आप बोल रहे हो ना..... परन्तु अपने आप ही उसमें कंफ्यूज में है पता नहीं दादी बोल रही होगी ये? बाबा निकल गया होगा। पर ये पूरी सभा में ये भी नहीं केह सकते कि दादी आप मधुबन में हो !! मतलब फिर बाबा निकल गया !!! और आवाज सेम थी बच्चे उस समय। शरीर की अवस्था एसी थी कमजोर। जैसे बाबा आते हैं बोलते बोलते बोलते बोलते बाबा कि और बच्चों की आवाज जो थोड़ा सा सेम हो जाता है, क्योंकि मेजोरिटी अगर इस बाजे से बोलेंगे और फिर वही.... वही धुन निकलेंगा। बाबा भी बजा रहा है, शोभा बच्ची (गुलज़ार दादी) थोड़े समय के लिए बजा रही है, अब जो.. वो भी उसी बजे से बजायेंगे, वो भी उसी बाजे से बजायेंगे तो जो धुन हैं ना वो मिक्स हो जाती है फिर वो सेम सेम निकलती है। इसमें कोई बड़ी बात नहीं है।

04.11.2020

(57) बाबा एक मुरली का पॉइंट है जिसमें यह बताया गया है कि इस ब्रह्मा का तो फोटो भी नहीं रखना है। अगर यह ब्रह्मा याद पड़ेंगे तो और ही पतित बन पड़ेंगे।

बिल्कुल सही पॉइंट है, कारण.... देहधारी का फोटो रखने से किसकी याद आएंगी? देहधारी की !! .....***शिकील को याद करने से क्या मिलेगा? और ही पतित बनेंगे देहधारी को याद करने से। आज तक किसको याद करते आए हैं? देहधारी को याद करते आए हैं ना!!*** अभी आप बच्चे सोचते हैं, दादा भी आते हैं, बाबा भी आते हैं। दोनों आते हैं। पर बाबा थोड़ा कम सुनाते हैं... यह दादा बड़ा अच्छा सुनाता है। प्यार दोनों से हो गया है। तो शिकिल को मत देखो! अब यह देखो कि फरिश्ता आया है।***वह पुराना शरीर छूट गया। वो पतित शरीर छूट गया है। अब जरूरी नहीं है कि वही शिकिल वाला फरिश्ता आएगा। वो जा चुका है अभी क्या है? फरिश्ता आया है !!*** तो फरिश्ता आया है तो क्या बन जाएंगे? फरिश्ते बन जाएंगे क्योंकि बच्चे, एक दूसरे के शिकिल याद करेंगे या पतित शरीर को याद करेंगे तो क्या बनेंगे? ***अगर मानो फोटो को देखेंगे सोचेंगे.... यह ब्रह्मा ने भी तो शादी किया था। इसके भी तो चार पाँच बच्चे थे। यह भी तो विकार में गया था। हम गए तो क्या बड़ी बात है।*** तो यह क्या है, पतितपना ही तो है...तो निकाल दो फोटो।अब ये देखो कौन आता है? एक पारलौकिक पिता और एक सूक्ष्म वतन का फरिश्ता आता है , ठीक है। कौन आता है? ***सूक्ष्म वतन का फरिश्ता आता है।* *लेकिन दादा लेखराज को क्यों याद करें?*** (आ तो जाती है ऑटोमेटिक) नहीं नहीं वह पुराना है। बाप के आने के बाद देखो! शिकिल को नहीं.... ***अंदर की सीरत देखो। देह को नहीं आत्मा के गुण को देखो।*** बापकी शिकिल से क्या लेंगे? अभी ये जो बाप बता रहें हैं... बापको याद करें... प्यारे बाबा को याद करेंगे तो क्या बन जाएंगे? बाबा हमें क्या बनाने आया है? पावन... है ना !!

19 .07.2020

(58) मनसा इतनी पावरफुल हो बच्चों को रास्ता देने के निमित्त बने!

आप बच्चों की मनसा शक्ति इतनी पावरफुल हो इतनी पावरफुल हो के उन बच्चों को रास्ता देने के निमित्त बने। ***मनसा पावरफुल। ऐसी ऐसी पावर निकल कर जाए जो बच्चों के सारे दरवाजे खुल जाए। कोई देहअभिमान में आकर अपना दरवाजा अपने आप बंद कर के बैठे हैं। खोल ही नहीं रहे।*** लेकिन कोई बच्चे ऐसे भी है जो ढूंढ के थक चुके हैं पर किरण नहीं पहुंच पा रही। तो आप ऐसे ज्ञान सूर्य बनो, जो थक चुके हैं उनके आगे आपकी एक उम्मीद की किरण जाकर के चम चमाए, और उनको रास्ता दिखाए।***आपके मनसा में इतनी ताकत है इतनी ताकत है, आपकी मनसा एक जीते जाते इंसान को तैयार कर सकता है। तो रास्ता देना एक छोटी बात है।*** मनसा सतयुग में क्या है, मनसा में आया बच्चा पैदा करना है।***इतना बड़ा चमत्कार इस पृथ्वी पर देखो बिना विकार में जाए मन में आया बच्चा पैदा करना है, हो गया। तो आपकी मनसा में कितनी ताकत होगी! सोच कर देखो। अपनी ताकत को जागरूक करो।*** क्योंकि जितनी बच्चों में ताकत है ना इतनी किस और में नहीं है और यथार्थ रीति है, अर्थ सहित है ज्ञान सहित है बल सहित है... याद सहित है। और जब दो पावर जब एक साथ मिलती है तो क्या नहीं हो सकता। अपनी मनसा की ताकत को ढूंढो। अपने मनसा की

ताकत को जागरुक करो। एकाग्रता की शक्ति से सारी ताकत एकदम अंदर आएगी और सारी ताकत का दरवाजा एक ही है, बाप की एकाग्रता। जहां बाप पर टिक गई वहां यह दरवाजा खुल गया। मेरा बाबा। क्योंकि एकाग्रता आपके मन में योग में बैठकर बाप की बुद्धि, मन में बाप की याद रहे। एकाग्रता होकर के बाप को याद करें। बुद्धि में तो क्या आएगी....एकाग्रता। और जब आपका खुलेगा दरवाजा तो बाबा की सारी शक्ति आपके मनसा को पावरफुल कर देगी। ओर आपकी मनसा पावरफुल होगी तो आप का वातावरण पावरफुल होगा। चारों तरफ में ***आप यहां बैठकर कहा विलायत में भी किसी को रास्ता दिखा सकते हो। ऐसी ताकत है।*** सोचो, ऐसा नहीं एक जगह बैठ कर के एकाग्रता, नहीं ....मन की एकाग्रता। जहां बिंदु रूप में टिक गए वहां बिंदु से ताकत आना शुरू हो गई। बस इतना करना है। ***10 मिनट तो छोड़ो 5 मिनट की भी एकाग्रता सर्व शक्तियों को धारण करने में समर्थ है। 5 मिनट, कई बच्चे 4 घंटे, कहते हैं 4 घंटे बैठकर के योग किया। नहीं किया। शरीर को बिठाया 4 घंटा और लोस किया नुकसान किया।*** 4 घंटा आप कितनी स्थूल रूप से सेवा कर सकते थे। आपकी एकाग्रता भी बढ़ेगी, मनसा भी पावरफुल होगी, ताकत भी मिलेगा। क्योंकि जिससे आप ॐ..... करते हो तो सारी शक्तियां आना शुरू हो जाती है। गेट खुल जाता है। बाबा का आवाज पहुंच जाता है और बाबा परमधाम से लहराते हुए आपके पास आ जाता है। और फिर करते रहो....ॐ.....। ओ परमात्मा से मुझ आत्मा में सारी शक्तिया आ रही है बन गया ॐ...। ठीक है बच्चों करो आधा घंटा भी करो, 15 मिनट भी करो, भल जब भी समय मिले करो। फिर देखो कमाल। भल कभी भी दिन में रात में, है ना। कभी भी मिले शुरू हो जाओ। बड़ा अच्छा। ओम में मैं आत्मा अपने परमपिता परमात्मा को बुला रही हूं। ओ परमात्मा मुझे आत्मा के पास आ जाओ और मुझे में सारी शक्तियां भर दो। जिससे मैं आप समान बनके पूरे विश्व को आप समान बना दु। ***एक ओम उसके बीच में स्वमान लिया तो डबल पावर हो गई। एक स्वमान की एक ओम।*** कहते हैं ना बच्चे स्वमान लिखो ऐसे करो ऐसे करो, क्या होगा! जब तलवार है उसमें धार नहीं तो क्या मतलब। स्वमान लेते हैं बाबा कुछ फायदा नहीं हुआ। होगा कैसे जब धारण नहीं है। तलवार रखी है ना, और जब तलवार और धार दोनों होती है तब सारे विक्रम विनाश। और एक मेरा बाबा और मैं बस। जैसे ही ओम का उच्चारण करते हैं तो उसमें स्वमान लो कोई भी। मैं आत्मा अपने प्यारे परमात्मा से सारी शक्तियों को लेकर पूरे विश्व को प्रकाशमय कर रही हूं। इससे पूरा विश्व जगमगा रहा है और पावरफुल बन गया है। स्वमान लेना बहुत बड़ी बात है। ***दोनों एक साथ पावर मिल जाएगी।***

24.01.2021

(59) बाबा का महावाक्य है के माउंट आबू से आबू रोड तक क्यू लगेगी, लेकिन बाबा अभी माउंट आबू को छोड़ दिया तो वो कैसे लागू होता है?

क्यू लगेगा ना ! माउंट आबू को छोड़ दिया है, क्यू लगेगा ये लाइन है ना अभी संगम युग पूरा नहीं हुआ, तो फिर देखते रहिए। ***ड्रामा की सीन को देखते रहिए। बाबा कहाँ**

जाएगा।* अब एक बात बतावे जो बाबा को चारों तरफ बुला रहे हैं, निमंत्रण देने जा रहे हैं ना, क्या कर रहे हैं बाबा चारों तरफ घूम के हर एक बच्चे को निमंत्रण दे रहे हैं। ***बाबा ने अबू को छोड़ा क्योंकि बाबा ने क्या कहा एक आबू नहीं है। पूरे भारत का कोना कोना अबू होंगा और हर अबू मैं क्यू लगेगी, लंबी क्यू लगेंगी।*** बाप ने एक मधुबन का नाम नहीं लिया। अब बाप के बच्चे कहाँ कहाँ बैठे हैं। ***अच्छा जो बच्चे मधुबन में नहीं पहुँच पाएंगे। उनका क्या होगा?*** (बाबा उधर ही, मधुबन बनाता है) बनाएगा ना बेचारे नहीं पहुँच पाएंगे। किन्ही को तकलीफ है, कोई नहीं चल सकते। किनके पास धन नहीं है तो क्या करेगा बाबा? ***अगर मानो आपका बच्चा तकलीफ में है। भल आपके शरीर में ताकत हो या नहीं तो आप क्या करेंगे तो जाएंगे ना अपने बच्चे के पास जाएंगे ना, तो ये तो बाप है ! जब एक लौकिक बाप को लौकिक बच्चे से इतना प्यार होता है तो ये सोचो पारलौकिक बापको अपने बच्चों से कितना प्यार होंगा ! तो जब प्यार इतना है तो क्या करेगा, बच्चे से मिलने जरूर जाएंगा।*** बाप की एक दृष्टि....

24.01.2021

(60) तो माउंट आबू में और पार्ट है बाबा का?

ये पहले नहीं बताएंगे, ठीक है। हर एक बात में रहस्य है और बाप के महावाक्य सत्य वचन है। ठीक है। ***दृष्टि का पार्ट पूरा हो जावे.... फिर मधुबन की क्यू भी लगेंगी।*** अच्छा बच्चों मिलते रहेंगे। ओके सब तैयार है ना? चले फिर मिलेंगे।ओके ओम!

15.04.2020

(61) किसी आत्मा ने पूछा--अच्छा बाबा एक जैसे ड्रामा 5000 साल का है और ये कहते है जैसे क्रिस्चियन से 3000 साल पहले स्वर्ग था अब वो उनके क्रिश्चियन के कैलेंडर के हिसाब से 2000 साल तो हो चुके हैं तो यह 5000 साल कैसे होता है वो कभी गणित बराबर कहीं भी बैठता नहीं हैं .

गणित, गणित बरोबर बैठेगा कैसे? गणित कैसे? उसमें कहा 3000 साल पहले क्या था.... स्वर्ग था और किस के हिसाब से 2000 हो गए।(कैलेंडर के हिसाब से उनका क्रिस्चियन का कैलेंडर) हो गया 2000 । ***3000 पहले मतलब क्या? हो गया।(लेकिन अभी तो 2012-13 .....2020 भी हो गया ----ये कैलेंडर तो उनके हिसाब से बना हुआ क्रिस्चियन के)*** तो बाप के कैलेंडर से देखे ना !! उनके कैलेंडर से क्यों देखते हैं भई! उनके कैलेंडर में कुछ , ये तो इनका कैलेंडर कब बना? अभी ....100-200 साल में कैलेंडर बना। ***अब बाप के अनुसार कैलेंडर देखें । ठीक है। अब 2000 साल पहले थोड़ा बहुत ड्रामा होता है। पर बहुत कुछ तो 100 वर्ष में निपट जाएगा।*** बहुत कुछ , सब कुछ.... बस स्वयंवर रहेगा। लेकिन स्वयंवर तक वो भी संगम युग में ही आएगा । ठीक है ना!!

15.04.2020

****(*62) किसी आत्मा ने कहा --इतना जल्दी हो जाएगा, बाबा जैसे 100 साल का संगम युग है अब 2034 में 100 साल पूरे हो जाएंगे तो आप कितने वर्ष में स्वयम्वर में बैठेंगे??****

*** स्वयंवर में कितने पर बैठेंगे । आजकल दुनिया में कितने वर्ष में शादी होती है भई। (21 साल, 25 साल के अंदर हो जाती है) *हाँ उधर 25 साल के ऊपर होंगी ।***((तो 100 साल के ऊपर ही हो गया फिर संगमयुग।)) हाँ भले! ये एक्यूरेट नहीं है ।100 साल से ऊपर एक्यूरेट मतलब क्या ? ***जैसे दुनिया में भी देखो.... महत्व ज्यादा सवा महीने का होता है*।**किसका? हाँ समझ में आ रहा है कुछ?? नहीं आया?? महत्व ज्यादा सवा महीने का होता है !! आपको आ रहा है, तो इसको समझा देना।हर चीज में देखना। लेकिन सवा महीने में पूरा हो जाता है पूरा... संगम। पर ऐसा नहीं है कि सवा महीने पड़े है तो सब बचे रहेगे । ***दुनिया साफ मतलब क्या ? 100 साल में मतलब ऐसा नहीं है कि भई स्वयंवर तक .....कौन बैठा रहेगा? कौन देखेगा ?उनके लिए तो 100 साल के अंदर ही है ना.....उनके लिए 100 साल में ही है। अब सतयुग आएंगा तो धीरे-धीरे धीरे से आता है ।*** कलियुग आता है तो धीरे-धीरे से आता है ।अब द्वापर युग जब आता है तो क्या होता है ?? ऐसा तो नहीं है कि भई एक साथ ही कलियुग आ गया। बाबा कहते हैं बच्चे तीन हिस्सा सुख मिलता है और एक हिस्सा दुख मिलता है ।सतयुग भी धीरे-धीरे धीरे आएंगा।अब मानो ये घर है -टुट गया ,टूटता भी धीरे धीरे हैं पर टुट बहुत जल्दी जाता है। है ना! लगाए दो-चार फटाफट टूट जाता है।लेकिन जब बनता है.....क्या लगता है ? ***बनने में टाइम ।अब पूरा नक्शा तो तैयार हो गया।100 वर्ष के अंदर सब खाली हो जाएंगा। भई इसको बनने में कितना समय लगेगा।स्वयम्वर तक वो बन जायेगा, और फिर उसके बाद उदघाटन हो जाएगा ऐसे करके।।*** हाँ भई अब एन्ट्री हो गईं सतयुग में क्या हो गई?.... ***फिर वन-वन से शुरू हो गया। समझ गए?***

22.06.2020

(63) मुरली में बोला था सबसे पहले मम्मा का अच्छा पोजीशन बन गया था। शरीर के सब दुःख दूर हो गए कर्मातीत अवस्था को पा लिया।और दूसरी मुरली में बोला ---***तुम्हारी मम्मा , सूक्ष्म वतन में गई , उनका हिसाब किताब स्थूल वतन में पूरा हो गया ।***

देखो , हर एक जन्म का हिसाब किताब उस जन्म में पूरा होता है । मम्मा का हिसाब-किताब कहा, देवकी का थोड़े कहा। ***तो देवकी का हिसाब किताब अलग है और मम्मा का अलग..?***हिसाब किताब जन्म के साथ होता है । देखो..., मम्मा सूक्ष्म वतन में चली गई...हाँ सूक्ष्म वतन में जाएगी ना पहले ।***लेकिन ये तो नहीं कहा परमानेंट सूक्ष्म वतन**

में चली गई और फिर वापस नहीं आएगी ।* अच्छा तो फिर वो क्यों नहीं है.... जब अपन ने कहा था अपने ***बाबा ने भी कहा था कि मम्मा बड़े घराने में जन्म ली है । कहाँ लिखा है उधर ? नहीं लिखा ना , बस फिर, अगर पकड़े गए तो.... कुछ नहीं पकड़ पाएंगे ।*** लिखा है , मम्मा का हिसाब किताब पूरा हुआ...अब सूक्ष्म वतन में चली गई । यही लिखा है ? (हाँजी) मम्मा का हिसाब किताब पूरा हुआ...अब सूक्ष्म वतन में चली गई । तो सही तो लिखा है ना.... । मम्मा का हुआ ना..... (देवकी का नही)। मम्मा का हिसाब किताब पूरा हुआ... उस समय, ***उस जन्म में उतना हिसाब किताब जितना था उस शरीर के साथ पूरा हो गया । अब मम्मा सूक्ष्म वतन में चली गई। फिर कहा , बच्चो..... मम्मा बड़े साहूकार के घर में एक राजा जैसे घर में जन्म ली है । ये लिखा है? नहीं लिखा । नही लिखा । यही तो....!! पूरा नहीं सुनते हैं तो उलटे लटक पढ़ते है ।*** पूरा सुनाना चाहिए । पूरा सुनना चाहिए। ***तो ये भी कहा था कि आने वाले समय में मम्मा गुप्त रूप में बड़ी सेवा कर रही है । (हाँ ये* भी कहा था ।) हाँ फिर सूक्ष्म वतन में होता है..... लेकिन स्थूल वतन में जन्म *।*** कहा था, आगे मम्मा ज्ञान में नहीं होगी। बिल्कुल सही था। पिछला जन्म ज्ञान का था ही नहीं । कहाँ पिछले जन्म कोई ज्ञान में थी? नही थी । वो सिर्फ मम्मा के लिए कहा गया था।* आज के बच्चे समझते है जो भी शरीर छोड़ते है वो बड़े घराने में जाएंगे और अज्ञानी के घर में जाएंगे। क्योंकि मम्मा के लिए कहा था । बच्चों, मम्मा अगले जन्म में ज्ञान में नहीं आएगी । वो तो मम्मा के लिए कहा था। और किसीके के लिए थोड़े कहा।***एडवांस पार्टी क्या है? एडवांस, मतलब जिसको बुद्धि में पूरा ज्ञान हो आदि -मध्य - अंत का। उसको कहते है एडवांस ।*** जिसकी बद्धि में आदि - मध्य - अंत का ज्ञान हो , वो एडवांस में है । समझे , इस चीज़ को? ज्ञान का अर्थ भी क्या ? याद हो । बाप के साथ हो । तो पहले मम्मा ज्ञान में नहीं थी , अपना जन्म पूरा करना था.... वो हिसाब क्या... क्या...। आर्थिक रूप से जो भी.... बार-बार धन नहीं.... धन....बड़ा सहयोग दिया ।***फिर से आकर के बाबा बन गए गरीब निवाज़। क्या बन गए ? (फिर से गरीब निवाज़) तो शरीर भी तो ऐसा चाहिए !! कैसा चाहिए? गरीब...।*** शरीर भी ऐसा चाहिए और बाप भी गरीब निवाज़ है। तभी गरीब निवाज़ सिद्ध होंगे इसलिए ... और... और... क्या कहा उसमें? और बोलो।

22.06.2020

(64) इसमें कहा कि सबसे पहले मम्मा का अच्छा पोजीशन बन गया। कर्मातीत अवस्था को पा लिया । शरीर के सब दुःख दूर हो गए।

हाँ,बिल्कुल सही। सबसे पहले मम्मा का अच्छा पोजीशन । ***पोजीशन सिर्फ स्थूल वतन का नहीं होता है , सूक्ष्म वतन का होता है । वहाँ लग गया ठप्पा... मम्मा अच्छे पोजीशन में है....पुरुषार्थ के पोजीशन में है । कोई तो पोजीशन देखते हैं , पद की । लेकिन मम्मा के लिए ये शब्द, पद नहीं । लेकिन संस्कारों की पोजीशन। "जीहाँ बाबा" की पोजीशन । "हाँजी*** बाबा".... देखो... कभी मम्मा ने ये नहीं कहा ये कैसे होगा ? ये कैसे होगा ? ना... । मेरे बाबा ने कहा है ना....। आज भी इधर से चाहे पूरा

डिलीट कर देवे , पूरा खत्म कर देवे , पर बाप नहीं होगा। खुद भूल जावे पर बाप कभी नहीं भुलेगा। और ये चैलेंज है साइंस को भी चाहे कुछ भी खत्म कर देवे, पर इधर से अपन और बाबा बिलकुल नहीं निकल सकता। क्योंक ये एक सूक्ष्म में हो रही है अंदर, अंदर, अंदर, अंदर तक फोल्डर में है, जो कोई डिलीट नहीं कर पाएगा। ***बाबा ,फिर साइंस भी रिसर्च करेगी क्या उसपर भी*** उसका अब नौबत ही में नहीं आएगा क्योंकि साइंस भी अब स्वाहा ।यज्ञ में है ना....वो भी अब यज्ञ में इतनी सी आहुति है....जो कि डालनी है। साइंस कब तक है ? जब तक बत्ती है । बस , बत्ती ख़तम , साइंस
खत्म। ठीक है , सब बच्चो को कहना याद प्यार । मीठा मीठा याद प्यार ।***सतयुग के झाड़ दिख रहे है।सभी अपनी अपनी स्तिथि मजबूत बना लेवे। कैसे बना लेवे ? पावरफुल बना लेवे ।***

13.04.2021

(65)) जगदंबा को समझदार कहा गया है, विद्या की देवी, ज्ञान की देवी कहा गया

जगदंबा को समझदार कहा गया है, विद्या की देवी, ज्ञान की देवी कहा गया है ***क्योंकि वो एक सेकंड में हर एक बच्चे की बुद्धि को परख लेती है भल किसीके मन में कितना भी घोटाला चल रहा हो ,भल सामने नहीं बोलेंगी पर समझ में आएंगा..*** .. हाँ बच्चे सुधर जाओ ठीक है। और किसी किसी को तो पता भी नहीं पड़ने देंगी कि सबकुछ जानती है आपके बारे में और बच्चा सामने वाले को उल्लू समझता रहेंगा।***अरे ये तो शिकिल से ही भोली है... इसको क्या मालूम होंगा इसको थोड़ी कुछ पता होंगा!! ये भूल जाते हैं कि ये तुम्हारी माँ है। सब कुछ जानती हैं।*** अच्छा और बताओ...

04.04.2020

(66) कृष्ण को जन्म देने वाली जगदंबा है तो श्रीकृष्ण को जन्म देने वाला पिता कौन होगा?

सबसे पहले बात बताते हैं। जन्म देने वाली का ही गायन है। पिता का नहीं है। ***देखो बच्चे पिता मतलब कौन "शिवपिता"। एक विश्व में एक ही ऐसा बच्चा है जिसका पिता शिव है। बाकी सब देहधारी । बाकी सब देवी देवताओं के बच्चे होंगे। एक श्री कृष्ण है, जो शिव का बच्चा होंगा।*** समझ गए डायरेक्ट परमात्मा की संतान है। डायरेक्टर.... इसलिए तो गायन है। उसके बाद वो क्यों है? क्युंके वो नेक्स्ट टू गॉड क्यों बोलते हैं? क्योंकि वो उसकी संतान है। बाकी सब देवी देवताओं की है। बाकी सब किसकी हैं ? देवी देवताओं की है। ***एक नेक्स्ट टू गॉड् जो है वो शिवका है। समझे...!!***

04.04.2020

(67) एक्यूरेट याद किसे कहते हैं याद की सही विधि क्या है?

एक्यूरेट याद....सबसे बड़ी बात अपने को आत्मा समझने वाली है एक्यूरेट याद। जैसे आप कोई भी कर्म कर रहे हैं तो आप..... या फिर भंडारे में जा करके भोजन बना रहे हैं। क्या.. * **मैं आत्मा इस शरीरको चलाकर क्या कर रही हूं। अपने बाबा के लिए अपने बच्चे के लिए क्या बना रही हूँ। मैं आत्मा इस शरीर को स्नान करा रही हूँ । मैं आत्मा इस शरीर को ध्यान रखती हूँ , पर मैं हूँ आत्मा। आत्मा के साथ किसकी याद आएंगी? मेरा बाबा भी कैसा है? है वो भी आत्मा पर वो कौन है? वो परम आत्मा है।*** जैसी मैं मेरा बाबा वैसा। जैसा मेरा बाबा वैसी में आत्मा एक्यूरेट विधि ये है। ***दूसरी विधि है बड़ी सहज विधि, जो बार-बार बाबा कहते हैं, 8 घंटा याद करो। क्योंकि अपन जानते हैं.... 8 घंटा इस विधि में कोई रह नहीं पाएंगे। दूसरी विधि है बाबा से बातें करना, चलते-फिरते घूमते फिरते.... बाबा ये कैसे होंगा? बाबा.... बैठके बाबा से बातें करना। हैना... अपने स्वमान में रहना। देखो.....मुझे किसने पसंद किया है। सबसे बड़ा सम्मान क्या है। मुझे किसने पसंद किया है?*** दुनिया के कोई व्यक्ति कोई बड़ा पसंद कर ले तो कितना अभिमान आएगा। लेकिन अपन को अभिमान नहीं स्वमान आये । ***चेक करो..... मुझे पसंद करने वाला कौन है? मुझे पसंद तीनों लोकों के स्वामी ने पसंद किया है। कितनी बड़ी बात है। मैं आत्मा मेरा परम सौभाग्य है, कि मैं अपने प्यारे परमपिता के इस कार्य में बाबा ने मुझे अपना बना लिया। मुझे इतनी अच्छी सेवा दे दी। अपना बनाके मुस्कुराना सिखा दिया। वाह !!*** बड़ी अच्छी लाइन है। किसी ने अपना बनाके । मुस्कुराना सिखाया किसी ने कौन ? मेरे प्यारे परमपिता परमात्मा ने मुझे अपना बनाया.... गले लगाया और मुस्कुराना.... सिखा दिया। कितनी प्यारी बात है देखो। तो अभिमान नहीं। स्वमान में स्थित हो जावे। बाबा मैं निमित्त हूँ। कराने वाले मेरा बाबा है। अगर ये स्वमान आएंगा तो कभी अभिमान नहीं आ सकता। बाबा कोई भी कुछ भी हो जावे। बाबा से कहो, बाबा मुझे कभी अभिमान नहीं आवे। मैं अपने स्वमान में रहूँ और मुझे देह अभिमान नहीं आए कि मैं ये कर रहा हूँ। क्योंकि बच्चे अपने आप को सब चेक कर ले, कि बाप के बने बिना क्या थे.... और बाप के बनने के बाद क्या बन गए है ?उसमें चेक करें.....उसमें चेक करके चेंज करें। चेक करें कहाँ मुझको अभिमान तो नहीं आ रहा है। बाबा से बातें करें। बाबा मुझे किसी भी चीज में अभिमान नहीं आना चाहिए, क्योंकि मुझे पता है। मैं आपके बिना कुछ नहीं कर सकता या मैं आपके बिना कुछ नहीं कर पाऊंगी.... ना मैं... कुछ हूँ ही नहीं आपके बिना।अच्छा कोई पूछे तो बतावे कुछ है अपने आप में कोई है? गुण किसने दिए? तराशा किसने? हीरो किसने बनाया? ***जीरो से हीरो किसने बनाया? मेरे बाबा ने बनाया। किसने बनाया? हाँ ये मत भूले !!*** जैसे धीरे धीरे अभिमान आ जाता है। तो अभिमान में.... जैसे किसी में हवा भरते हैना तो वह फूल जाता है और फिर जिसने उसको फूला दिया तो फिर उसको जीरो समझने लगते हैं। ये तो कुछ नहीं। मेरे सामने मैं तो परम ज्ञानी हूँ , क्या हूँ परम ज्ञानी हूँ , क्या हूँ?? क्या सोचते हैं? मैं कौन हूँ ? क्या कहतें हैं ? परम ज्ञानी मतलब..... अरे बड़े ते बड़ा ज्ञानी तो वो है। आप परम ज्ञानी हो तो वो परम से भी परम ज्ञानी है। प्यार में रहे.... प्यार से करें.....। अगर कोई आपकी गलती भी बताता है, तो भी....

अच्छा ठीक है। हम ध्यान रखेंगे। यह स्वमान है । नहीं मैं कभी गलत नहीं हो सकता.... मैं संपूर्ण हूँ,ये अभीमान है। आप चेक करें कहाँ वो व्यक्ति बोल रहा है। कहाँ मेरे में ये चीजे तो नहीं आ गया। अच्छा... आ गया है तो हम उसको क्या करेंगे, परिवर्तन करेंगे। ***सेवा करो पर स्वाभिमान में रहकर अभिमान में नहीं। ठीक है। बच्चों क्योंकि हर एक बच्चा चेक कर लेवे।*** मैं बाप से पहले क्या था? और बाप का बनने के बाद क्या बन गया हूँ । अच्छा और कुछ और कुछ पूछना है।

04.04.2020

(68) और बाबा एक यह है कि जैसे ब्रह्मा बाबा का संपूर्ण शरीर वतन में दिखाई देता था, तो क्या सभी ब्राह्मणों का संपूर्ण शरीर वतन में है क्या?

बिल्कुल नहीं ! ***आत्माएं सब अपना साथ में लेकर घूमती है।*** संपूर्ण शरीर मतलब क्या? ब्रह्मा के द्वारा क्या? (स्थापना) अब अपन और वो दोनों अलग-अलग है। अलग-अलग मतलब क्या? 3 देवताओं की रचना है। "ब्रह्मा" , "विष्णु" , "शंकर"। ठीक है। ऐसा थोड़ी कहेंगे कि जितनी भी आत्मा को उधर..... अगर होता तो गायन किसका होता? सबका होता। अगर सबका संपूर्ण शरीर वतन में होता तो गायन सबका होता। ऐसा क्यों नहीं है?क्योंकि हम तो बाद में बने भई, *सृष्टि में आए बाप ने जब प्रवेश किया तब " ब्राह्मण" बने..... "ब्रह्मा" बने। उससे पहले तो संपूर्ण वतन में बैठ गया।* **अब ऐसा नहीं देखो.....हर एक स्थूल शरीर वाली आत्मा का अपना लाइट का शरीर होता है। अपना भी था स्थूल था....सूक्ष्म भी था। *पर उस सूक्ष्म से अलग था।*** कैसे अलग था बताते हैं.... जब अपन ने शरीर छोड़ा तो कैसे निकले? इस मिट्टी को थोड़ी लेकर निकले थे।***लाइट के पुतले को लेकर निकले थे***
ना। तो इस लाइट का उस लाइट में मिल गया तो बन गया संपूर्ण।*

04.04.2020

(69) तो आपका लाइट का निकला और उस लाइट में संपूर्ण बन गया। लेकिन जो बाकी आत्मायें है उनका फिर सम्पूर्ण कैसे ???

हाँ अब बताते हैं। आप हो आपका ***आपके अंदर ही संपूर्ण लाइट का शरीर है। जैसे आप शरीर छोड़ेंगी , बाबा के पास जाएगी। धर्मराज के पास जाएंगे वो ऐसे फवारा मारेंगा तो क्या बन गए। (संपूर्ण)*** बस! शरीर छोड़ दिया। मतलब संपूर्ण।

04.04.2020

(70) लेकिन अभी तो संपूर्ण शरीर नहीं है ना

नहीं नहीं। अभी तो संपूर्ण नहीं। कोई ना कोई कमी कमजोरी लेकर इधर अटकती हैं। ऐसा नहीं ***दुनिया वालों ने भी शरीर छोड़ दिए तो संपूर्ण बन गए हैं।*** नहीं! ऐसा नहीं

होंगा। कारण क्यों ? क्यूंकि ***वतन में हर एक आत्मा का हिसाब किताब है।*** अगर ऐसा होता एक उधर(सूक्ष्म वतन में) होता । एक इधर होता (स्थूल वतन में), तो हर एक आत्मा का होता। ***तो हर एक आत्मा उधर संपूर्ण होती। इधर पतित शरीर छोड़ती तो उधर मिलती। तो बहुत सारे ब्रह्मा हो जाते। एक थोड़ी होता। गायन किसका है? एक का तो है ना। आनेको का गायन थोड़ी है***।* एक का गायन है ना !!आनेको का थोड़ी है, फिर समझ में आया।

29.01.2021

(71) बाबा संस्कार परिवर्तन कैसे होगा?

संस्कार परिवर्तन हो रहे हैं...होंगे ।***जैसे-जैसे समय नजदीक आता जाएंगा। अब कितना तो हो गए ना*** इतने समय से बाबा के बच्चे तो बन रहे थे, पर परिवर्तन.....! परिवर्तन की शुरुआत तो अब हुई है। परिवर्तन का पर्वत तो अब उठा है तो सब परिवर्तन के पर्वत के नीचे आ रहें हैं। आ गए ना बच्चों? ये बाबा के अलावा और कोई ऐसा प्यार नहीं दे सकता। सब जानते हैं सबको पता है, मेजॉरिटी मधुबन वासियों को भी पता है कि बाबा उधर आ रहे हैं। सबको पता है, पर फिकर क्या है, क्या फिकर है? खुद की है ****अगर हम चले गए तो मधुबन छूट जाएंगा। हर बच्चा डरा हुआ है।**** अच्छा पहले बताओ मधुबन बाप ने बनाया... या बाप को मधुबन ने बनाया? किसने बनाया बाप ने बनाया। ****भई जब अपन उधर थे तो कुछ भी नहीं था, सब झाड़ियाँ थी । एक वो छोटी सी हवेली थी। उसमें भी बड़े-बड़े जाले लगे हुए थे। सारे बच्चे गए सबने सफाई किया। एक रात सोने की व्यवस्था हुई। अगले दिन फिर लगते रहे। इतनी सफाई होने के बाद गवर्नमेंट आके बोलती है, नहीं नहीं आप निकलो ये हमारी है ब्रज कोठी !!**** ब्रज कोठी में कहते हैं अब आप निकलो ये हमारी है क्योंकि धीरे धीरे धीरे देखो उस समय जब मधुबन बना पानी भी नहीं था। कहते हैं ना जब पांडवों को खंडहर भवन दिया गया तो वहाँ बंजर भूमि थी। तो पानी भी नहीं था... लेकिन केहते हैं ना अर्जुन ने तीर मारा तो बारिश हुई पानी भी आ गया। ऐसे ही उस समय हुआ सभी बच्चे भट्टी में बैठे तीसरे रोज पानी आ गया। वंडरफुल चमत्कार अपन ने देखा। ऐसे बरसात आई सब बच्चों ने पानी इकठ्ठा किया। बाबा अब घर बनेंगा... अब घर बनेंगा। पानी इकट्ठा करके उसीसे नहाते थे, कभी कभी उसको पीते थे ऐसा समय था। ****कुछ नहीं था। इतना बड़ा आप देख रहे हैं ना एकदम प्लेन था, दूर-दूर तक कोई नहीं दिखता था उधर। ये ऐसा मधुबन था। आज देखो मधुबन !**** एक ऐसा बनाते थे ना घर उसमें भी बड़ी खुशी होती थी। वहाँ इतने बच्चे छत के नीचे रहेंगे। वंडरफुल था वो सीन पर सब खुशी-खुशी थे, एकदम नांचते थे सेवा करते थे। ****उस समय देखो सब ने पत्थर तोड़े अपन ने भी तोड़े।**** कौन थे... किसने किसने तोड़े नाम लेवे...??(हाँ बाबा लो...) नहीं नहीं नहीं नहीं... अच्छा जिसने जिसने पत्थर तोड़े ना इधर तो बैठे हैं, जाले साफ करने वाले भी बैठे हैं। अभी पत्थर तोड़के दिखाओ जिसने तोड़ा वो सब थे। ठीक है बच्चे वो सीन ऐसा था क्या बतावे सभी बच्चे आए कितने... अभी तो बड़े बड़े हो गए। पहले इतने छोटे थे। एक एक हाथ में आता था... छोटे-

छोटे हाथ थे। ऐसा ***शुरुआत का जो सीन था, बड़ा प्यारा था। सब पानी इकट्ठा करते हैं नई नई चीजें.... वंडरफुल ड्रामा....! क्या कहेंगे उस सीन को आज देख रहें हैं।*** ऐसे झोपड़ी बनी पहले घास फूँस की बनी । सब बच्चे वो लकड़ियाँ उठा उठा के लेके आते थे। पहले एकदम सिंपल जो घास फूंस होता था ना उसकी बनाई । नीचे आपके यहाँ तो ये (टाइल्स) भी है पक्का। तब तो मिट्टी थी। मिट्टी को पेहले ऐसे दबाते थे। (ऊपर गोबर का लेप लगाते थे...)हाँ याद आ गया !!

29.01.2021

(72) उस समय बाबा कितनी संख्या थी??

उस समय ये लगभग साढ़े तीन सौ बच्चे थे। उससे थोड़े ज्यादा थे ***400 से थोड़े कम थे।*** लेकिन कोई कोई बच्चे देखो परीक्षा सबकी मिलती है। परमात्मा अगर दाता है तो सबकी परीक्षा भी लेंगाना। धीरे-धीरे धन इतना था, खत्म होता गया... भई सबको बराबर मिलता था, जो भी कपड़ा है। अपन देखो नए कपड़े नहीं पहने जो था उसको ऐसे सिलाई करके पेहनते थे लेकिन बच्चों को अच्छे अच्छे मिलते थे। ***जैसे ही बैगरी पार्ट आया तो क्या हुआ? क्या हुआ? अब तो इनके पास कुछ नहीं है, लगता है अब ये सब कुछ खत्म हो जाएंगा। क्या हुआ छटनी हो गई।***उस समय एक बच्चा आ रहा था... जब सब जा रहे थे "***जगदीश बच्चा" नंबर वन बच्चा है, आने वाला है, तैयारी कर रहा है।*** वो बच्चा आया और कितने बच्चे जा रहे थे छोड़के बाबा को। (तो बाबा अभी भी ऐसे तो नहीं होंगा ना...?)अभी क्या रिपीट होगा ***!*अब तो इतना विस्तार होंगा जब तक 33 करोड नहीं हो जाते ना तब तक कोई कहीं जाने वाला।*** यहीं है और जो जाएंगे ना थोड़े टाइम घूमफिर के फिर आ जाएंगे। कार्तिक की तरह। गणपति और कार्तिक दो बच्चे हैं... कहते हैं ना दोनों की परीक्षा लिया। गणपति ने क्या कहा, उसने क्या कहा? पहले ढूँढ के आओ पूरे विश्व में चक्कर लगाके आओ तो गणपति ने क्या किया? गणपति नाम क्यों पड़ा क्योंकि वहीं पे ही गढ़ गया। गणपति माना गढ़ गया और कार्तिकेय जो घूमता रहा, घूमता रहा, घूमता रहा, कार लेकर चला गया। कार्तिकेय ने क्या किया अपनी कार उठाई और पूरे विश्व में घूम के फिर वापस आ गया, वो बन गया कार्तिकेय! तो पहले बताओ कार्तिकेय कौन-कौन है? गणपति बनना है, देखो गायन गणपति का है ना, पूजा किसकी होती है ज्यादा? जो गढ़ गया वो गणपति। जो कार लेके चला गया कार्तिकेय। कौन सी कार शरीररुपी कार! ये तो सबको आती है चलाना। (नहीं बाबा हमें चलानी नहीं आती...)मतलब सब गणपति बैठे हैं। जो कार चलाने में परफेक्ट नहीं है, वो गणपति बन गए। सब को तो आती है ना कार चलानी आती है? (शरीर रुपी तो चलानी आती है ना बाबा...) हाँ तो शरीर रूपी.... गणपति के पास क्या दूसरे वाली कार थी। उसके पास भी तो शरीररुपी ही कार थी ना। ****गणपति माना जो अपने.... वो क्या क्या बोलते हैं बाबा आप चाहे कहीं पर भी भेजो पर मैं रहूँगा आप ही के पास में, वो है गणपति।**** जो सदा बैठे रहे।* ***कार्तिकेय ने क्या किया नहीं, अभी थोड़ा और घूमके आ जाता हूँ... फिर थोड़ा एक दो जगह और चेक कर लेता हूँ ना कहीं उधर भी तो नहीं आए हो आप। ठीक है चेक***

करके आओ। आ करके फिर कहाँ पर आया?? लेकिन मूर्ति छोटी बन गए। वो कार लेके गया तो घूमते घूमते घूमते उसकी कार बन गई छोटी और *गणपति बैठे बैठे बैठे हो गया बड़ा। अभी पूजा भी किसकी होती है ? गणपति की ! क्योंकि बैठे-बैठे मोटा हो गया।* किसके पास बैठे बैठे ? दूसरी बात जो कार्तिकेय कार चला चला के घिस गई तो मूर्ति छोटी बन गई तो पूजा छोटी होने लग गई। छोटी मूर्ति की पूजा होती है ना कभी-कभी, वो भी गणपति के साथ याद करते हैं भई हाँ एक उसका भाई कार्तिकेय भी था ऐसे याद करेंगे। तो अपने को
क्या बनना है, गणपति बनना है, ***ठीक है आप निश्चिंत बन जाओ ना !*** बाबा जो अच्छा हो, बुरा हो, जैसा भी हो, मैं आपका हूँ। ये निश्चय, ये दृढ़ निश्चय, ये पक्का निश्चय। मैं चाहे कैसा भी हूँ, मैं अच्छा हूँ... बुरा हूँ... बुद्धू हूँ... समझदार हूँ... पर जो भी हूँ आपका हूँ । ये निश्चय रहेगा ना तो प्यार इतना बढ़ेंगा...वाह मेरा बाबा इतना प्यारा ठीक है बच्चों समझ गए। ओके वाह बच्चों वाह !!

29.01.2021

(*73) बाबा मुरली में कहते हैं कि मैं जो हूँ जैसा हूँ , मुझे कोटों में कोई पहचानते हैं...अभी भी ऐसे ही रिपीट होंगा...*

देखो बच्चों वो रिपीट होंगा। एक बात बताओ जो भक्ति करते हैं। उनको क्या चाहिए? वो केहते है भगवान हमें इस दुख सुख के चक्कर से बाहर निकालो,उनको ज्यादा टाइम क्या मिलती है? ***भक्त भी बाप को ज्यादा नहीं पहचान पाएंगे वो सिर्फ उनको मुक्ति और जीवन मुक्ति ही चाहिए, जो उनको चाहिए, वो मिल जाएंगी।*** ज्यादा पहचानने के चक्कर में कौन आते हैं ? लड़ाई किस में होती है, बच्चों में होती है... नहीं मम्मी आपसे ज्यादा प्यार करती हैं, मेरे से कम करती हैं, लगता है मैं उसकी बच्ची नहीं हूँ । ऐसे होता है। अगर थोड़ा प्यार किसी को ज्यादा मिले तो नहीं नहीं मैं उसकी बच्ची नहीं हो सकती क्योंकि वो प्यार उससे करते हैं। ***झगड़ा बच्चों में होता है। भक्त तो फिर भी एक संगठन बनाकर के बड़ी-बड़ी चीजें करते हैं। तो हमें लायक बच्चे बनना है। इतने प्यारे बच्चे बनना है, जो सभी कहें - वाह बच्चे वाह और बाप कहें वाह बच्चे वाह ऐसे बच्चे और किसी के हो ही नहीं सकते इतने प्यारे बच्चे !!*** तो अपने को ऐसा बनना है। ***देखो धीरे-धीरे ना सब राज खुलेंगा। एक एक चीज बताएंगे लेकिन किसको बताएंगे जो लायक बच्चे होंगे।*** ठीक है...??? क्या बनना है लायक बच्चे बनना है। ***अभी समय है बापकी प्रत्यक्षता पूरे विश्व में जाएंगी और देखो एक तरफ से तो जब परमधाम में जाने से पहले सभी को बाप का परिचय मिलेंगा कि परमात्मा आया है बच्चे बैठे बैठे अनुभव करेंगे, साक्षात्कार होंगा फिर सभी का शरीर छूट जाएंगा।*** छूटेंगा... और देखो चारों तरफ दुख के बादल होंगे और आप बच्चे खुशी में नाच रहे होंगे बाबा की याद में होंगे...गोदी में होंगे।तो ऐसे भाग्यवान बच्चे हो ना?? कितने भाग्यशाली हो देखो !! सारी दुनिया दुख में त्राही-त्राही कर रही है और आप बच्चे कहाँ बैठे हो। सुख के झूले में... प्यार के झूले में। ठीक है बच्चों ओके सब खुश हो? टोली कहाँ रखा है?

29.01.2021

(74) बाबा लकड़ियाँ इकट्ठा करके जो घर बनाया था, झोपड़ी बनाई थी.. उसके बाद क्या हुआ फिर?)

उसके बाद बच्चे जाने लगे।***जगदीश बच्चा आया फिर इतनी सेवा विस्तार हुई फिर धीरे-धीरे.... देखो बच्चे गए क्यों क्योंकि कहते हैं नहीं हम भूखे नहीं रेह सकते इनके पास कुछ नहीं है। बाबा ने एक परीक्षा लिया।** लेकिन जो आर्थिक रुप से सहयोग करने वाले थे वो बहुत बच्चे धीरे धीरे धीरे धीरे अपने आप आने लगे। क्या सेवा....!! सभी बच्चियाँ फिर क्या करने लगी फिर बाहर जाकरके बाबा का परिचय दिया और क्या कहेंगे। बहुत प्यारे प्यारे बच्चे जाने वाले भी आएंगे और जो शरीर छूट गया, वो भी आएंगे। ठीक है जो छोड़के चले गए... देखो बच्चे वो तो कितने प्यारे थे, छोड़के भले गए, पर उससे पहले क्या क्या हुआ, उससे पहले तो कितना बच्चों ने साथ दिया तो रिटर्न तो आएंगा ना। बच्चे सब खा खाके चले गए देने कौन आएगा? देने कौन आएगा, और देखो उस समय सभी ने.... खाया किसने आत्मा ने शरीर के द्वारा। जमा कहाँ हुआ? यहाँ पे और अब सभी बच्चे जो कहेंगे ना ये लो ये पूरे बड़े हॉल की चाबी लो, ये पूरे गाँव की चाबी लो। वो बच्चे भी आएंगे। आप सोचो उनका भाग्य क्या होंगा ! ***जिसने ज्यादा खाया है, वो ज्यादा देंगा। ये समय बड़ा नजदीक आ गया है।*** पावरफुल बन जाओ, थक तो नहीं गए। थका कौन-कौन है? ***इस वर्ष में थकना मना है।***

29.01.2021

(75) बाबा वो जो साकार में जिन्होंने विरोध किया था अभी वो बच्चे...

मत पूछो, वो भी अपने ही है। क्या पूछेंगे वो भी तो अपने ही बच्चे हैं, वो कहाँ जाएंगे ! क्योंकि पहले भी विरोध हुआ जो अब ज्यादा करेंगे तो कहाँ जाएंगे। ऐसे नहीं... तो वो पास में आकरके जो करीब का बनके विरोध करेंगे, ऐसे बच्चे भी हैं इसलिए अभी उनका नाम नहीं पूछना नहीं तो दिल में होएगा। अरे ऐसे बच्चे भी हैं!! वो भी तो बाप के बच्चे हैं ना... पूरा ध्यान तो रहा ना उनका, के ये बाबा इधर बैठा है इसको निकालना है। पूरा ध्यान तो रहा। ***देखो मेजॉरिटी बाप की प्रत्यक्षता तो तब होंगी जब ये सब एक झटके में बंद होगा और ये होंगा होने वाला है, ये पक्का है, निश्चित है। क्योंकि अब टावर "शिवजी" का आ गया है, और जब उसका आता है ना तो सबके टावर फैल ठीक है। अभी "शिवG" का टावर है। सारे "G" खत्म एक "शिव G"***

29.01.2021

(76) बाबा पहले जैसे आदि में "ओम" ध्वनि करके साक्षात्कार में चले जाते थे वो अभी भी पार्ट होगा?)

हाँ, बिल्कुल होगा क्योंकि पहले बाप ने बार-बार कहा है। ***एक टीवी बंद करेंगे तो दूसरा चलाएंगे ना। दोनों ही साथ में चला देंगे, दोनों में अलग-अलग सीन सीनरियाँ है किसको ध्यान से देखेंगे। दोनों पे ही ध्यान नहीं जाएंगा।*** जब तक एक टीवी बंद नहीं होगा तो दूसरा चालू नहीं होगा।

29.01.2021
(77) कितना टाइम है उसको बाबा अभी?

जल्दी कर देवे! बताओ ?? पर अभी देखो बीमारी आई तो कहते बाबा थोड़ा बंद करो ना सेवा करेंगे। करोना... करोना अब क्या हुआ, अगर ये बंद हो गया ना तो जल्दी से नहीं चालू करेंगे फिर। जबतक फिर सब को क्या होंगा,***सब ओम करेंगे सब साक्षात्कार में जाएंगे। सब को पार्ट दिखेंगा और सबको भगवान आया है ये साक्षातकार होंगा।*** ये तो पक्का है, होना है होके रहेंगा।ओके बच्चों समय हो गया है।

29.01.2021
(78) फिर जब सतयुग शुरू होगा तो फिर सब क्या भूल जाएंगे कि हम कलयुग में थे? और पालना वाले उससे पेहले आएंगे?)

तो देखो बच्चे पालना वाले पहले ही तो आएंगे ना । तो कृष्ण की पालना वो स्वयं थोड़ी करेंगा !! ***पहले आएंगे ना पालना वाले तो पहले ही रहेंगे ना ।*** हाँ लेकिन अगर ये कहेंगे कि वो पवित्र आत्माएं है...। ***हाँ बच्चे हैं जिनको बापका परिचय है बच्चे वही रहेंगे लेकिन प्योरिटी से एक ही आत्मा सतयुग का फर्स्ट प्रिंस जन्म लेंगा। कुछ समय पालना रहेंगी । धीरे धीरे धीरे धीरे सब की स्मृति विस्मृत होती जाएंगी पूरी तरह से। पर वन वन वन से तो तब शुरू होंगा, जब स्वयंवर हो जायेंगा।*** उसके बाद ही मेजोरिटी सभी पावन आत्माएं आएंगी। बातें बहुत है, सतयुग में चले गए ना तो क्या हो जाएगा फिर? सुबह हो जाएंगी... फिर शाम भी हो जाएंगी , फिर सुबह भी हो जाएंगी । फिर इधर बैठे बैठे फिर सतयुग मैं भी चले जाएंगे।

29.01.2021
(79) घुमाके लाओ ना आज बाबा सतयुग में...)

नही नहीं ये शुरू में हुआ था सारी बच्चियाँ वहीं रह गई... शरीर छूट गए। तीन तीन दिन तक वापस ही नहीं आए । अब कहते हैं बाबा ये क्या हो गया, शरीर ही छूट गए । ऊपर से अपना बाबा केहता है जाओ बोलते नहीं यहीं पे ही अच्छा लग रहा है। पता है तब ये साक्षात्कार का पार्ट बाबा ने बंद किया, क्योंकि बच्चियाँ जाती थी, बैठ जाती थी, शरीर छूट गए। क्या करना पड़ा फिर?? तीन ***तीन दिन के बाद 3 दिन के बाद बच्चियाँ नीचे आती शरीर का सिस्टम चलता और कई -कई बच्चियों के तो***

फिर शरीर को जलाना पड़ा क्योंकि ऊपर ही अटक गई।* फिर वो तो जन्म लेंगी ना दूसरा। अब इतना मजा आने लगा उनको साक्षात्कार में कि ऊपर ही बैठ गई इसलिए बाबा ने....

29.01.2021

(80) वो हमारे हाथ में रहता है बाबा ऊपर जाना और नीचे आना?)

हाँ बिल्कुल खुद के ही हाथ में रहता है। अगर आपको शरीर छोडने के बाद वतन में इतना सुख मिल रहा है तो आप दुख में क्यों आएंगे !! ***वो सुख की जो अनुभूति होती है ना वो नीचे आने नहीं देती।*** वो जो प्यार की अनुभूति होती है जो सतयुग में सुख ले रहे होते हैं, वो नीचे खींचता ही नहीं, क्योंकि ये शरीर सबसे बड़ा बंधन है। सबसे बड़ा बंधन है ये शरीर ठीक है। ***बार-बार तो केहते हैं बाबा साक्षातकार कराओ ना... कराओ ना... भई अब अगर एक दो चला गया तो कहेंगे अरे बाबा का बनने के बाद उसको ऐसा हुआ !!*** अभी भी बच्चे क्या कहते हैं बाबा के बनने के बाद वो बीमार हो गया। बाबा से मिलके बीमार हो गया। पहले तो ये बुद्धि से निकालो, यहाँ से किनारा करो। बाप से मिलने के बाद वो ठीक हुआ है। अगर बाप नहीं मिलता तो हो सकता है, आपके बीच में नहीं होता। क्यों भूलते हैं ये सब चीजें , अपन जानते हैं। ये जो गलत बुद्धि में बिठाके रखा है ना ये पहले निकालो। आपको पता है आगे क्या होता ? आज एक वर्ष के अंदर वो बच्चा सबके बीच में हैं। हैना... फिर...? अगर ये सोचते हैं वहाँ से मिलके आया है तब ऐसे हुआ है तो सबसे बड़ी मूर्खता कहेंगे । वहाँ से मिलके आया है तब वो सबके बीच में है। तभी वो सबके बीच में हैं। इससे तो आपका निश्चय इतना पक्का होना चाहिए कि जो....। आपको पता है, परिस्थिति क्या होती ? पूरा बॉडी सिस्टम खत्म फिर सारी जिंदगी सेवा करते रहते। ऐसे तो नहीं देख पाते । ये बाप की कमाल है। इनका सिस्टम क्या था, आपको अभी भी कहेंगे ऐसा नहीं अगर जिस दिन दिखा देवे उस दिन निश्चय करेंगे? सीधा ऊपर लेकर जाए पूरा सीन दिखावे...?? देख लो...। अगर अब भी निश्चय नहीं। आज वो एक
वर्ष के अंदर आपके साथ है... नहीं तो साथ में होता मगर होता नहीं, शरीर ही होता और शरीर का क्या करते आप? जानते हैं वो पेपर कितना बड़ा था? पर ऐसे बच्चे बाप के हैं जो कहतें है बाबा से मिला तो बीमार हुआ। ***नहीं.... बाबा से मिला तो आज वो ठीक है। मिला तो आज वो बोल रहें हैं, देख भी रहें हैं, नहीं मिलता तो ना वो बोलता ना वो देखता।*** घूमते रहते उसको ऐसे हाथ में लेके और सारी जिंदगी सेवा करते। ऐसे ऐसे चमत्कार हो रहे हैं।

03.03.2020

(81) जब दादी के तन में शोभा(गुलजार) बच्ची के तन में आते थे तो बाप दादा दोनों साथ में आते थे अभी अलग अलग क्यों आते हैं?

देखो बच्चे जब बाप परमधाम से आते हैं तो सूक्ष्मवतन में आते हैं, सूक्ष्मवतन से बाबा फिर स्थूल दुनिया में आते हैं। यह बाप के ऊपर कायदा और कानून है कि बाप बिंदु है तो उसको लाइट का शरीर लेकर आना पड़ेगा सिर्फ बापके लिए है, अपन के लिए नहीं है समझ रहे हो। ***यह बाप के लिए कायदा कानून क्यों है?क्योंकि निराकार है। उसको ना स्थूल देह है ना सूक्ष्म देह है कुछ नहीं है तो वो आते हैं। तो ऊपर से अपन के साथमें आते हैं पर जब अपन आते हैं अपन के लिए बाबा ने ये कायदा नहीं बनाया है कि, मैं भी साथ में चलूंगा जहां भी जाऊंगा।*** बाबा ने अपने (खुदके) लिए बनाया है।***पर जब बाबा और अपन, दोनों आते हैं तो बोलते सिर्फ शिव बाबा है*** आते दोनों है, अपन दोनों आते हैं। अपनको पता पड़ता है ना क्या-क्या बातें हुई ,पूछो कल क्या हुआ? लेकिन अपन के लिए कोई कायदा नहीं बनाया है के अपन अकेले कहीं नहीं जा सकते। समझ रहे हो। सिर्फ बापके लिए ये बाबा ने अपने (खुदके)
लिए कायदा बनाया, और जरूरी क्यों? क्योंकि जब बाबा आते हैं तो पहले.... ***आपको पता है? इस संसार को बनाने से पहले बाबा किसको बनाता है? सूक्ष्म वतन को बनाता है और उसमें तीन शरीर लाइट के बनते ही हैं और आपको यह भी बता दे कि तीनों को अपना शिवबाप ही यूज करता है*** कैसे? देखो पहले अपन के तन में आते हैं। अपन का भी यह नहीं सोचना कि एक ही शरीर है। सूक्ष्म शरीर पहले हैं बाद में अपन आये हैं। जैसे अपनका शरीर है ऐसे ही विष्णु का भी रूप उधर है जो सतयुग में आएगा। और ***जब शंकर का लेते हैं तो क्या होता है पता है पूरी मशीनरी चलती है। मशीनरी मतलब? जिसको महाकाल कहते हैं।*** बहुत रहस्य हैं खुलते जाएंगे, खुलते जाएंगे देखते जाना बड़ा मजा आएगा, बड़ा मजा आएगा। तीनों के द्वारा ही बाप कर्तव्य करते हैं और वो अपना परमात्मा है वो शिव, हर एक आत्मा का पिता है। देखो यह नियम अपने बाप के लिए हैं शिव बाप के लिए क्यूंकि वो क्या है निराकार है। ना वह साकार है ना वो आकार है वो क्या है? वह निराकार है। ***तो निराकार कैसे आएगा? पहले आकार लेगा फिर ये साकार लेगा, और अपन तो दोनों बनते हैं साकार भी बनते हैं तो आकार भी बनते हैं, निराकार तो परमधाम में जाकर बनेंगे तो, तो अपन के लिए नियम लागू नहीं है। अपन आ सकते हैं। कभी भी आ सकते हैं चलते फिरते कभी भी आ सकते हैं।***

03.03.2020

(*82) दूसरा सवाल होता है बाबा आप ऐसे कैसे आ सकते हैं?*

सबसे पहली बात, सबसे बड़ा उलझन वाला जो सवाल है शिकिल को देखते हैं। इसकी शिकिल में क्यों आया? इसने क्या किया? यह कौन है? कहां से आई है? ***कोई नहीं जानता पर जिसने लिया है वो जानता है ना।*** आप बच्चों के 84 जन्म थे आप तो नहीं जानते थे। आप तो 84 लाख जानते थे भक्ति मार्ग में, 84 किसने बताया? बाबा ने बताया। तभी तो जाना। भक्ति मार्ग में अनेको को भगवान मानते थे।भगवान एक है यह किसने ज्ञान दिया? बाबा ने। अपन के पास था ?***अपन भी गीता पढ़ते थे, पढ़ते थे वहीं चलते**

थे। ये सारा ज्ञान किसने दिया? ज्ञानी किसने बनाया? ज्ञान सागर ने बनाया।* तो फिर क्या हम बच्चों को बाप से भी ज्यादा ज्ञान हो सकता है? अगर हो सकता है तो आज बतावे। जितना आप स्टॉक करेंगे ना, वो चार गुना ऊपर चढ़ाके आपको देगा। वो सागर है और सागर से एक बाल्टी अगर किसी को मिल गई और अपने आप को सागर समझे तो उसकी गलती कहेंगे ।***सागर है..... और सागर कभी अपनी चाबी देता नहीं है। खजाना है वो !!!***

03.03.2020

(83) मेरा बाबा मेरे साथ है, फिर डरने की क्या बात है?

डरना नहीं। सबसे पहले यहां एक लिख दो इधर। मेरा बाबा मेरे साथ है, फिर डरने की क्या बात है? सबसे पहले एक निश्चयबुद्धि। जब अपन उस जमाने में थे ना, तो धन खत्म हो गया, तो ये नहीं पता था कि शाम को खाना क्या बनेगा? ***फिर भी बिल्कुल निश्चिंत थे।*** बाबा बच्चे हैं, आपको भूखा सुलाना है तो सुलाना। पेट भर के खिलाना है तो खिलाना। तो अपने आप ही कहां से आता था कोने कोने से आता था, लहराते हुए यह लो सेवा भोजन बनाओ सभी, वर्तमान समय सब समाप्त होने वाला है। जो है वो बहुत है। चेक कर लो। चेक करो 2 मास का 2 वर्ष का पड़ा है। दो वर्ष के बाद देखेंगे !! निश्चिंत.... बिल्कुल निश्चिंत.... सफलता अब पुरुषार्थ में बढ़ानी है। अब तो सब खत्म होने वाला है। बाप तो बुद्धि योग निकाल रहे हैं... निकाल रहे हैं ना? ***आप उन बच्चों को देखो जो साइंस के साधन में फंसे हैं। वो देखो मेरी गाड़ी मेरी गाड़ी!! इतनी महंगी गाड़ी !नहीं छोड़ूंगा। और जब आत्मा शरीर से निकलेंगी तो एक हैंडल पकड़ा देना गाड़ी का, पकड़ो।*** मैं गाड़ी को नहीं छोड़ूंगा बाबा, गाड़ी को नहीं छोड़ूंगा। यह परीक्षा आने वाली है आ गई है। हर पेपर में पास होना है। ***आप टेंशन लेंगे तो बाप क्या लेगा? अब टेंशन दे दो और अटेंशन ले लो!!*** आज से सोचो बाबा यह सब कुछ आपका। चलाना आपको है, बनाना आपको है आप जानो इस मूर्ति को कैसे बनाना है। बोल सकते हो ऐसा? इतना काफी है। अपना बाबा कौन है? क्या है पता है? चित्रकार !!! क्या है चित्रकार, जानते हो? एक परिवार को मत देखो, एक धर्म को मत देखो, सिर्फ एक को नहीं पूरे विश्व को देखो, पूरी प्रकृति को देखो, और देखो ऐसे ऐसे फूलों को, देखो ये संसार किसने बनाया है? अगर कहेंगे प्रकृति ने बनाया है, तो प्रकृति को बनाने वाला कौन है? यही कहते हैं ना ये कौन चित्रकार है? ***जिसने फूल फूल पे किया श्रृंगार है। फूल में खुशबू कहां से आई? रंग किसने भरा? वो ऐसा चित्रकार है!!*** हद में नहीं बांधो कि वो मेरा है और वो एक ही जगह आएगा। वो पूरे विश्व का पति है, मालिक है, हर एक एरिया उसको चलाना है । वो आपके सामने बैठकर भी बहुत बड़े-बड़े कार्य कर रहा है। बोल आपको रहा है कार्य कहीं और कर रहा है। ***उसकी शक्तियों को पहचानों।*** यहाँ हर एक धर्म वाली बात नहीं करो, मेरा खुदा, मेरा भगवान, मेरा वाहेगुरु, फिर अपने ब्राह्मणों मे भी आ गया मेरा बाबा !! है... मेरा है पर यह नहीं है कि वह एक स्थान पर आएगा। मत बांधो, वो बंधनवाला नहीं है, वो निरबंधन वाला है। ***पारा है पारा जितना दबाओगे उतना फिसल***

जाएगा। वो दबने वाला नहीं है। वो कोई दाना नहीं है, या कोई इंसान नहीं है, या कोई चीज नहीं है पकड़के रखोगे।* वो एक ऐसा पारा है जिसको प्यार है वो उसको हासिल कर सकता है। और जो अपने अभिमान से, अपने घमंड से, उसको हासिल करना चाहेंगे वो वहां से सबसे पहले वहां से खिसकेगा। इसलिए पारे को पहचानो और उसकी पहचान है प्यार। प्यार और पारा एक राशि है। वो प्यारा है और पारा है। वो प्यारा है पर पारा है। वो जब तक प्यारा है तब तक वो पारा आपका है। जहाँ अधिकार, खींचातानी आ गया, तो वो पारा फिर किसी का नहीं है।जाओ अब मैं किसी को नहीं मिलता। वो पारा बड़ा प्यारा है। ***ये जो क्लास हैं ना संगमयुग की लास्ट पेपर, लास्ट क्लास है, इससे अगली क्लास सतयुग है और उसमें गिने-चुने ही जाएंगे। ठीक है हां!! जाएंगे सभी बच्चे जाएंगे ! मगर नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार जाएंगे।***

21.05.2021

(84) अभिमान कम आए उसके लिये कौनसा पुरुषार्थ करें?

बच्चे बहुत सूक्ष्म रुप से ध्यान देने वाला हैं कि चाहे बाबा कुछ भी हो जावे आप मुझे कितना भी ऊपर लेकर जाना पर मेरे अंदर अभिमान नहीं आवे। अपनी चेकिंग, अपना लिखत रूप से। बाप को समय देना तो अभिमान कभी भी नहीं आएंगा। ***अभिमान आते आते कभी-कभी हमें ये लगने लगता है कि मैं सही हूँ और जो ये होता है कि मैं सही हूँ , वही एक अभिमान है। मैं अपने आप को साबित करने में लग जाता हूँ यही अभिमान है।*** अपनी गलती को स्वीकार ना करना यही एक अभिमान का एक बीज पैदा होता है और ***अगर हम किसी से डिबेट करते हैं अभिमान वश तो ये अभिमान की दूसरी सीढ़ी है। हम विजय प्राप्त करना चाहते हैं मैं साबित कर के ही रहूँगा कि मैं गलत नहीं हूँ ।*** मैं इसको सिद्ध करके ही रहूँगा कि मैं गलत नहीं हूँ । चाहे मुझे 4 प्रूफ क्यों ना लेकर आना पड़े झूठे ही सही झूठे ही सही पर मैं अपने आपको सिद्ध करके ही रहूँगा कि मैं गलत नहीं हूँ ये है अभिमान का बड़ा रूप और जब ये फैलता है ना इसकी जड़े दूर दूर तक जाती है और अच्छे-अच्छे घरों को मिटा देती है। जमीन को नहीं छोड़ना कभी भी। अभिमान खत्म कैसे होता है? जब कोई आप से छोटा आपके सामने बैठकर बाप की वाणी पढ़ रहा है, उस टाइम आप नीचे बैठ करके वो वाणी सुनना इससे खत्म होगा अभीमान। अगर कभी कोई आपको ज्ञान की चीजें अच्छी बता रहा है, ये नहीं बोलो मुझे सब मालूम है। अरे हम इसी से ही पैदा हुए हैं ये क्या है? अरे बाप भी अपने बच्चों की बातों को अच्छे से सुनता है। वो बाप है जबकि बाप को मालूम है कि ये जो सुना रहा है, ये इधर से ही निकला हुआ है। ये जो ज्ञान दे रहा है, ये इधर से ही निकला हुआ है। ये जो पुस्तक पढ़ा रहा है, ये इधर से ही निकला हुआ है। ऐसा नहीं कि ***एक नदी को अभिमान हो कि मैं पूरे शहर को डूबा दूँगी। नहीं... क्योंकि उसका बाप बैठा है- "समुद्र"। किस चीज का अभिमान !!*** अपनी सलाह दो मेरा ऐसे विचार है कि ऐसे करना चाहिए, ऐसा है, ये निर्माण होता है फिर जो आगे आप लोगों का प्लानिंग हो जो आपकी सलाह बने उस अनुसार करना पर हमारा ऐसा विचार है कि ऐसा करेंगे तो उसमें बेनिफिट होगा या प्रॉफिट

होंगा ये निर्माणता की निशानी है। ऐसा ही होना चाहिए ये अभिमानी की निशानी है। ***मुझे सब कुछ आता है, ये अभीमानी की निशानी है। मैं संपूर्ण हूँ ये सबसे बड़े अभिमानी की निशानी है।*** मुझे सारा ज्ञान है ये अभिमानी की निशानी है क्योंकि ये ही सोच रावण की थी। और हमें रावण के साथ नहीं राम के साथ चलना है। आता भी है तो भी सुनो ना क्या जाता है। आपको भल आता है पर आपने फिर भी ध्यान से सुना अच्छे से सुना ये आपकी निर्माणता है। और जब उसको पता पड़ेगा कि ये इतना अच्छा ज्ञानी मैं इसको ज्ञान दे रहा था तो चुपचाप सुन रहा था इसने ये नहीं कहा कि मुझे सबकुछ आता है। आपकी निर्माणता से उसका अभिमान टूट जाएंगा, उसका अभिमान खत्म हो जाएंगा। हम क्या केहते हैं हमारी सुनो बस पर हमें सुनाओ नही ये अभीमान है। खत्म करो इस चीज को। आपकी निर्माणता और बापका प्यार इस चीज को खत्म कर सकता है। अगर मेरे मन में ऐसी चीजें आ रही है तो ये सोच लेना कि फिर मेरे में अभिमान अभी है। सुनो, जैसे सुनते हो, ध्यान से। हाँ ऐसा भी नहीं कि कोई एक घंटा आपको सुनाए ही जा रहा है और आप चुपचाप बैठे सुनते ही रहो, ये भी नहीं। समय की लिमिट होनी चाहिए उसमें भी, रॉयल्टी होनी चाहिए। हाँ आपकी बातें सब बहुत अच्छी लगी मुझे अरे आप तो बहुत अच्छे हो,अच्छे ज्ञानी हो, बहुत अच्छा लगा। पर हमारा ऐसा विचार है कि अगर हम इसमें ये चीज और ऐड करेंगे तो अच्छा लगेगा। ये ***स्वाभिमान है,अभीमान नहीं।*** अपने आपको सिद्ध करना, अपने आपको प्रूफ करना उससे पूछ लो उससे पूछवा दूँगा उससे पूछवा दूँगी उससे करवा दूंगी। उससे प्रूफ करवा दूँगी। किसको प्रूफ कर रहें हैं ? जिसको प्रूफ कर रहे हैं ना उसका और भरोसा टूट जाएंगा आपसे। अगर आप 10 लोगों को अपने आपको सही साबित करने के लिए 10 लोगों को 4 लोगों को लेकर आएंगे, तो और भरोसा खत्म हो जाएगा। अगर वही आपकि निर्माणता हुई ये ऐसे मेरा ऐसा विचार नहीं था, दिल दुखा हो तो माफी चाहते हैं। आगे के लिये इस चीज का हम बदलाव करेंगे, ध्यान रखेंगे। ये बापको कहो ठीक है। ये सब चीजें बाबा आगे से हम ध्यान रखेंगे और ये निर्माणता आपकी एक जन्म के लिए नहीं है, कई जन्मों तक चलेंगी।***अभीमानी हमेशा हवा के झोंके में टूट जाया करता है।***एक वो पेड़ जो बड़ा विशाल होता है जिस पर फल नहीं होते। एक हवा का झोंका आया और टूट के नीचे गिर गया। लेकिन एक पौधा जिसपर फल लगे हैं, झुका हुआ है। हवा के झोंके में उसका फल टूटेगा दूसरों को खाने को मिलेगा पर वो नहीं टूटेगा। समझ में आया याद रखो, अगर आप सही हो तो अच्छी बात है। अगर आप सही नहीं भी हो तो आप उसको स्वीकार करके बदल लो। ठीक है समझ में आया।***चेक करो बच्चे सूक्ष्म। यही 108 माला के मणकों की निशानियाँ होंगी।*** अभिमान किसी भी चीज का नहीं। कभी-कभी मैंपन ऐसा आता है कि अपनी गलतियाँ दिखनी बंद हो जाती है, ये नहीं करना है। अगर मुझे 4 बच्चे बोल रहे हैं ना कि आप गलत हो तो स्वीकार कर लो कि मुझे अपने आपको बदलना है। अगर आपका चार्ट चार बच्चों से अच्छा मिल रहा है तो आप ये सोचो मुझे और भी अच्छा बनना है। अगर चार बोल रहे हैं कि आपमें ये कमी है तो मुझे बदलना है और चार ये बोल रहें है कि आप बहुत अच्छे हो तो आप ये सोचो वाह मुझे और भी अच्छा बनना है। ऐसा नहीं हाँ, मैं तो अच्छा हूँ ही ना! मुझे सर्टिफिकेट मिल गया ये देखो मेरा 4 लोगों का सर्टिफिकेट मैं अच्छा हूँ , ये भी

अभिमान है। स्वीकार करो कुछ नहीं है मेरे पास सर्टिफिकेट मैं सीख रहा हूँ, मैं सीख रही हूँ , मुझे अच्छा बनना है। कई कई बच्चे सर्टिफिकेट लेकरके अभिमान में आ जाते हैं, सर्टिफिकेट रख देते हैं और अभ्यास करना छोड़ देते हैं। जब पेपर का टाइम आता है तो सर्टिफिकेट रेह जाता है और फेल हो जाते हैं। मुझे और भी अच्छा बनना है, ***मुझे अपना अभ्यास कभी नहीं तोड़ना है ये स्वउन्नति की निशानियाँ है। स्वयं की उन्नति करनी है तो ऐसे करनी है ठीक है। समझे? भल आप परफेक्ट हो, आपको ये कह रहे हैं, कि आप पर्फेक्ट हो उसका चार्ट है क्योंकि आपकी ये विशेषता है लेकिन फिर उसके बाद अपनी कमी चेक करो कि सूक्ष्म में मैं कहाँ-कहाँ गलत हूँ, तो मुझे इस चीज में भी परफेक्ट बनना है।*** मुझे और पर्फेक्ट बनना है। समझ में आया क्योंकि इस परिवार में ऐसे बच्चे ही शामिल हो सकते हैं 108 के माला....जो हम सभी 108 की माला के मोती हैं, सबको मिलाके चलना है। बहुत प्यार से चलना है, जोड़के चलना है। जैसे ही 108 माला के मोती आ गए, तो डंका बज गया। जागो ! जागो ! जागो ! भगवान आए हैं धरती पर परमधाम में जाने का समय आ गया है। सब तैयार रहो,अब चलना है। अगले घड़ी में विनाश होने वाला है। जैसे ही 108 माला के मोती बन गए तैयार हो गए तो। क्योंकि जितने भी तैयार होंगे ना वो उतने अपनी माला के दानों को और खींचेंगे। जैसे चुंबक होती है, चुंबक ही लोहे को खींचती है ना, क्योंकि चुंबक खुद लोहा है,पर उसमें खींच है,आकर्षण है तो हम सभी क्या है, चुंबक है आरों को अभी बुलाना है तो हमारे अंदर आकर्षण होना चाहिए? स्वार्थवाला नहीं आत्मिक वाला रूहानी वाला, ताकि खींचके अपने आप आ जावे और अपने पास तो बड़ी चुंबक बैठी है।

21.05.2021

(*85) फिर सेवा अर्थ दान करने कि इच्छा रखने वालों के लिए बाबा ने समझानी दी*

जैसे ऐसे होता है ना भल किसको आगे पीछे कोई है, नहीं है उनको लगता है कि अपन को ये करना है तो भल अपन एक बार सोचेंगे भी। लेकिन वो भी उनका, जो निश्चय बुद्धि होंगे, जो एकदम समर्पण बुद्धि होंगे, जो कहेंगे बाबा हमें बस आप चाहिए। वो भी उन बच्चों का. ... ***कोई कोई बच्चे ऐसे कहेंगे हमने इतना दिया, जो देह अभिमान दिखाये उनको बोलो, अपन को बिल्कुल नहीं चाहिए ठीक है क्योंकि अपन बड़े सक्षम है ओके!*** क्योंकि अपन को जरूरत भी नहीं है।* **हाँ भल ये है कि अंतिम घड़ी है। सब कुछ मिटने वाला है। कुछ परसेंट भल जमा होंगा। पूरा व्यर्थ तो नहीं जाएंगा। *तो उनको ये भी केहना कि देने के बाद कई... दान किसको बोलते हैं? देने के बाद भूल जाओ आगे आपकी रिस्पांसिबिलिटी अर्थात जिम्मेवारी बाप निभाएंगा लेकिन दे करके दुनिया में गायन करते हैं, अभीमान दिखातें हैं। हमने इतना दिया तो बाप क्या कहेंगा आपने इतना दिया ये कुछ नहीं है अपनके सामने। इसलिए ऐसे बच्चों का बिल्कुल भी नहीं लेना है जो देने से पहले 15-20 बच्चों को बोलके ढिंढोरा पीटे कि हम ये दे रहे हैं, हम ये दे रहें हैं, एकदम लाइन खींच दो । उनको बोलो कि आप**

दुनिया में मंदिर में दो, गुरुद्वारे में दो, या फिर कहीं और दो जहाँ आपका मन करे। इधर वर्तमान समय किसी को अपन को लेनेका नहीं है दान।* अरे जब बाप देता है तो कभी ढिंढोरा पीटता है कि अपनने आपको इतना दिया। कभी नहीं पीटता ना। ***अगर सही सफल करना है, अगर सही मायने में सफल करना है तो ये जो ढिंढोरा पीटते हैं ना ये पीटना बंद करें*** । क्योंकि अपन भई एक बात बताओ जो खुद ही इतना बड़ा पूरे सृष्टि पूरे संसार को चलाने वाला है ***और आप एक दो कोरोड़ या फिर एक दो लाख जो भी है या फिर जितना भी है, सौ दो सौ जो भी है, एक तरफ सारे संसार को चलाने वाला जिसने आज तक कभी दान लिया नहीं बल्कि दिया ही दिया है। हम ढिंढोरा पीटते हैं कि मैंने फलाना फलाना मैंने इतना दिया !*** कितना इज्जत का फालूदा बनता है। ***एक जो आपको हर घड़ी पाल रहा है और हम उसको बोलते हैं कि हमने इतना दिया है, किसको दिया है? सबसे पहले ये लिखके अपनी बुद्धि में समर्पित होके देवें कि हम दे किसको रहे हैं। अपन को बिल्कुल भी नहीं,*** क्योंकि अपन जानते हैं ये एक मिट्टी के भाव होने वाला है। ये मिट्टी का भी रेट क्या? अभी आने वाले टाइम में मिट्टी भी काम आ जाएंगी, पर ये काम नहीं आएगा । ***जब अपनको मालूम है, कि ढेर लग जाएंगा तो क्या मतलब है और फिर ढिंढोरा पीट के देखे कि हमने ये दिया है। अरे आपके कौड़ी को अपनने हीरे में बदल के दिया है और हम बोलते हैं कि हमने ये दिया है। मत दो, देख लो नहीं दे करके अपना क्या घाटा है क्योंकि अपन को भरपूर है।*** इतने भरपूर है कि जहाँ आप बच्चे बैठोगे, वहाँ सोने की खान होंगी। जहाँ आप बच्चे बैठोगे आने वाले समय में भी वहाँ सोने की खान होंगी तो बापको क्या चाहिए। और इतना होंगा कि पूरा एक राज्य खरीद सकते हो? तो फिर क्या मतलब है।***इसलिए ये बुद्धि से निकाल कर के देवे । चुपचाप देना है भले नहीं तो आप कहीं और जाकरके दान करें, अपन को बिल्कुल नहीं चाहिए। ओके ये सब को बोलते रहना।*** अभिमान की और बाप की बड़ी पुरानी दुश्मनी क्योंकि ***बाप कभी अभिमान नहीं करता कि मैंने बच्चे को क्या दिया और बच्चा अगर एक भी देता है तो बच्चा कितना अभिमान करता है कि मैंने बाप को एक दिया इसीलिए बापकी और अभिमान की जमती नहीं है। कभी नहीं जमती है***।

02.08.2020

(86)बाबा.. जब शिव बाबा मधुबन में आते थे, अव्यक्त वाणी जब चलती थी बाबा की, तो लास्ट में "अच्छा" कहते थे अभी भी बाबा आते है तो पहले "अच्छा" बोलते है, कोई रहस्य है क्या इसमें?

देखो बच्चे अच्छा.... अच्छा का अर्थ क्या है?***भगवान सब अच्छा, अच्छा, अच्छा, बनाके देता है। जो अच्छा होंगा वो क्या बोलेंगा? अच्छा....!! और बाबा कौन है? अच्छा !! बहुत.... अच्छा !! तो आते ही क्या बोलेंगा? अच्छा !! है ना !*** देखो... अच्छा ! क्योंकी बाप कितना अच्छा है। देखो और पहले ही अच्छा क्यों कहते हैं? क्योंकि "वो अच्छा" हमको "अच्छा" बनाने आया है। इसलिए पहले ही - "अच्छा!! मीठे मीठे लाडले

बच्चों".... "प्यारे बच्चों"..... "दिलाराम के दिल पर राज करने वाले बच्चों".....बाबा मिलने आ गया। ठीक है ना ! भल बच्चे कोई-कोई सोचते थे, बाबा उधर आते नहीं, कौन से बाप आते हैं? ब्रह्मा बाबा। देखो बच्चे, उस दौरान दोनों पार्ट चले दोनों..., क्योंकि अपन भी और अपनका बाबा भी। क्योंकि अपने बाबा को चलने का अभ्यास तो है नहीं ना ! चलाते कौन है? या खुद वो आत्मा या आत्मा का संस्कार, या तो फिर अपन। बापदादा ! कब चलते हैं..., तो बाप बोलते हैं..., कब बैठे हैं.....,अपन कब कब भोग लगाते हैं । ***अब बाप के लिए क्या कहते हैं? अभोगता... तो भोग कैसे खाएंगा? कौन खाएगा? अपना बाप थोड़ी खाएगा !! अगर खा लिया तो आभोगता टाइटल खत्म। तो उस समय बाप नहीं अपन भोग खाते थे। शिवबाबा थोड़ा साइड हो जाते थे, क्योंकि सेकंड, सेकंड का काम है।भोग खाया... किनारे हुए... खाने वाला इधर साइड में बैठ गया.... खाया और चला गया। अब जाने में थोड़ा दो सेकंड तो लगेगा ना***, फिर बोलने के लिए बाप आ गए। बड़ा वंडरफुल पार्ट हैं।

02.08.2020

(*87) बाबा...लास्ट में दादियाँ जो भोग खिलाती थी वो....?

वो.....अपन बैठे हैं ना, सबसे बड़ा ब्राह्मण !! कहते हैं ना ब्राह्मण को खिलाओ बडे पेटवाला !! भल सब बच्चे उलझ उलझ करके कई बच्चे निकल गये, यही.... यही राज को बिना जाने। यही राज़ को कि, भगवान आभोगता है, तो वो भोग कैसे खा रहा है? ये नहीं सोचे। बच्चे भोग तो
बच्चे का शरीर भी.... आत्मा भी खा सकती हैं। हैना ? लेकिन बाबा को बोलना था ना, तो अपन आते थे, खाते थे। ****शिवबाबा सिर्फ बोलते थे। एक ही शरीर में दोनो...अच्छा जो आज की दुनिया की गाड़ी है एक गाड़ी में दो बैठ सकते हैं ना ! चार भी बैठ सकते हैं। बैठ सकते हैं, पर चलाएंगा एक ही, दो थोड़ी चलाएंगे ! पर बदली बदली कर सकते हैं ना !!**** ऐसे ही ये भी गाड़ी है, गाड़ी का ड्राइवर अदली बदली हो गया। कोई खाने आ गया.... कोई चलाने आ गया.... कोई बोलने आ गया....कोई चलने आ गया। यह बड़ा वंडरफुल पार्ट है। इसमें कभी मूँझना नहीं चाहिए। इसमें खुदका बुद्धि लगाना चाहिए। जब अपन गाड़ी चलाते है, दोनों को आती है चलानी, तो अदला बदली हो गया। हो गया ना ! तो बाप की भी यह क्या है? गाड़ी है !! बाप आया दृष्टि दिया, अपन आए खाये और चले गए। बड़ा मजा आता है भई !ऐसे बोलते हैं शिव बाबा ने खाया। नहीं अपन ने खाया। बड़ा अच्छा पार्ट है।

02.08.2020

(*88) अच्छा ये जो द्वारिका है , श्री कृष्ण के लिए है लेकिन, मतलब सतयुग के जो 8 जन्म है उसका पूरा सिस्टम नीचे है?*

हाँ पूरा सिस्टम नीचे है 8 नहीं 21 जन्म का पूरा सिस्टम नीचे है। ***पूरा 21 जन्म का सिस्टम नीचे ही है। (ऐसे ही आएगा ऊपर) और वो विमान भी नीचे ही है।*** (तो फिर बाबा फिर साइंस से हम क्या फिर लेकर जाते हैं? जब सब कुछ बना बनाया है तो?) सिएन्स से लेकर जाएंगे... गाड़ी तो बनी हुई है.... ***उसको स्टार्ट कौन करेगा? (वो तो संकल्पों से होगा ना बाबा) बिल्कुल नहीं !! हाथ नहीं लगेगा? संकल्पों से होगा। संकल्पों से क्या होगा? आपके मन में संकल्प आया - बैठेंगे तो जा करके।*** उसको इधर उधर देखेंगे तो चलेगा कहां से। संकल्प.... चाबी तो लगाएंगे ना।***चाबी नहीं लगाएंगे तो उड़ेगा कैसे ?*** बैठे रहो चलो विमान उठो। चाबी तो लगा दो। उड़ेगा तो वो अपने आप ही। ये संकल्पों से होता है। और साइंस.... ***ये आत्मा में ऑटोमेटिकली फिट होता है। चलाने का सिस्टम, रखने का सिस्टम, नीचे उतारने का सिस्टम,*** बिना चाबी के क्या होगा? बिना चाबी के तो कोई ताला नहीं खुलता। (***मशीनरी से नहीं होगा टेक्निक)देखो बच्चे एकदम रिफाइन !!*** दुख देने वाला कोई वस्तु वहाँ नहीं है। इतने इतने सारे नहीं हथियार जोड़ने पड़ते हैं, इधर से जोड़ो, इधर से जोड़ो, इधर से, ये कोई तामझाम नहीं है इतना ज्यादा। बडा सिंपल है। क्योंकि थोड़ा सा ऊपर गई प्रकृति ने ऐसे हवा डाली, प्रकृति आपको पता है एक रूप ले लेगी उस समय। आप के विमान को ऐसे हाथ डालके ऐसे उड़ा देंगी। ये उड़ रही है ये लो बच्चों, अब तो हवा ऊपर ऊपर उड़ती है, ***तो फिर जब ये... ये बत्तियाँ नीचे आ जाएंगी। कौनसी बत्तियाँ? (सूरज, चांद) सूरज, चांद बत्तियाँ जब नीचे आ जाएंगी, तो हवा ऊपर क्या करेंगी? हवा भी फिर नीचे आएंगी।*** संकल्प करो "है प्रकृति आ जाओ मेरे विमान को उड़ाओ" ये लो, हाथ डाला, ऊपर लेके गई.... उड़ते रहो..उड़ते रहो...ऊपर। आप 100 फीट चले जाओ ऊपर, कितनी हवा लगेगा? लगेगा ना ! यही हवा इधर थोड़ी लगेगा। हवा ऊपर क्यों लगता है ? क्योंकि वो ऊपर चली गई। और बत्तियाँ सब उससे भी ऊपर चली गई। और जब सतयुग आएंगा तो बत्तियाँ सब नीचे। और हवा भी नीचे। और उड़ने में भी बड़ी आसानी। इतना थोड़ी... जो आज एरोप्लेन उड़ता है, इतना तेल डालो फिर उड़ता है। ऐसा कुछ नहीं है। वहाँ तो बस चाबी घूमाई और प्रकृति ने हाथ डाला और उड़ गई। वो हवा नीचे ही अपने आप ऊपर उड़ा देंगी। ***इसलिए कहते हैं संकल्पों से उड़ता है। संकल्प मतलब आपने किस को ऑर्डर किया... हवा को वो आई अपनी पूरी ताकत लगाई और चली गई...और आपको एक्यूरेट स्थान पर रोकेगी वहाँ जाकरके, जहाँ आपको जाना है।*** आप कहेंगे भई देखो मुझे उधर जाना है। अच्छा ! स्टेशन बता दिया है, हमें जाना है। अच्छा ठीक है.... आपको उधर ही जाकर रोकेंगे। ये एकदम कहते हैं ना, रहेगा नॉर्मल... लेकिन रहेगा चमत्कारी।

11.05.2020

(89) एक ड्रामा पर भी क्वेश्चन पूछा है कि हूबहू रिपीट होता है। वह हूबहू सब कुछ वही हो रहा है। फिर भी पुरुषार्थ करना पड़ता है। और पुरुषार्थ होता नहीं है तो उसको क्या कहेंगे?

पुरुषार्थ करना पड़ता है पर होता नहीं है। दो शब्द है, करना पड़ता है, पर होता नहीं है। करोगे तो होगा ना.... पड़ता है तो कैसे होगा?? अच्छा अभी आप बच्चों को कहे देखो वर्तमान को देखो। बाप कहेगा बच्चे इस चीज को मत खाना इसमें नुकसान होगा, तो बच्चे क्या कहेंगे? टेस्ट कहाँ से आ रहा है ? यहाँ से आ रहा है। नई-नई हम रोक हीं नहीं सकते हैं। यह पुरुषार्थ है। यह पुरुषार्थ है। यह किसके हाथ में है? ***बाबा इस संगम पर हर एक बच्चे को चांस देता है। हूबहू रिपीट कब होता है जब बच्चे चांस में फेल होते हैं। सबको चांस दे रहा है बाबा। अब देखो इस समय सबको चांस दिया ना? सबको दिया ना?*** सबका धन निकला। सब निकला ना? किसी को समय दिया, सबको चांस दिया। भगवान को याद करने का चांस दिया बैठ करके। सबको... सबको दिया कि याद करो कि भगवान से बड़ी ताकत कोई है ही नहीं दुनिया में। दिया ना? पूरे विश्व को दिया चांस दिया। लेकिन क्या कहे अभी तो रो रहे हैं। ***हे भगवान संकट है दूर करो। पर यह बच्चे भी बड़े चालाक हैं। संकट दूर हो गया तो कहेंगे....कौन हो? भगवान !! मैं नहीं जानता आपको।*** कोई कोई तो इतने ढीट होते हैं। हम मानते ही नहीं। मर रहे हैं लेकिन हम मानते ही नहीं कि भगवान है। ठीक है मारो, मरने के बाद पता पड़ेगा कि भगवान है या नहीं है। बहुत बच्चे ऐसे हैं देखो बाहर जाओ दुनिया में। बीमारी से पढ़े हैं फिर भी क्या... हम नहीं मानते भगवान है। तो बाप कहेंगा, ठीक है मरो... मरने के बाद मानना कि भगवान है, या नहीं है। कोई कहता है....भगवान बचाओ, बच्चे भी चालाक है। ***बचा लिया तो.... कौनसे भगवान हो आप राम हो, कृष्णा हो, सीता हो, कौन से हो? हम नहीं जानते । मनाते नहीं गॉड को। यह देखो तो चांस बाबा ने दिया ना सबको? दिया ना...? फिर अपना भाग्य गवाएं तो बाप क्या करें !!*** हैना ! इस समय चांस है। ****हूबहू तब रिपीट होता है जब चांस को फेल करते हैं।**** ***बाबा सेवा कितने साल चलेगी?*** ज्यादा नहीं अब हो गया। अभी थोड़ा समय है मतलब..... नहीं बताएंगे पूरा। ***बस मिलना दृष्टि लेना सृष्टि बदलना और चलना। बस दो काम बाकी है।* *फिर उसके बाद हम लोग बाबा कहाँ जाएंगे?***कहाँ जाना है? देखो बच्चे.... कहाँ जाना है? बिल्कुल बताएंगे.... फिर अलग से भी तो बताएंगे, कहाँ जाना है। ठीक है, ***आपके जाने का जगह फिक्स है। जहाँ बाप लेकर जाए ऐसे कहो। जहाँ बाबा लेके जाये वहाँ जाना है। कहाँ जाना है? ठीक है बच्चों,*** सभी बच्चों के लिए बाप का एक ही सन्देश है.... सभी बच्चों को बाबा का मीठा मीठा याद प्यार और बाप तो कहेगा.... बच्चों साइंस में साइंस के साधन में ज्यादा ना फंसे। देखे तो 10 मिनट ऐसे में बैठ करके देखें, गर्मी लगती है। जितनी लगती है मतलब.....। अगर आत्मा समझ कर बैठे हैं तो क्या? जीरो.... !आत्मा समझ कर बैठे हैं। सब कुछ क्या है अपने पास। ***बाबा ज्ञान ही क्या देता है? आत्मा, परमात्मा, प्रकृति। सारा ज्ञान इसमें ही है। सब कुछ किसमें है आत्मा परमात्मा, प्रकृति बस।*** ठीक है। इसमें से दो परिवर्तन होती है। एक अविनाशी है। आत्मा समयानुसार परिवर्तन, प्रकृति परिवर्तनशील है, किंतु परमात्मा कभी परिवर्तन नहीं होता।

11.05.2020

(90) बाबा बच्चों का क्वेश्चन है जैसे कि एक बार संदेश में आया था गुलज़ार दादी वतन में गए थे, तो शिव बाबा बोले कि -- आज ब्रह्मा बाबा 84 जन्म वाली आत्मा है। ना तो 84 जन्म का चक्कर लगाने का संस्कार है,तो कहीं** *चक्कर लगाने गए हैं तो फिर शिव बाबा ने गुलजार दादी को जवाब दिया।* *उनको प्रश्नों का उत्तर दिया है। तो वह दोनों कौन सा* *कैसे किस फॉर्म में देखना है?

जैसे उस समय क्या स्टेज थी? जैसे दादी ने क्या देखा था। ब्रह्मा बाबा जब नहीं थे तो शिव बाबा को किस रूप में देखा था? उस समय जो वतन का ब्रह्मा है उसके अंदर बच्ची ने बाप को देखा।***देखो बच्चे बाप तो क्या है? एकदम पॉइंट ऑफ़ लाइट। उनको एक शब्द भी बोलने के लिए आकारी या साकारी शरीर की जरूरत तो पड़ती ही है !*** तो उस समय साकार ब्रह्मा तो सृष्टि में चक्कर लगाने आ गया..... तो बाबा ने जवाब किससे दिया? जो ऊपर वाले ब्रह्मा है ना संपूर्ण ब्रह्मा। ***संपूर्ण कहेंगे जिसको धर्मराज भी कहेंगे। उसमें आकरके....* .**भई अपन का काम ही है, बाबा ने कहा, अब ऊपर तो बिठा करके रख नहीं सकते ना। ***शरीर छोड़ा तो बिठाने के लिए थोड़ी छोड़ा !! जाओ....। आज गणपति का साक्षात्कार कराओ। आज हनुमान का साक्षात्कार कराओ। आज दुर्गा का साक्षात्कार कराओ। भई चिपकने वाले नहीं है अपन। अपन घूमने वाले हैं। चिपकने वाला एक ही है। कौनसा? वतनका !!*** जो सृष्टि पर कभी जन्म नहीं लेता जो सृष्टि पर कभी नहीं आता। वह चिपकने वाला ब्रह्मा। और धर्मराज का पार्ट कहाँ चलता है? देखो उनकी दृष्टि..... जब अपन जाते हैं ना। ***वंडरफुल बात अब बताते हैं। जब अपन उसमें जाते हैं तो....नीचे भी पार्ट चलता है..... दृष्टि से पूरी सृष्टि को देखते हैं। ऐसा नहीं कि ऊपर ही बिठा करके चलेगा। ऊपर नहीं। नीचे भी। नीचे भी चल रहा है। दृष्टि से सृष्टि को देखने का पार्ट। हर एक आत्मा को लपेटने का पार्ट।*** वही चलता है ना। क्यों? क्योंकि आपने पाप शरीर से किया है, तो अशरीरी से कैसे सजा देंगे !! पर वो होता है। जैसे मानो कोई चीज तैयार हो गई। वह तो तैयार हो गई। सब कुछ तैयार है पर उसको कढ़ाई में तलना है। रिफाइन करना है। ऊपर वतन में कौन सा काम होता है पता है। रिफाइन करने का ! जो सब जीवाणु कीटाणु सब। ओम शांति। और नीचे तैयार होना, शरीरों के साथ । और जो तैयार नहीं हुए, किसी कारण से फिर ऊपर तैयार होंगे। जो जैसे ही उसमें आते हैं, ऐसे ही दृष्टि से सृष्टि को ऐसे देखते हैं, फिर हर एक आत्मा के लिए जो शरीर में है, उसमें भी धर्मराज का पार्ट बाबा ने कहा। मेरा बाबा क्या कहता है? ***ऐसा नहीं कि धर्मराजपूरी ऊपर ही होंगी। ना...!! धर्मराजपुरी तो मधुबन भी बनेगा। धर्मराजपुरी तो पूरा विश्व बनने वाला है।*** धर्मराज..... अब बाप को थोड़ी इधर से आने जाने में रेल गाड़ी पकड़नी पड़ेगी ! ऊपर से देख रहे हैं, नीचे देख रहे हैं। ऊपर से उनके कोई दूर की नजर थोड़ी कमजोर है, जो चश्मा लगाना पड़ेगा !! वो पास की और दूरकी नजर तो बड़ी तेज है। सृष्टि दूर है और एक एक छोटी-छोटी चीज को देखते हैं। तो दूर और पास की नजर का तो कोई काम ही नहीं है। ऊपर से बैठकर के नीचे देख रहें है । वाह कर लो कर लो, अभी तो बड़े मजे कर रहे हो। थोड़ी देर बाद रुको....फिर समझमें आएगा। हैना...!! यह है पूरी दृष्टि से सृष्टि को देखना।

और जो यह कहते हैं, हमारा बाबा मधुबन में ही आता है, तो ठीक है जब मधुबन में आएगा तब मिलना उससे पहले नहीं आना। फिर देख रहे हैं... अच्छा बच्चे देखले....

11.05.2020

(91)आप भी रूह रिहान करते हो जब बाबा के साथ तो बाबा धर्मराज के रूप में ही शरीर से....

हां बिल्कुल।अपन जब बैठ करके ऐसे बैठे जैसे इधर जैसे अपन बैठे, उधर शिव बाबा अपन इधर। लेकिन कभी-कभी कब कब जब तीनों ही एक साथ जैसे बाबा आए इधर तो अंदर भी बैठकर रूहरिहान करते हैं। इधर बैठ कर बिल्कुल करते हैं ना? इधर जब बैठे तभ इधर भी रूहरिहान करते हैं। (हां वह संदेश में आता है ना बापदादा की रूहरिहान)**हाँ इधर... इधर बाबा बैठा। इधर अपन बैठे बात कर रहे है इधर इधर। जैसे इधर कर रहे हैं। बड़ा वंडरफुल है सारे चमत्कार तो स्थूल दुनिया के बाहर है।** इधर तो कुछ भी नहीं है। सब चमत्कार इस सृष्टि से इस शरीर से ऊपर है। इधर कुछ भी नहीं है। यह जीरो जीरो कुछ भी नहीं है। सारे चमत्कार तो ऊपर बड़ा मजा आता है, देखने में.... पर बड़ा अच्छा लगता है।

11.05.2020

(92) जैसे सप्त ऋषि होते हैं। दिखाया गया है। शास्त्रों में सीरियल में भी दिखाया गया है के शिव ने शंकर ने सप्तर्षियों को पहले ज्ञान दिया सृष्टि का और देवी है दुर्गा जी हैं, जो भी देवियाँ है और गणेश जी हैं और काली जी है और हनुमान जी है। यह क्या रियल में होते हैं या मतलब साक्षात्कार होता है?

देखो बच्चे क्या एक मनुष्य बंदर मिसल दिखेगा? आजकल दिखता भी है पर। पाए जाते हैं ऐसे चेहरे। हाँ हैना। अच्छा दूसरी बात यह सब जितनी भी बातें हैं, यह सब संगम युग की बातें हैं। ड्रामा रिपीट होता है कहाँ पर? सभी देवी देवताओं की पूजा होती है कहाँ पर ? संगम युग पे। काली, दुर्गा सब कहाँ पर होती है? संगम युग पर। हाँ इसका अब दूसरा पॉइंट है। जैसे मानो किसी देवी का साक्षात्कार होगया। दिखा किसी को दिख गया साक्षात्कार है। अब चलो आप बच्चों को छोटी सी एक कहानी बताते हैं जो कि सबको पता है। जैसे कि पाँच कोई एक अंधा होता है जैसे कि पाँच अंधे लगा लो.... हाथी को बुलाया, वह पूछेगा कि हाथी कैसा होता है? जिसने पेट पर हाथ रखा वह कहता है दीवार जैसा होता है। ठीक है। दूसरे अंधे ने देखा उसकी नाक पर हाथ रखा। तो भई हाथी कैसा होता है? तो भई हाथी तो सूंड जैसा होता है लंबी सी। अच्छा ! तो तीसरे ने उसके पैर पकड़ लिया। हाथी कैसा होता है? कैसा होता है खम्बे जैसा। कोई पूछ पकड़ लिया तो कहता रस्सी जैसा होता है। कोई कहता है कान पकड़ा लिया तो सुपड़े जैसा... अब बताओ इसकी क्या... सारी की सारी आपके जो सवाल है, इसमें आ गया। जिसको जो साक्षात्कार हुआ वह उसी को ही भगवान मानकर बैठ गया।

11.05.2020

(93)लेकिन बाबा जैसे जो यह मूर्तियाँ बनी है, हनुमान की बन गई है। दुर्गा जी की 8 हाथों वाली गणपति का जैसे यह तो यह साक्षात्कार हुआ था या मन की मन से अपना बना दिया है?

देखो बच्चे कोई है अब मानो, अब जो मूर्तियाँ बनाते हैं, वह कहाँ विसर्जन करते हैं, नदी में ठीक है। दूसरी बात यह साक्षात्कार होते भी है। भक्ति मार्ग में ऐसे साक्षात्कार होते भी है। पर जो जिस भावना से याद करता है, भगवान कैसा है अरे भगवान तो गणेश जैसा है। उसी से ही उसका पूरा साक्षात्कार बना दिया। जब भगवान कैसा है?अब बच्चियों को साक्षात्कार करो, भगवान् तो दुर्गा जैसा है यह तो काली जैसा दिखता है, उसके अनुसार फिर उसका यह साक्षात्कार भक्ति मार्ग में होते हैं। पर सब का वर्णन देखो... यह भी द्वापरयुग में नहीं। ***द्वापर युग में नहीं होता है। कोई साक्षात्कार। द्वापर युग में सिर्फ दो होते हैं। एक तो शिव का जो पेहली बार अपन को हुआ। जो सोमनाथ का बड़ा मंदिर बना शिव का। दिखा भी क्या? एक चमकता हुआ ऐसे देखा। एक चमकता हुआ हीरा देख लिया।*** भई अपन को लगा भगवान...!! यह कौन है?? यह कौन सी महाशक्ति है.... जिसका ना हमारे जैसा शरीर है न स्त्री जैसा न पुरुष जैसा?? तो कैसे कल्पना से भी देखो बाबा ने कैसे प्रतिमा बनवा दी। सोचा कभी !!अब दूसरी भक्ति होती है। कहते हैं ना बाबा मुरब्बी बच्चा श्री कृष्ण होता है। दूसरी भक्ति होती है किसकी? (कृष्ण की) हाँ तो दूसरा मीरा को साक्षात्कार हुआ कृष्ण का। इसलिए कहते हैं द्वापर में श्री कृष्ण आया भक्ति मार्ग में। ऐसा नहीं द्वापुर में श्री कृष्णा आया। कहते हैं उस समय जब छोटे थे, जो राजा विक्रमादित्य का जो बचपन था, वह सेम ऐसा ही था। ऐसा ही सेम तो इसीलिए भक्ति मार्ग का गायन कर दिया। द्वापरयुग में श्री कृष्ण आये। वास्तव में द्वापरयुग में श्रीकृष्ण नहीं आता। जैसे विष्णु का बचपन नहीं दिखाया। नहीं दिखाया? तो राजा विक्रमादित्य का बचपन कहाँ दिखाया? नहीं दिखाया !! बिल्कुल जैसे अब पता पड़ा है गुण से सब संस्कारों से... लेकिन वहाँ के बाद चली पतित दुनिया क्योंकि वही जन्म जब बाप मिला। बाप मिला मतलब, बाप का साक्षात्कार हुआ तो उसी जन्म में हुआ । जैसे अब संगम पर कौन मिला? बाप मिला, तो साक्षात्कार हुआ हैना। तो बाबा ने क्या बनाया? हीरा !! ऐसे द्वापर युग में भी साक्षात्कार हुआ बाप का तो वहाँ से भक्ति मार्ग शुरू हुआ तो ज्यादा भक्ति मार्ग मीरा के बाद श्री कृष्ण का हुआ क्योंकि उससे पहले किसी को भी श्री कृष्ण का साक्षात्कार ही नहीं हुआ, और किसी को पता ही नहीं था कि यह कौन है? (अच्छा तो उन्होंने फिर मूर्ति बनवाई,मीरा ने बनवाई) अच्छा तो जैसे मूर्ति बनी अपनी कल्पना के अनुसार फिर भी नहीं बना। नहीं... ऐसा इससे भी सुंदर है... इससे भी सुंदर है.... इससे भी सुंदर है। (अच्छा वह मूर्ति में...)

11.05.2020

(*94) ये सूक्ष्मवतन में जो कारोबारी चलती है, वह बच्चों के माध्यम से भी ही चलती है या फिर आपके कोई और भी है हैंडस?

हाँ ये सूक्ष्मवतन में भई बच्चों के माध्यम से चलती और अपने बाप के माध्यम से चलती है। और ज्यादा कर वो जो सच्चे योगी होते हैं एकदम। उन के माध्यम से चलती है। ब्राह्मण जो ज्ञान में जिनको ज्ञान होता है, सही ज्ञान होता है एकदम! वो वाला ज्ञान होता है उनके माध्यम से चलता है। तो फिर ये सही ज्ञान किन, कितने बच्चों को होता है? कितने परसेंटेज कम है क्योंकि अपन कहेंगे कि अभी अपने पूरे ब्राह्मण कितने बन गए होंगे? बारह तेरा लाख के ऊपर होंगे तो उसमें से एक परसेंट सही ज्ञान वाले। एक परसेंट भी क्या पांच परसेंट सही ज्ञान वाले। अरे, क्योंकि उनको अगर 7 दिन का कोर्स...

11.05.2020

(95) तो फिर मैया कि इतनी अच्छी एकाग्रता कैसे हैं?*

भई वो तो उनका जमा है बहुत अच्छा।(हम लोगों ने जमा ही नहीं किया?) ***उसकी एकाग्रता तो का तो जवाब ही नहीं है।*** वो इधर बैठे हैं तो उड़ गए। ये इधर भी चल रहा होगा ऐसे तो भी ऊपर है। एकाग्रता बड़ी अच्छी है। एकाग्रता से ही आप कुछ भी सीख सकते हैं। देखो... एकाग्रता आई तो आप बस एक चीज को देखने के बाद ही उसको प्रैक्टिकल में ला सकते हैं, और सीख सकते हैं। और ये क्वालिटी बड़ी अच्छी है। (ये तुरंत सीख लेती हैं... एक बार देखा और प्रैक्टिकल कर दिया)और संभाल करके मुश्किल से...मुश्किल से एक से दो बार बिगड़े नहीं तो कोई ऐसा चाँस नहीं बिगड़े है नहीं। ***यह शक्ति कहाँ से आती है एकाग्रता से।*** अगर आप बच्चे की योग में एकाग्रता है ना तो आप बच्चों के अंदर मेजोरिटी सारी ज्ञान की पकड़ बड़ी अच्छी आएगी। उस समय जिसको सुना रहे होंगे ना... वो पकड़ बड़ी अच्छी आएगी। क्लियर बुद्धि से संदेश भी अच्छे अच्छे आएंगे। रियल रियल जो उधर हो रहा है वो दिखाई देगा। यहाँ से बनावटी नहीं दिखाई देगा।जो प्रैक्टिकल वतन में चल रहा है। वैसे तो बहुत कुछ चल रहा है। अपनी बुद्धि के अनुसार रियल संदेश भी आएगा। एकाग्रता की शक्ति यह है। ***और इनका सबसे बड़ी वंडरफुल बात यह है, कि ओन्ली 20 से 10 मिनट में ही एकदम डायरेक्ट ऊपर जाना, पूरा समेटना, लाना।*** जो बच्चे आप बैठ करके योग करते रहेंगे कि हम आत्माओं को शांति का दान देवें... ऊपर लेके जावे...ऐसे करें....इतने में तो वो घुमा फिराके पोटली दे करके बनाकर के ऊपर देके भी नीचे आ जाती है। पहुँचने में बिलकुल टाइम नहीं लगता। (क्योंकि हमारे संकल्प बहुत वेस्ट हो जाते हैं ना इधर उधर होते हैं) और आप बच्चे चढ़ेंगे ना धड़ाम से नीचे गिरेंगे। फिर चढेंगे फिर गिर जाएंगे नीचे! ***अभी भी ऐसे हो रहा है हमारे साथ?***गिरते हैं, बिल्कुल गिरते हैं। आप चेक कर लो... थोड़ी देर में बाबा..!! फिर सोचने लगे उसने ऐसा नहीं करना चाहिए था। वहीं आके रुक जाती है गाड़ी ऊपर तक पहुँच ही नहीं पाती ।जितना आप पहुँचेंगे ना 4 घंटे बैठेंगे। वो 4 मिनट में निपटाकर के नीचे आ जाएंगी ।

11.05.2020

(96) *तो इनका यह पहले का अभ्यास है पहले जन्म का या...?*

****पहले का भी है और अभी का भी है। दोनों का है। एक जन्म का नहीं, क्योंकि बच्चे, फीचर अलग हो जाते हैं। तो पहले वाला काम करना बहुत कम, बंद कर देता है। और वो भी बीच का एक वो था, गैप था... तो फिर कैसे काम करेगा? तो वो जो मेजॉरिटी इसका है... इस जन्म का है। मेजॉरिटी इस जन्म का है।*** मेजोरिटी इस जन्म का है। ***तो अभी जो कार्य कर रहे हैं, मेजॉरिटी इसी जन्म का है*** इसी जन्म का है। वो बड़ी अच्छी क्या-क्या कहाँ गए थे उधर उस समय उस टाइम? (मुंबई गए थे..) क्या एकाग्रता !! एक घड़ी..., एक घड़ी क्या होता है एक सेकंड क्या होता है, उसमें भी एकाग्रता। ऐसी स्थिति और वह सारी शक्तियाँ अबतक देखो, चलेंगी, काम भी कर रही है, चलेंगे भी चलती भी रहेंगी। है ना? ****एक सेकंड में परख लेंगी। ये बनावटी बोल रहा है, झूठ बोल रहा है, नकली का है असली का है। दूसरी जोहरी बन गई । क्या बन गयी? दूसरी जोहरी।हाँ परखने वाली जोहरी।*** अपन तो हीरों को ही परखते थे ये तो पूरे इंसानों को भी परख लेती है।***आपमें भी ऐसी पावर थी ना बाबा पेहले तो*** इतना तो भई अब नही कहेंगे, अपने बाबा को बड़ी थी। *बाबा बताते थे ये ऐसे हैं। कितनी सारी चीजें तो इन्होंने अको बताई ।* बाबा उसमें बाबा नहीं आते आप कहाँ उसके सामने बैठते हो जाके !! इतनी सारी बातें हैं।

11.05.2020

(97) श्री कृष्ण का जन्म शिव बाबा के द्वारा होता है और अष्टरतन जो हैं सात उनका जन्म शिव बाबा के द्वारा नहीं होता..?

देखो हमेशा गीता के भगवान श्री कृष्ण को बोला गया है। एक ही को बोला गया है ना...। दुनिया के हिसाब से गीता का भगवान किस को बोला गया है। श्रीकृष्ण को बोला गया है। है ना... पर गीतामाता है, कृष्ण बच्चा है...। और जिनका जन्म होगा वह बहुत महान आत्माओं से होगा पर एक ही इस धरा पर जिसका जन्म होगा वह शिव द्वारा होगा। बाबा जो श्री कृष्ण का जन्म है वो डायरेक्ट परमात्मा के द्वारा शिव बाबा के द्वारा होता है अष्टरत्नों का होता है या नहीं होता है उसके बारे में आप बता रहे थे...नहीं नहीं अष्ट रत्नों का जन्म ऐसे नहीं....महान आत्माओं के द्वारा मतलब...अच्छी मतलब देवताओं के द्वारा कहेंगे। लेकिन ओन्ली श्री कृष्ण का जन्म ही अर्थात अपन का जन्म ही अपना पिता ही शिव परमात्मा है। तो फिर जन्म देने वाली सब कुमारीयाँ होती हैं या माताएं..?बराबर ये ठीक पूछा...। जो जन्म देंगी वह ऑटोमेटिकली माता बन जाएंगी.....

11.05.2020

(98) मतलब बाबा जो अष्टरत्नों को जन्म देंगी, वह युगल रूप में नहीं होंगे मतलब सिंगल ही होंगे..?

देखो बच्चे उस दौरान एक ऐसा समय आएगा कि कौन किसकी शादी करेंगा...? पहली बात तो यह है.... लेकिन ऐसे साथ ही साथ रहेंगे है ना? ये कोई ठप्पा नहीं लगेगा कि इनकी शादी..... इनके घर में बच्चा आया है या ये अष्ट रतन है... है ना, क्योंकि एक समय ऐसा आएगा कहते हैं ना कहाँ ना कहाँ बचेंगे..... थोड़े बहुत होंगे। तो उनके जन्म पर इतना कुछ नहीं होगा। मतलब जन्म पर ज्यादा ऐसे नहीं होगा कि भई वाह क्या हो रहा है कैसे... नहीं.... ओनली प्रकृति द्वारा जो होंगा, लेकिन उनके स्वयंवर पर ही सबसे ज्यादा खुशियाँ मनाई जाएगी। वह जो खुशी है वह जो कहते ना दिवाली जिसको बोलते हैं, हाँ कोरोनेशन डे... वो जो है स्वयंवर पर ही मनाए जाएंगी । स्वयंवर किसका बाबा? अष्टरत्नों का, क्योंकि जन्म पर तो इतना ज्यादा कुछ होगा नहीं। क्योंकि उस समय तो ऐसा होगा चारों तरफ हाहाकार! लेकिन बहुत अच्छा होगा जो भी होंगा। बाबा श्री कृष्ण के जन्म के कितने समय के बाद मतलब उनका जन्म होगा.... या फिर लगातार एकदम से होगा..? लगातार एकदम से नहीं... थोड़ा थोड़ा गैप जरूर होगा। आठों में भी... !!बिल्कुल होगा !! थोड़ा थोड़ा तो होगा ना? ये एक ही जगह होंगे...या अलग अलग जगह होंगे...?अलग-अलग होंगे... क्यूँकि देखो अलग-अलग कैसे होंगे... जैसे भी कोई भी चीज होती है, कोई भी नियम बनाते हैं....कोई भी ऐसे होते हैं तो वह अलग अलग....। एक साथ इकट्ठा होते हैं जैसे बड़ा एक बार बताया भई ये ये अपना नियम है...। हैं ना ये ये चीज करना है तो हर राजा अपने राज्य में जाकरके अपने.... तो वो नियम वो उस अनुसार चलाता है, क्योंकि सतयुग में धीरे-धीरे बढ़ेगा...। महलों में होंगे, मिलकर रहेंगे। उनकी शादी उनके बच्चों के साथ.... उनकी उनके बच्चों के साथ... उनकी उनके साथ तो यह एकदम
एक रिश्ते में ही जुड़ जाएंगे। है ना तो ऐसे होंगा वहाँ पर। तो अष्ट रत्नों का एक क्लोज परिवार बन जाएगा... बिल्कुल एक ऐसा परिवार जो एकमत एक एक... एक...। अष्ट और 108 दोनों.... अष्ट से 108 उनका आपस में ही बहुत अच्छा जुड़ा हुआ होता है। उसके बाद फिर धीरे-धीरे धीरे-धीरे बढ़ते जाएंगा ।

11.05.2020

(99) बाबा ये जो आठ गद्दियाँ सतयुग की कही थी ना मतलब ऐसे के पहले श्री कृष्ण.... फिर दूसरे श्री कृष्ण.... तीसरे श्री कृष्ण.... तो यह 108 में पूरे होंगे या फिर... मतलब 108 के जो बच्चे हैं, मतलब अभी जैसे आपके हैं, फिर उनके बच्चें हैं... वो फिर उनके बच्चे हैं...

देखो बच्चे वो 108 में पूरे। (ज्यादा होते हैं गिनती किया बाबा) उसमें जैसे 8 के बच्चे कितने दो-दो बच्चे...(16....16 के 32... 32 के 64...। 64 के...)क्योंकि ये जो 8 जनम का सुख.... देखो सबसे पहली बात तो अच्छेसे ज्ञान को समझो....। 8 रतन.... सतयुग में जन्म कितने होते हैं ?8 जन्म का सुख... है ना। ऐसे तो आप लगाते रहो हिसाब... हिसाब नहीं बनेगा...

लेकिन मेन चीज होता है। आठ जन्म का सुख आपको इतना मिलेगा.... इतना मिलेगा और वह जो 108 बच्चे हैं, वह 8 जन्म में ही बहुत सुख की प्राप्ति करेंगे। बहुत सुख उनको मिलेगा।उनके जितने भी जन्म होंगे उस टाइम 8 जन्म.. !! कहने का भावार्थ "8"... "108" वो पूरा सतयुग का सुख भोगने वाले बच्चे हैं अच्छे से..!! उसके बाद फिर 16000 जाओ। वहाँ से फिर त्रेतायुग की शुरुआत होती है। समझ गए ? आठ... 108 का गायन ज्यादा क्यों है? क्यूँकि सतयुग का वो पूरा सुख भोगते हैं। त्रेता का पूरा सुख भोगते हैं। लेकिन जहाँ 16108 आ गए, वो बच्चे होते हैं त्रेता की शुरुआत में। वो सतयुग का पूरा सुख नहीं ले पाते । और दूसरी बात सुख का अर्थ क्या है, यह भी सुनो... ऐसा नहीं है कि 16108 सतयुग में नहीं आएंगे। ये दिमाग से निकाल देना। ऐसा नहीं है कि वह त्रेता में आएंगे। वह सतयुग में ही आएंगे लेकिन परसेंटेज बहुत कम होगी। सुख का अर्थ.... सुख तो होगा ही लेकिन जैसे की एक राजा है, और एक साहूकार है क्या फर्क नहीं होता है? तो फिर वह 16000 त्रेता में यह बनेंगे.... ऊंच पड़ पाएंगे....हाँ.... उनको ऊंच पद मिलेगा त्रेता में.... और ऐसा नहीं कि हम क्या बनेंगे? हम उनके बच्चे बनेंगे।(बच्चे बनेंगे... !!) बच्चे बनेंगे और बच्चे को भी कितना सुख.... उसमें भी सुख लेंगे। इधर भी सुखी लेंगे। है ना.... तो बच्चों सुख ही सुख है। है ना, लेकिन जो 16000 है, सतयुग में आएंगे.... कोई साहूकार प्रजा होती है...कोई ऐसी प्रजा होती है। तो ये कई बार कई बच्चे मन में सोचते हैं अरे ये 16000 क्या सतयुग में नहीं आएंगे !! बिल्कुल आएंगे। बिल्कुल लेकिन वह आत्माएं अपने शरीर को छोड़कर जब त्रेता युग में आएंगी तो उनका सुख उनका बढेंगा। राजा भी बनेंगी... !! महाराजा भी बनेंगी । फिर हम उनके बच्चे राजा रानी भी बनेंगे। फिर कभी वह अपने बच्चे बनेंगे। ऊपर से बारी-बारी आते रहेंगे। कभी वो भी बनेंगे...। तो ऐसे होता है..। 8.....108 का अर्थ है पूरा 8 जनम एकदम पूरे विश्व पर राज्य करने वाले....। बाबा एक प्रश्न पूछा था एक बहन ने किया 33 करोड़ देवताओं का गायन है लेकिन किसी बुक में कहा है कि खाली 33 देवतायें मुख्य है। तो यह 33 करोड़ मुख्य है या खाली 33...?देखो बच्चे 33 वर्तमान समय तो क्या कहेंगे? 33 करोड़ पूरी आबादी हो गयी सतयुग... त्रेता तक। मुख्य 33 का कौनसा गायन है..?? जैसे 84 था हमारा तो 84 लाख बोला जाता था देखो 33 वो सतयुग में भी। 33 सतयुग में लेकिन अभी अगर आप जाएंगे त्रेता में तो क्या बन जाएंगे? उसी 33 के 33 करोड़ बनेंगे। सतयुग में 33... वही आत्माएं फिर अपने-अपने वंशज को इतना बड़ा कर लेंगी। 33 करोड़ देवी देवताओं का गायन होगा। अभी आपको समझ में बिल्कुल नहीं आया है। अपन को पता है कि ऊपर से बात नीकल गया। लेकिन मुख्य गायन है 33 करोड़ का ही गायन है। ऊपर से मत निकालो.....!! बच्चे लिखा तो कहाँ कहाँ बहुत कुछ है। ठीक है ना। लेकिन मुख्य गायन 33 करोड़ का होता है क्योंकि त्रेता तक आते आते आते आते बहुत आबादी बढ़ जाती है। कोई-कोई कहते हैं जो भी अपनी बुद्धि अनुसार ज्ञान देते हैं कि भई 33 करोड़... अंतिम कलयुग तक आएंगे। ऐसे भी बोलते हैं। 33 करोड़ देवी देवताएं कलयुग अंत तक आएंगे। हाँ भाई बिल्कुल आएंगे क्योंकि आत्मा कौन है? वहीं आएगी और रही देवी देवताओं की बात कि जो भी आत्मा ऊपर से नई नई आती है... वह देवता ही मानी जाती है। कौन है वह?? सतोप्रधान है ना... भल वह कितने भी समय तक सातोप्रधान रहे, लेकिन जो परमधाम से नई नई आत्माएं आती है उसका

रूप ही देवताई होता है। दिव्य गुण धारी (सर्व गुणों से संपन्न) तो उसको भी क्या कहेंगे देवता ही कहेंगे। लेकिन मेन गायन है 33 करोड का, त्रेतायुग में 33 का नहीं।और 33 का अगली बात है.... !! अभी है 33करोड़...। भई एक अपना पास रखना पड़ता है। (अच्छा ऐसा है!!) हाँ बिल्कुल ऐसा है।

11.05.2020

(100)बाबा मधुबन में जब बाबा आते थे,ना तो ऐसे भोग खिलाते थे तो फिर ऐसे फेंक देते थे। मतलब वह क्या रहस्य है?

देखो बच्चे !! सबसे पहली बात तो यह है कि बाबा कभी भी ऐसे उठा करके ऐसे नहीं फैंकता। ठीक है क्योंकि अपना शिव पिता बड़ा। रॉयल है.... ऐसा रॉयल है, यह तो नहीं करेंगे। (हां, भोग ऐसे फेंक करके देते थे ना बच्चों को...) ****अब सुनो! इसमें भी बड़ा बड़ा रहस्य है। वह कहते थे ना यह लो यह लो बाबा यह लो बच्चों को दे दो ऐसे कर दो। बाबा के पास एक थोड़ी... इसलिए बाबा क्या बोलता है बार-बार... कि मैं ड्रामा के बंधन में बंधा हुआ हूँ। ये बोलना चाहते हैं... मैं बच्चों के बंधन में बंधा हुआ हूँ । बिचारा नाम ड्रामा का लेता है।डरता है ना... ड्रामा जो बोल दिया है ना... ये लो बाबा ऐसे इधर फेंक दो...। तो वह उस समय होता है, बच्ची का खुद का संस्कार....। उस समय बाबा नहीं करेगा, अपन नहीं करेगा क्योंकि यह फेंकने का संस्कार (अच्छा ये उनके द्वारा होता है...) बिल्कुल होता है।है ना (तो 1 सेकेंड के अंदर दोनों.....)एक ही सेकंड काफी है।*** आत्मा को क्या है? इधर से पलटी मारो उधर से.. उधर से पलटी मारो उधर से बस... ऐसे घुमाते रहो। एक सेकंड में जो परमधाम को छोड़कर धरा पर आ सकते है तो भृकुटि के अंदर कैसे परिवर्तन नहीं कर सकते? उस समय ये बाप का कार्य नहीं होता है और सबसे बड़ी बात चलने का कार्य भी अपन का होता है, कहतें
हैं कि शिवबाबा चलते हैं। नहीं चलने का कर्तव्य भी अपना होता है। (इसलिए कई पार्टी वाले मानते हैं कि वहाँ तो ब्रह्माबाबा आते हैं.) हाँ बिल्कुल आते हैं। बापदादा आते थे...। चलते अपन थे हैं ना बोलते बाप थे। क्योंकि दोनों की शक्तियाँ मिलाकरके चलेंगे ना..! ठीक है। लेकिन फेंकते नहीं थे , वो तो बच्चियाँ बोलती थी। यह लो ना बाबा ऐसे फेंको। ये लो बाबा ऐसे ऐसे बच्चों को दे दो...। पर वो गलत सीन था, लेकिन ड्रामा में नूँध होता है क्या कहेंगे? जो भी हुआ बहुत ड्रामा ही कहेंगे क्योंकि अपना शिवबाबा! नहीं नहीं अपना शिवबाबा कभी ऐसा नहीं करेगा।(देवताओं की रचना करते हैं तो टोली कैसे फेकेंगे...)देखो बच्चे इतने समय आते आते आते आते आत्मा के परमात्मा के संस्कार ऐसे हो जाते हैं कब कब। तो कभी वो यूज करते अपने संस्कार कब ऐसे है ना...।